30.00

April 2012

मरयम

औरतों की आइडियल

माहौल का असर

प्रेग्नेंसी में माँ की ज़िम्मेदारियां

नूर और हिदायत

बरमूदा ट्राइंगिल

यूनिवर्स और क्रिएटर

झूट क्यों नहीं बोलना चाहिए

इमाम सज्जाद अ.

क्लोनिंग

एहसान

मरयम

का एक साल पूरा होने के मौक़े पर हम अपने
सब्सक्राइबर्स के लिए लेकर आए हैं

ख़ुशियों की सौग़ात

और शुरू कर रहे हैं

एक स्कीम जिसमें हर महीने 5 ख़ुशनसीबों को मिलेंगे ख़ूबसूरत ज्वैलरी सैट, घर के इस्तेमाल के सामान और भी बहुत कुछ...

बस पढ़ती रहिए मरयम मैगज़ीन और इंतेज़ार कीजिए अपनी बारी का।

**इस महीने जिन 5 ख़ुशनसीबों को
मरयम की तरफ़ से ख़ूबसूरत तोहफ़े दिये जा रहे हैं
उनके नाम यह हैं:**

Ms. Aman Zehra, Delhi
Subscription ID: A-00455

Mr. Ahmad Zaidi, Lucknowc
Subscription ID: A-00166

Mr. Raza Husain, Lucknow
Subscription ID: A-00043

Mr. Mohd. Murtuza, Lucknow
Subscription ID: A-00006

Alico Engineers, Lucknow
Subscription ID: A-00183

اَلسَّلامُ عَلَیکِ یا فَاطِمَةُ اُلزَهرا

RNI No: Title Code: UPHIN41897

Monthly Magazine

मरयम

Vol:1 | Issue: 2 | April 2012

इस महीने आप पढ़ेंगी...

औरतों की आइडियल	5
पॉज़िटिव और निगेटिव थिंकिंग	8
क्लोनिंग	10
माहौल का असर	13
नूर और हिदायत	14
बरमूदा ट्राइंगिल	16
झूठ क्यों नहीं बोलना चाहिए	18
आयतुल कुर्सी	22
अगला क़दम	24
इमाम सज्जाद अ0	26
एहसान	27
शादी की रस्में	29
आदाबे ज़िंदगी	32
युनिवर्स और क्रिएटर	34
प्रेग्नेंसी के बीच	
मां की ज़िम्मेदारियां	36
कोफ़्ते (डिश)	38
रिश्ता (कहानी)	39

Editor
Mohammad Hasan Naqvi

Editorial Board
Nazar Abbas Rizvi
M. Fayyaz Baqir
Akhtar Abbas Jaun
Qamar Mehdi
Ali Zafar Zaidi

Managing Editor
Abbas Asghar Shabrez

Executive Editor
Fasahat Husain

Assist. Exec. Editor
M. Aqeel Zaidi

Contributors
Imtiyaz Abbas Rizwan
Azmi Rizvi
Batool Azra Fatima
M. Mohsin Zaidi
Tauseef Qambar

Graphic Designer
imagine Siraj Abidi
9839099435

Typist
S. Sufyan Ahmad

3 Jamadi-ul-Sani
Shahadat
Hazrat
FATIMA ZEHRA
a.s.

'मरयम' में छपे सभी लेखों पर संपादक की रज़ामंदी हो, यह ज़रूरी नही है।
'मरयम' में छपे किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके खिलाफ़ कारवाई सिर्फ़ लखनऊ कोर्ट में होगी और 'मरयम' में छपे लेख और तस्वीरें 'मरयम' की प्रॉपर्टी हैं।
इसका कोई भी लेख, लेख का अंश या तस्वीरें छापने से पहले 'मरयम' से लिखित इजाज़त लेना ज़रूरी है। 'मरयम' में छपे किसी भी कंटेंट के बारे में पूछताछ या किसी भी तरह की कारवाई प्रकाशन तिथी से 3 महीने के अंदर की जा सकती है। उसके बाद किसी भी तरह की पूछताछ और कारवाई पर हम जवाब देने के लिए मजबूर नहीं हैं।
संपादक 'मरयम' के लिए आने वाले कंटेंट्स मे ज़रुरत के हिसाब से तबदीली कर सकता है।

Printer, publisher & Proprieter S. Mohammad Hasan Naqvi printed at Swastika Printwell Pvt. Ltd., 33, Cant. Road, Lucknow and published from 234/22 Thavai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

Contact No.: +91-522-4009558, 9956620017 (Lucknow), +91-9892393414 (Mumbai)
Email: maryammonthly@gmail.com

औरतों की आइडियल

■ एम. ज़ेड. हुसैनी

अरब में इस्लाम से पहले जाहिलियत के ज़माने में औरत को इस हद तक ज़लील और हक़ीर समझा जाने लगा था कि मर्द उसको एक तरफ़ सिर्फ़ तफ़रीह के सामान की हैसियत से इस्तेमाल करते थे और दूसरी तरफ़ उसको अपने लिए एक बुरी चीज़ भी समझते थे। इसलिए जब भी उनके यहां कोई लड़की पैदा होती थी तो उसे ज़िंदा ही दफ़न कर दिया करते थे। वैसे हर दौर में औरत की तस्वीर मर्दों की कनीज़, ख़ादिमा और एक गिरी हुई मख़्लूक़ की शक्ल में उभर कर सामने आती है लेकिन पूरी ह्युमन हिस्ट्री में दीने इस्लाम ही है जिसने हर ज़माने में औरत के असली रुतबे को बाक़ी रखने और उसके बुलंद मक़ाम के लिए ज़ालिम समाज के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई है और हर दौर में औरत को खोया हुआ रुतबा वापस दिलाने की भरपूर कोशिश की है। इस सिलसिले में इस्लाम ने जो अज़ीम काम किया है उसकी मिसाल पूरी ह्युमन हिस्ट्री में नहीं मिलती। औरत के बुलंद मर्तबे को इन्सानी समाज में उजागर करने के लिए और उसका असली मुक़ाम पहचनवाने के लिए इस्लाम ने कुछ चीज़ें बयान की हैं।

1- औरत के बुलंद मरतबे का लफ़्ज़ी तआरुफ़

2- औरत के बुलंद मरतबे का अमली तआरुफ़

3- औरतों में सबसे बुलंद किरदार की तख़लीक़

1- इस सिलसिले में हमें इस्लाम की आसमानी किताबों और रूहानी रहबरों यानी नबियों और इमामों[अ] के इरशादात का जायज़ा लेना होगा कि उन्होंने अपनी बातों में औरत के रुतबे को किस अंदाज़ में पेश किया है।

अल्लाह की किताब क़ुरआने करीम से पता चलता है उसने औरतों को कहीं मर्दों

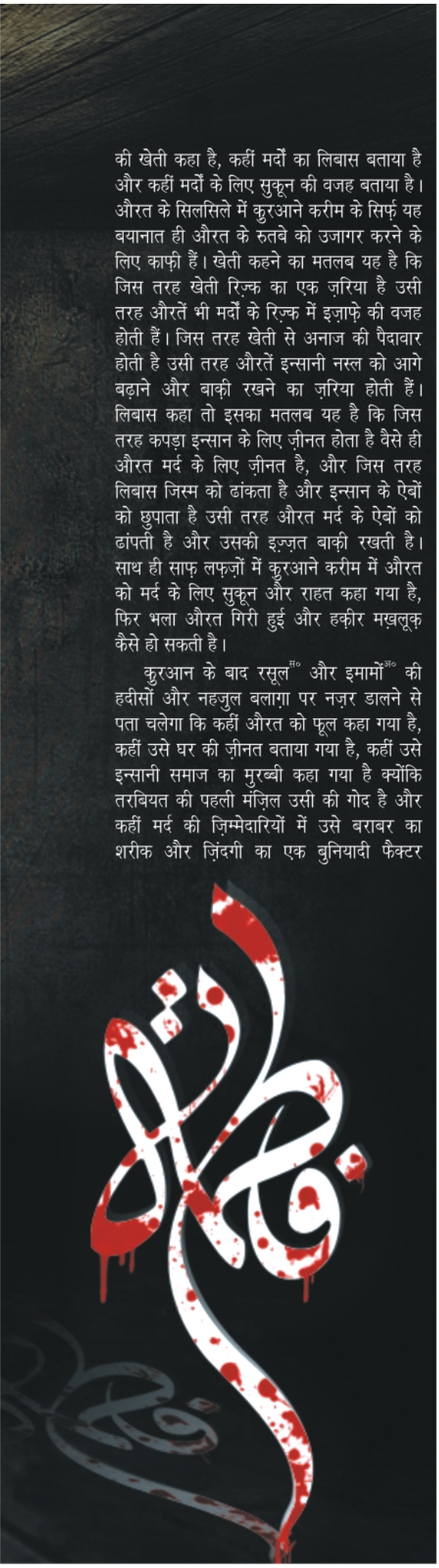

की खेती कहा है, कहीं मर्दों का लिबास बताया है और कहीं मर्दों के लिए सुकून की वजह बताया है। औरत के सिलसिले में क़ुरआने करीम के सिर्फ़ यह बयानात ही औरत के रुतबे को उजागर करने के लिए काफ़ी हैं। खेती कहने का मतलब यह है कि जिस तरह खेती रिज़्क का एक ज़रिया है उसी तरह औरतें भी मर्दों के रिज़्क में इज़ाफ़े की वजह होती हैं। जिस तरह खेती से अनाज की पैदावार होती है उसी तरह औरतें इन्सानी नस्ल को आगे बढ़ाने और बाक़ी रखने का ज़रिया होती हैं। लिबास कहा तो इसका मतलब यह है कि जिस तरह कपड़ा इन्सान के लिए ज़ीनत होता है वैसे ही औरत मर्द के लिए ज़ीनत है, और जिस तरह लिबास जिस्म को ढांकता है और इन्सान के ऐबों को छुपाता है उसी तरह औरत मर्द के ऐबों को ढांपती है और उसकी इज़्ज़त बाक़ी रखती है। साथ ही साफ़ लफ़्ज़ों में क़ुरआने करीम में औरत को मर्द के लिए सुकून और राहत कहा गया है, फिर भला औरत गिरी हुई और हक़ीर मख़लूक़ कैसे हो सकती है।

क़ुरआन के बाद रसूल[स॰] और इमामों[अ॰] की हदीसों और नहजुल बलाग़ा पर नज़र डालने से पता चलेगा कि कहीं औरत को फूल कहा गया है, कहीं उसे घर की ज़ीनत बताया गया है, कहीं उसे इन्सानी समाज का मुरब्बी कहा गया है क्योंकि तरबियत की पहली मंज़िल उसी की गोद है और कहीं मर्द की ज़िम्मेदारियों में उसे बराबर का शरीक और ज़िंदगी का एक बुनियादी फैक्टर बताया गया है। इस्लाम के रहनुमाओं के इरशादात में औरत के रुतबे को पूरी तरह से उजागर किया गया है यानी इस्लाम ने उसके रुतबे को लफ़्ज़ी तआर्रुफ़ में किसी तरह की कोई कमी बाक़ी नहीं छोड़ी है।

2- इस सिलसिले में हमें नबियों और इमामों[अ॰] की सीरत को देखना होगा कि उन्होंने अपने अमल से औरत के रुतबे की किस तरह पहचान करवाई है। यहाँ हम सिर्फ़ पैग़म्बरे इस्लाम[स॰] और इमाम अली[अ॰] की सीरत की तरफ़ इशारा करेंगे। जनाबे ख़दीजा के साथ शौहर और जनाबे फ़ातिमा[स॰] के साथ एक बाप की हैसियत से रसूले इस्लाम[स॰] का जो मिसाली बर्ताव रहा है वह लोगों की नज़रों से छुपा हुआ नहीं है। ख़ास तौर पर अरब के उस बिगड़े हुए समाज में जहां औरत को ज़लील और बेटी को मुसीबत समझा जाता था, रसूल[स॰] का अपनी बेटी जनाबे फ़ातिमा[अ॰] का हद से ज़्यादा एहतेराम करना और उनकी ताज़ीम के लिए खड़े हो जाना इस बात की दलील है कि आपने औरत के रुतबे के अमली तआर्रुफ़ में किसी भी तरह की कमी नहीं छोड़ी। इसी तरह से जनाब फ़ातिमा[स॰] के साथ इमाम अली[अ॰] का जो एहतेराम व मोहब्बत भरा सुलूक रहा है उससे औरत का मक़ाम खुल कर सामने आ जाता है।

3- औरत के रुतबे के क़ौली व अमली तआर्रुफ़ के बाद बात को पूरा करने के लिए जिस चीज़ की असल में ज़रूरत थी वह यह थी कि ख़ुद औरतों में कुछ ऐसी पाकीज़ा और ऊँचे किरदार वाली और बुलंद शख़्सियतें हों जो पूरी ह्युमन हिस्ट्री और पूरे समाज में औरतों के वक़ार, इज़्ज़त और बुलंद रुतबे की पहचान बन जाएं और औरतें उन पर फ़ख़्र करें। इसीलिए हिस्ट्री की स्टडी करने वालों पर यह चीज़ भी छुपी हुई नहीं है, पूरी इन्सानी हिस्ट्री में एक नहीं बल्कि कई ऐसी बुलंद किरदार औरतें मिलेंगी जो वाक़ई औरतों के लिए फ़ख़्र करने के लाएक़ हैं, मिसाल के तौर पर जनाबे हाजिरा[अ॰], जनाबे सारा[अ॰], जनाबे आसिया[अ॰], जनाबे मरयम[अ॰] और जनाबे ख़दीजा[अ॰] जैसी अज़ीम हस्तियाँ मेरे दावे के सुबूत के लिए काफ़ी हैं।

लेकिन अपने टॉपिक की मुनासेबत से आख़िरी दलील के तौर पर जिस अज़ीम और बुलंद शख़्सियत का नाम पेश करना चाहती हूँ वह हैं हज़रत फ़ातिमा ज़ेहरा[अ॰]। आप[अ॰] ही की ज़ात मेरे दावे का वह खुला सुबूत है जिसमें किसी भी शख़्स के लिए कुछ कहने की कोई गुंजाइश बाक़ी नहीं रहती क्योंकि आपकी फ़ज़ीलतें हर एक पर सूरज की तरह अयाँ हैं, विलादत से लेकर शहादत तक आपकी 18 साल की छोटी सी

ज़िंदगी की सरसरी स्टडी करने वाले पर भी यह बात अच्छी तरह साफ़ हो जाती है कि आपकी शख़्सियत हर ऐतबार से परफेक्ट थी और ज़िंदगी की कोई भी ब्रांच आपके यहाँ ख़ाली नहीं थी। यानी इन्सानी फ़ज़ीलतों और वैल्यूज़ के जितने भी रुख़ हो सकते हैं वह सब के सब आपके यहाँ मौजूद थे। इस पर औरतें तो क्या पूरी इन्सानियत जितना फ़ख़्र करे कम है।

किताबों में रसूले इस्लाम की मेराज के बाद 5 हिजरी बेसत में आपकी विलादत लिखी हुई है और यहाँ तक मिलता है कि बचपने ही से आपके अंदाज़ और आदतें दुनिया की आम बच्चियों से अलग थीं। एक बार जनाबे उम्मे सलमा[अ॰] से कहा गया कि बच्ची को तालीम दिया करें तो आपने फ़ौरन कहा कि मैं तो ख़ुद इस बच्ची से तालीम हासिल करती हूँ, मैं इसको क्या तालीम दूंगी? यह वाक़ेआ इस बात के लिए काफ़ी है कि बचपने ही से आपकी ज़ात तमाम इन्सानी फ़ज़ीलतों, अख़्लाक़ और किरदार का खुला नमूना थी इसीलिए इल्म, ज़ोहद, तक़वा, पाकीज़गी, सब्र, हिल्म, इबादत, ईसार, क़ुर्बानी, ख़ुल्क़ और... यह सब आपकी ज़ात में रचे बसे हुए थे।

इसके अलावा तमाम अच्छी सिफ़तें जो ख़ासकर औरतों के लिए इज़्ज़त की बातें हैं जैसे हया, इफ़्फ़त, पाकीज़गी, हिजाब, घरेलू काम-काज, बच्चों की तालीम और परवरिश, शौहर के हक़ों की अदाएगी वग़ैरा, इन सबकी आप बेहतरीन मिसाल थीं। यह सिर्फ़ अक़ीदत की बातें नहीं हैं बल्कि वह तारीख़ी सच्चाईयाँ हैं जिनसे कोई भी समझदार इन्सान आंख नहीं फेर सकता, इसके लिए पैग़म्बरे इस्लाम[स॰] की वह हदीसें भी मौजूद हैं जिनसे जनाबे फ़ातिमा[स॰] का शरफ़ साफ़ तौर पर सामने आ जाता है। एक मौक़े पर आप[स॰] ने

फ़रमाया, ''फ़ातिमा मेरा ही एक टुकड़ा है जिसने उसे तकलीफ़ पहुंचाई उसने मुझे तकलीफ़ दी और जिसने मुझे तकलीफ़ दी उसने ख़ुदा को तकलीफ़ दी और ख़ुदा को तकलीफ़ देने वाला काफ़िर है।'' पैग़म्बरे इस्लाम[स०] ने इस हदीस में जनाबे फ़ातिमा[स०] को अपना एक टुकड़ा बताकर इस हक़ीक़त को साबित कर दिया है कि जो कमालात व सिफ़ात और फ़ज़ीलतें आप[स०] में थीं वह सब आपकी बेटी[स०] में भी पाई जाती थीं।

तारीख़ के पन्नों पर लिखी जनाबे फ़ातिमा[स०] की फ़ज़ीलतों की तसदीक़ हदीसे पैग़म्बर[स०] और बहुत सी क़ुरआने करीम की आयतें ख़ास तौर पर आयते ततहीर कर रही है। क़ुरआन के मुताबिक़ आपकी ज़ात हर तरह के ऐब और गंदगी से पाक है। अगर तमाम आयतों और हदीसों को एक तरफ़ रख दिया जाए तो सिर्फ़ एक आयते ततहीर आपकी फ़ज़ीलत को साबित करने के लिए काफ़ी है और आपकी यही वह फ़ज़ीलतें हैं जिनकी वजह से आप तमाम इन्सानों ख़ासकर जन्नत की औरतों की सरदार हैं। बहरहाल आपके फ़ज़ाएल बेशुमार हैं जिन्हें एक आर्टिकिल तो क्या कई किताबों में भी समेटा नहीं जा सकता है इसलिए सिर्फ़ इशारों में बात करते हुए आपकी तबलीग़ी ज़िंदगी के इस पहलू को पेश करना चाहती हूँ जिसका ताअल्लुक़ औरतों से है और जो आपकी ज़िंदगी में सबसे ज़्यादा साफ़ नज़र आता है।

और वह हया, इफ़्फ़त, पाकीज़गी और हिजाब की अमली तालीम है जिससे जनाबे फ़ातिमा[स०] की नज़र में औरत की शख़्सियत का असल पहलू उभर के सामने आता है और यह बात साफ़ हो जाती है कि औरत को हया, इफ़्फ़त, पाकीज़गी और पर्दे की पाबंदी के साथ-साथ अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने का हुक्म दिया गया है। जनाबे फ़ातिमा[अ०] की नज़र में औरत एक फूल है जिसे हवस भरी निगाहों के कांटों से बचाए रखना ज़रूरी है और इस मक़सद को बस हिजाब के ज़रिए ही पूरा किया जा सकता है। आपने पर्दे को औरतों के लिए मेराज बताया है और इस्लाम के इस हुक्म पर सख़्ती से अमल करके दुनिया भर की औरतों को हिजाब का अमली दर्स दिया है। एक बार पैग़म्बरे इस्लाम[स०] ने मिम्बर पर सवाल किया कि औरत के लिए सबसे अच्छी चीज़ क्या है?यह बात जनाबे फ़ातिमा[अ०] तक पहुंची तो आपने यह सुनकर फ़रमाया, ''औरत के लिए सबसे अच्छी बात यह है कि वह किसी ग़ैर मर्द को न देखे और न ही किसी ग़ैर मर्द की नज़र उस पर पड़ने पाए।'' जनाबे फ़ातिमा[अ०] का यह जवाब रसूल[स०] तक पहुंचा तो आपने ख़ुश होकर फ़रमाया, ''क्यों न हो फ़ातिमा मेरा ही एक टुकड़ा है।'' यह वाक़ेआ भी जनाबे फ़ातिमा[अ०] की नज़र में औरत पर आने वाली सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी को बताता है। इसके अलावा आपने अपने किरदार से घरेलू काम-काज, बच्चों की तालीम व तरबियत, शौहर की इताअत व ख़िदमतगुज़ारी वग़ैरा जैसी ज़िम्मेदारियों के अदा करने का भी जो अमली सबक़ दिया है उसकी भी मिसाल नहीं मिलती।

आपकी पाकीज़ा ज़िंदगी और मिसाली किरदार से यह बात साबित हो जाती है कि आप दुनिया में औरतों की रहबर बन कर आई थीं। और इसीलिए रसूल[स०] ने आपको अपना टुकड़ा बताया है। जिस तरह एक लाख चौबीस हज़ार नबी और बारह इमाम लोगों की हिदायत के लिए आए थे, उसी तरह आपको औरतों की हिदायत व रहबरी का मनसब अता किया गया। ऐसी सूरत में आपका मासूमा और पैग़म्बर का टुकड़ा होना ज़रूरी है। आपने 3 जमादिउस्सानी 11 हिजरी को मुसीबतों का सख़्त तरीन सफ़र तय करने के बाद इस दुनिया से रेहलत फ़रमाई और 18 साल की छोटी सी ज़िंदगी में ज़िंदगी के हर पहलू को पूरा करके औरतों की इज़्ज़त व वक़ार और फ़ज़्ल व शरफ़ की निशानी बन गईं। आपके बग़ैर न सिर्फ़ यह कि वीमेन हिस्ट्री अधूरी रहेगी बल्कि औरतों को मर्दों के मुक़ाबले में फ़ख़्र से सर बुलंद करने के लिए कोई मिसाली किरदार नहीं मिल सकेगा। इसलिए कि औरतों में आप ही की ज़ात में सारी फ़ज़ीलतें जमा हैं। वीमेन हिस्ट्री से जनाबे मरयम[अ०], जनाबे आसिया[अ०] और जनाबे ख़दीजा जैसी अज़ीम औरतों को कुछ देर के लिए अलग करके सिर्फ़ आपकी शख़्सियत को सामने रखा जाए तो आपकी ज़ात सारी औरतों के लिए क़यामत तक के लिए फ़ख़्र करने के लिए काफ़ी है।

पॉज़िटिव & निगेटिव THINKING

■ फ़ातिमा कुम्मी

हमारी सोच दो तरह की होती है। एक पाज़िटिव थिंकिंग यानी अच्छी सोच और एक निगेटिव थिंकिंग यानी बिल्कुल इसके उलट। जब हम ज़िंदगी को ग़लत रुख़ से देखते हैं तो हमारे अंदर निगेटिव सोच पैदा होने लगती है। और जब हम ज़िंदगी को अच्छे नज़रिए से देखते हैं और अच्छा सोचते हैं तो हमारी सोच धीरे-धीरे पॉज़िटिव बनती जाती है।

ख़ुदा ने हर शख़्स को बहुत सी नेमतें दी हैं बल्कि ऐसे मौक़े और चांसेज़ भी दिए हैं जहां इन्सान ज़िंदगियां बना भी सकता है और बिगाड़ भी सकता है, ख़ुशियां भी बिखेर सकता है और ग़म भी।

इसी तरह एक औरत अपने घर को जन्नत भी बना सकती है और जहन्नम भी, मगर सबसे इम्पॉर्टेंट यह है कि इस अनमोल तोहफ़े को कैसे इस्तेमाल किया जा रहा है? इसको बहतरीन तरीक़े से इस्तेमाल किया जा रहा है या नहीं? इससे ख़ुशहाल ज़िंदगी गुजर रही है या नहीं? ख़ुशहाल ज़िंदगी के लिए हर वक़्त ख़ुश रहना बहुत ज़रुरी है मगर यह इतना आसान नहीं है। यह तभी हो सकता है जब इन्सान अंदर से ख़ुश रहना सीख ले। उसे ख़ुश रहने ही में बड़ा मज़ा आने लगे। इसके लिए उसे अपनी सोच और नज़रिए को पॉज़िटिव अंदाज़ में बदलने का फ़न सीखना होगा। यानी ज़िंदगी के पहलुओं को अगर अच्छे अंदाज़ से देखने की कोशिश की जाए तो ख़ुशी ज़्यादा होती है वहीं अगर हम बुरी नज़र से देखें तो अच्छाईयां भी बुरी नज़र आती हैं। यह फ़र्क़ हमारे सोचने का है। हम एक पॉज़िटिव चीज़ से बहुत ज़्यादा ख़ुश भी हो सकते हैं और नहीं भी। यह हमारे सोचने के तरीक़े पर डिपेंड करता है। एक इन्सान को ख़ुश रहने के लिए अपने हालात बदलने से कहीं ज़्यादा अपनी सोच बदलने की ज़रुरत होती है।

अक्सर हम ज़िंदगी को ग़लत रुख़ से देखते हैं। हम सिर्फ़ मुसीबत को देखते हैं, नेमत को नहीं। एक बंद दरवाज़े को देखते हैं और दूसरे बहुत से खुले दरवाज़ों को नहीं देखते। परेशानियों को देखते हैं और मौक़ों को नहीं। हम वहां देखते हैं जहां हम कुछ नहीं कर सकते और वहां नहीं देखते जहां हम दुनिया बदल सकते हैं। इस तरह हम पाज़िटिव के बजाए निगेटिव सोचते हैं।

पॉज़िटिव थिंकिंग इन्सान की कामयाबी की पहली सीढ़ी होती है। अच्छी सोच, अच्छे ख़यालात और अच्छी फ़िक्र इंसान की कामयाबी के लिए बहुत ज़रुरी है। दुनिया में कोई भी चीज़ निगेटिव नहीं है लेकिन अगर देखा जाए तो नेगिटिव हमारी ही सोच होती है। यह सही है कि हर चीज़ के दो रुख़ होते हैं एक अच्छा और एक बुरा। यह हमारे हाथ में है कि हम किस रुख़ को देखना चाहते हैं। निगेटिव सोच ने इन्सान को कभी भी फ़ायदा नहीं पहुंचाया है। वहीं अच्छी सोच के अंदर इतनी ताक़त होती है कि हर नामुमकिन को मुमकिन बना सकती है। हम अपने अच्छे नज़रिए और अच्छी सोच से सब कुछ कर सकते हैं। "वह बहुत कामयाब इन्सान है" यह जुमला तो आपने अक्सर सुना ही होगा। लेकिन इंसान के कामयाब होने पर उसको ख़ुश क़िस्मत समझा जाता है जबकि यह उसकी मेहनत का नतीजा होता है। इसीलिए जो लोग अपने इरादों में कामयाब नहीं हो पाते हैं उनके लिए नाकाम होने की डेफ़िनीशन साफ़ होती है और फिर वह ख़ुद को इस डेफ़िनीशन के तराज़ू में तोलते हैं और नतीजे में वह ख़ुद को बदक़िस्मत फ़ील करते हैं। इस तरह वह निगेटिव सोच का शिकार होने लगते हैं और धीरे-धीरे ख़ुद को नाकारा, बेवक़ूफ़ और बदक़िस्मत समझने लगते हैं जिससे उनकी शख़्सियत पर निगेटिव असर पड़ता है, उनकी हिम्मत टूटने लगती है और सोचने समझने की सलाहियत भी ख़त्म होने लगती है। इसलिए निगेटिव सोचने का कोई फ़ायदा नहीं है। जहां तक कामयाबी और नाकामी का ताल्लुक़ क़िस्मत से है तो वह बाद की बात है। पहले यह समझने की ज़रुरत है डेस्टिनेशन तक पहुंचने से पहले की हमारी ड्यूटीज़ क्या हैं? इसी के साथ साथ हमारे लिए यह जानना भी बहुत ज़रुरी है कि एक कामयाब इंसान की सोच, उसकी फ़िक्र और उसका अमल क्या होता है, ताकि हमें कामयाबी तक पहुंचने में मदद मिले क्योंकि हमारा अमल हमारी क़िस्मत पर डायरेक्ट असर करता है। कामयाब इन्सान और नाकाम इन्सान के अमल में

ज़मीन-आसमान का फ़र्क़ होता है। आईए! देखें नाकाम लोग क्या सोचते हैं।

इन लोगों की सोच निगेटिव होती है

ऐसे लोगों को हर तरफ़ मुश्किलें ही मुश्किलें नज़र आती हैं। शिकायत करना इनका सबसे फ़ेवरिट सब्जेक्ट होता है जैसे मौसम की ख़राबी की शिकायत, खाने की शिकायत या लोगों की शिकायत। यह सिर्फ़ परेशानियों का प्रचार करते नज़र आते हैं जबकि परेशानियों के हल की तरफ़ इनका ध्यान कभी नहीं जाता। हर शख़्स इन्हें अपना दुश्मन नज़र आता है। छोटी से छोटी बात को भी बढ़ा चढ़ा कर ज़िंदगी और मौत का मसला बना देते हैं। यह कम हिम्मती का बहतरीन नमूना होते हैं और छोटी सी नाकामी से भी हिम्मत हार जाते हैं।

काम करने के बाद सोचते हैं

अक़्ल के बजाए इनका मिज़ाज इनके कामों का रास्ता तय करता है। यह लोग बिना सोचे समझे जल्दी फ़ैसला करने वाले और बेपरवाह होकर नतीजा देखे बिना काम करने वाले होते हैं जिसकी वजह से हर वक़्त शर्मिंदगी का शिकार रहते हैं।

फ़िज़ूल और फ़ालतू बातें करने वाले

ज़्यादा बोलना और फ़ालतू बातें करना इनकी ख़ास आदत होती है। ज़्यादा बोलने की वजह से उन्हें यह भी पता नहीं चलता कि उनकी बातें कितनी फ़ालतू और कितनी बेमक़सद हैं। हमेशा अपने आप को सही समझते हैं और अपनी हर बात और काम की कोई न कोई वजह पेश करने वाले होते हैं ताकि वह ख़ुद को सही साबित करने में कामयाब हो जाएं। इसी से वह सुपीरियारिटी के जज़्बे का सुकून भी हासिल करते हैं।

कमज़ोर हिम्मत

कामयाब लोग अपनी नाकामियों को तजुर्बे मानते हैं जबकि निगेटिव सोच वाले लोग पहली नाकामी पर ही हिम्मत हार जाते हैं। यह जल्दबाज़ होते हैं। किसी भी काम की शुरुआत करते ही फ़ौरन रिज़ल्ट चाहते हैं। इसलिए जल्दी ही इनकी दिलचस्पी ख़त्म हो जाती है। इनके अंदर ज़्यादा हिम्मत नहीं होती है।

जलन

यह हमेशा कामयाब लोगों से जलन और हसद करते हैं। और उनकी कामयाबी को घटाकर बयान करते हैं और उनकी कामयाबी के पीछे दूसरों का हाथ बताते हैं। अपने मुक़ाबले में किसी को आगे बढ़ते हुए नहीं देख सकते लेकिन क्योंकि ख़ुद कुछ नहीं कर सकते इसलिए दूसरे की बातें और हरकतें बताकर अपने दिल की भड़ास निकालते हैं।

मुश्किलों से घबराने वाले

ज़िंदगी की दुश्वारियों का सामना करने से कतराते हैं। यह हर वक़्त आसानियों के चक्कर में लगे रहते हैं। मुश्किल फ़ैसला करने या मुश्किल राह पर चलने से घबराते हैं। ऐसे लोग यह नहीं जानते कि जो बोया जाता है वही काटा जाता है। ज़िंदगी अमल और मुश्किलों से सजी हुई है। इन्हीं से गुज़रकर इन्सान को अपनी राह बनानी है।

इलाज

निगेटिव सोच से छुटकारा पाना बड़ा कठिन है लेकिन लगातार कोशिश करने से निगेटिव थिंकिंग में कमी की जा सकती है और धीरे-धीरे इसको ख़त्म किया जा सकता है और इसकी जगह पॉज़िटिव थिंकिंग को दी जा सकती हैं। हम यहां इस कठिन काम को आसान करने के लिए कुछ तरीक़े बता रहे हैं जिन्हें अपनाने से आपके अंदर चेंजेस आना शुरु हो जाएंगे और आप अपने अंदर पॉज़िटिव थिंकिंग पैदा कर सकेंगी।

मेरी उम्र बीत चुकी है

अक्सर लोग अच्छे कामों की तरफ़ से अपना मुंह इसलिए मोड़ लेते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि इस काम के लिए उनकी उम्र सही नहीं है। जैसे बुढ़ापे में पढ़ाई न करना क्योंकि उनकी पढ़ने की उम्र निकल गई। यह निगेटिव सोच है। इससे बाहर निकलिए। रसूले इस्लाम ﷺ ने फ़रमाया है कि इल्म हासिल करो झूले से क़ब्र तक। एक्सपर्टस का भी यही कहना है कि सीखने का काम मरते दम तक जारी रहता है और बहुत सी सलाहियतें वक़्त गुज़रने के साथ सामने आती हैं।

अंदेशे

निगेटिव सोच में सबसे ज़्यादा अंदेशों का ख़तरा होता है। अंदेशे हमारे कॉन्फ़ीडेंस को खोखला कर देते हैं। जिस्मानी कमज़ोरी भी एक बड़े अंदेशे के तौर पर देखने में आती है यानी माजूर लोगों में यह निगेटिव सोच ज़्यादा होती है। दूसरे लफ़्ज़ों में कहा जाए तो अस्ल में निगेटिव सोच ही माजूरी है। आपने ऐसे माजूर लोगों को भी देखा होगा जो बड़े-बड़े ओहदों पर हैं और समाजी कामों में भी बढ़चढ़ कर हिस्सा लेते हैं।

दौलत की पॉवर

बहुत से लोग बहुत से काम सिर्फ़ इसलिए नहीं कर पाते क्योंकि उनके पास उस काम को करने के लिए उतना पैसा या सोंसेज़ नहीं होते जो होने चाहिएं। इस तरह यह सोच भी महरुमी बढ़ाने में मदद करती है इसलिए इस सोच को बदलना ज़रुरी है।

इम्पॉसिबल की दुनिया से बाहर निकलिए

कभी भी किसी काम को इम्पॉसिबल मत समझिए। हमेशा पॉज़िटिव सोच ही रखिए। काम मुश्किल तो होता है लेकिन कोशिश करने में कोई नुक़सान नहीं है और यही सोचिए कि कोशिश करना हमारा फ़र्ज़ है।

हर सुबह नई उम्मीद

अपनी सेहत का ख़्याल रखिए। जिस्मानी सेहत हमारी सोचों पर असर करती है, इसलिए जिस्म के साथ-साथ ज़ेहन के अच्छे ख़यालात पर भी ध्यान रखा जाए। मायूसी गुनाह है इसलिए पुरउम्मीद रहिए और ख़ुद को हर तरह के हालात से मुक़ाबला करने के लिए तैयार रखिए। ●

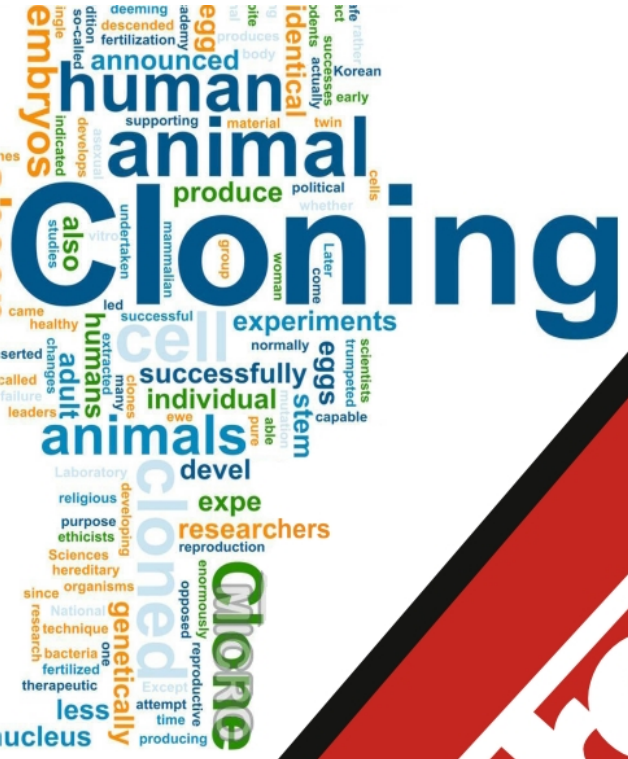

क्लोनिंग Cloning

■ मोहम्मद अली सैय्यद

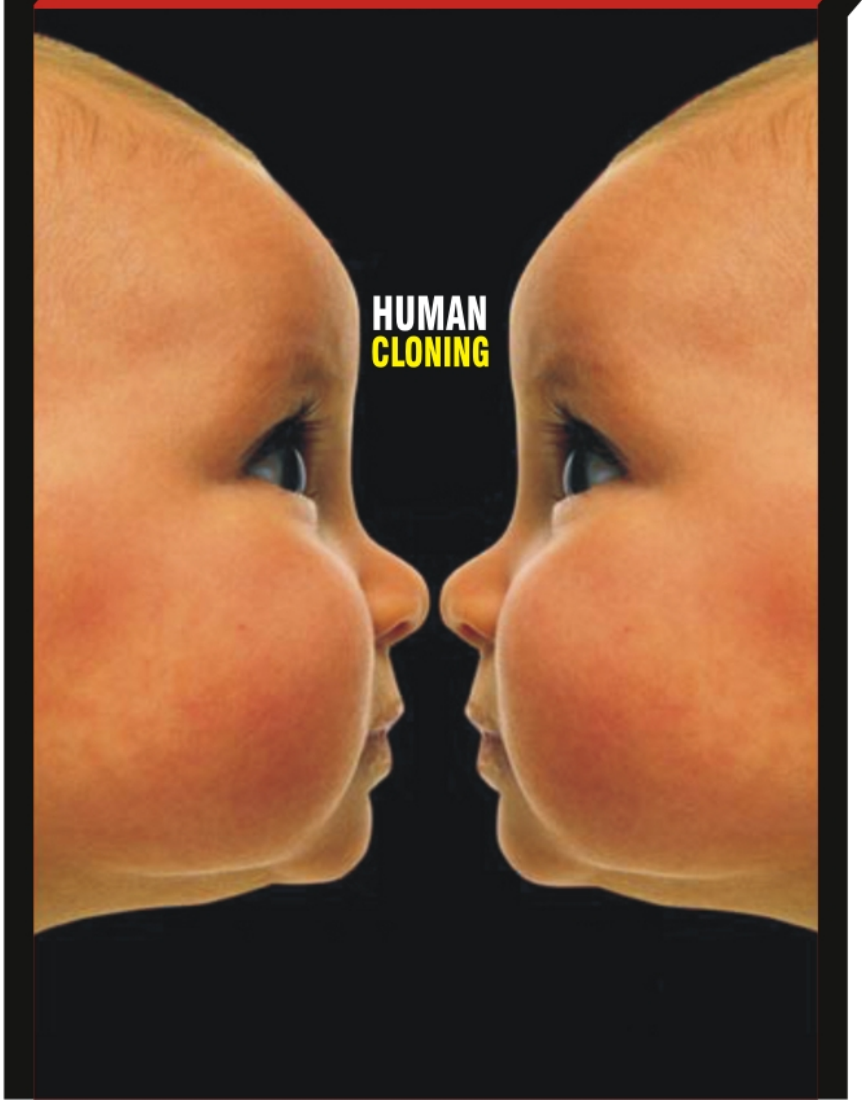

दुनिया में प्रोडक्शन - रिप्रोडक्शन का सिलसिला लाखों साल से जारी है। नस्ल बढ़ाने के लिए माँ और बाप की ज़रूरत होती है। इन्सान ही नहीं जानवर और पेड़-पौधे भी नस्ल बढ़ाने के इसी उसूल पर काम करते हैं लेकिन इसी दुनिया में बहुत से जानदार ऐसे हैं जो इस ट्रेडीश्नल तरीक़े से अलग हैं। कई जानदारों को माँ-बाप के मिलन की ज़रूरत नहीं पड़ती जैसे मैक्सिको में पाया जाने वाला एक पेड़ जिसे हीट प्लांट कहा जाता है, इसे नस्ल बढ़ाने के लिए नर व मादा के मिलन की ज़रूरत नहीं पड़ती।

इस पौधे के बच्चे ख़ुद उसी से फूटते हैं और इस पेड़ की हू-बहू कापी होते हैं। इन छोटे पेड़ों के अन्दर वह सारी जींस पाई जाती हैं जो उस पेड़ में होती हैं जिसने इन बच्चों को जन्म दिया था। सिर्फ़ हीट प्लांट ही नहीं, बहुत से दूसरे पौधे और बहुत से कीड़े-मकोड़े (Insects) भी नस्ल बढ़ाने के ट्रेडीश्नल तरीक़े से नहीं गुज़रते जैसे बैक्टीरिया और वायरस। इस तरह हैमर-हेड शार्क बिना नर मछली के बच्चे पैदा करती हैं। इन बच्चों में नर मछली का DNA सिरे से मौजूद ही नहीं होता। तुर्की की मुर्ग़ी बिना मुर्ग़े के अंडे देती है। आप यह सुनकर हैरान होंगीं कि समन्दरों में ऐसी मछलियाँ भी पाई जाती हैं जो एक सीज़न में नर होती हैं और दूसरे में मादा बन जाती हैं और फिर अगली बार भी इसी तरह होता रहता है।

ट्रेडीश्नल तरीक़े के बिना पीढ़ी को आगे बढ़ाना

साइंटिस्ट्स ने सोचा कि जब पौधे नर-मादा के मिलन के बिना अपनी हू-बहू कापी बना सकते हैं तो हम इन्सान ऐसा क्यों नहीं कर सकते। दिलचस्प बात यह है कि यह ख़याल उन साइंटिस्ट्स के ज़ेहन में आया जिनके बुज़ुर्गों ने ज़माने के एक मोड़ पर हज़रत ईसा[अ०] की पैदाइश पर एतेराज़ किया था और जनाबे मरयम[अ०] की शान में गुस्ताख़ी की थी। वह ख़ुदा की बात को समझ ही

नहीं सकते थे कि अल्लाह जिस तरह और जो चाहे पैदा कर सकता है। यहाँ तक कि क़ुरआने मजीद में इन्हीं लोगों को समझाने के लिए फ़रमाया गया है कि यह हज़रत ईसा[अ॰] की बिना बाप की पैदाइश पर एतराज़ करते हैं जबकि आदमी की पैदाइश पर ग़ौर नहीं करते कि उन्हें तो हम ने बिना माँ और बाप के पैदा किया था।

डॉली नामी भेड़ की क्लोनिंग

जब डॉली नामी भेड़ को क्लोनिंग के ज़रिए पैदा किया गया तो सारी दुनिया में तहलका मच गया। बेशक यह एक अनोखा और हैरान कर देने वाला तजुर्बा था लेकिन इसकी शोहरत इस अंदाज़ से की गई कि जैसे साइंटिस्ट्स ने एक जीती-जागती भेड़ को ख़ुद तैयार कर लिया है। हम मुसलमान जो साइंस से ख़ौफ़ज़दा भी रहते हैं और उस से इम्प्रेस्ड भी होते हैं, हमें साइंस की तरक़्क़ी में अपना इस्लाम ख़तरे में दिखाई दिया है। हम जैसे कमज़ोर अक़ीदा मुसलमान डॉली भेड़ की वजह से बड़ी परेशानी का शिकार हो गए हैं कि भई किसी मख़लूक़ को ख़ल्क़ करना तो अल्लाह का काम है। यह काम साइंटिस्ट्स ने किस तरह कर दिखाया। अब ज़ाहिरी इस्लाम को ख़तरा तो हो ही गया।

हक़ीक़त वह नहीं थी जो हम जैसे लोग अख़बारों की चटपटी हैड लाइंस पढ़कर समझ रहे थे और दिल ही दिल में सहमे जा रहे थे कि अब क्या होगा...!

हक़ीक़त क्या थी और यह अज़ीमुश्शान कारनामा साइंटिस्ट्स ने किस तरह कर दिखाया इसकी किसी हद तक तफ़सील हम आपको बता रहे हैं।

डॉली भेड़... पहला दूध पिलाने वाला चौपाया था जिसे क्लोनिंग के ज़रिए "पैदा" किया गया। यह साइंसी कारनामा स्कॉटलैंड के Roslin Institute में प्रोफ़ेसर लॉन विलमट और कीथ कैम्पोयल नामी दो साइंटिस्ट्स ने अंजाम दिया। डॉली भेड़ 5 जुलाई 1996 में पैदा हुई और 14 फ़रवरी 2003 तक ज़िंदा रही यानी उसकी उम्र क़रीब छः साल थी। डॉली भेड़ के बाद ऐसी अब तक बहुत सी भेड़ों, बकरियों, गायों, चूहों और सुअरों को क्लोनिंग के ज़रिए "पैदा" किया जा चुका है।

लेकिन यह भी हक़ीक़त है कि डॉली भेड़ से पहले इस अमल यानी न्युकिलयर ट्रांसफ़र के ज़रिए 277 जेनीन पर तजुर्बे हुए जिनमें से सिर्फ़ डॉली भेड़ वाला तर्जुबा कामयाब रहा। भेड़ के अलावा दूसरी तरह के जानदारों में क्लोनिंग के ज़रिए ज़िंदगी के चांसेस सिर्फ़ 1% रहे।

DNA की खोज और फिर उसकी तमाम क्वालिटीज़ को जानने के बाद साइंटिस्ट्स इस बात पर ग़ौर कर रहे थे कि ज़्यादा दूध देने वाली गाय की जीन अगर आम गाय में ट्रांसफ़र कर दी जाए या इन्सानी प्रोटीन तैयार करने वाली जीन को भेड़ों या बकरियों में ट्रांसफ़र किया जाए तो इस तरह हम ज़्यादा दूध, ज़्यादा गोश्त और ज़्यादा इन्सानी प्रोटीन हासिल कर सकेंगे। इस तरह बैक्टीरिया के ज़रिए इन्सोलीन नामी हार्मोन तैयार करने के चांसेस पर ग़ौर किया जा रहा था और यह ख़्वाब आख़िरकार पूरा हो ही गया।

युनिवर्सः ए ग्रेट लेबॉरेट्री

बात दरअसल यह है कि यह पूरा युनिवर्स अल्लाह ने इसलिए नहीं बनाया कि आप इसको बस देखते रहें, अपनी आँखें सेकते रहें और अपने दिमाग़ और सलाहियतों को काम में न लाएं। क़ुरआन में तो इस युनिवर्स, इस दुनिया, इस इन्सानी जिस्म पर ग़ौरो-फ़िक्र करने का हुक्म दिया गया है। अल्लाह तआला ने तो इस दुनिया, इस युनिवर्स को इन्सानों के लिए एक तजुर्बेगाह, तमाम रिसोंसेस से मालामाल एक ज़बरदस्त लेबोरेट्री बनाया है।

अब अगर हम इस शानदार लेबॉरेट्री में एक ग़ैर ज़िम्मेदार, कम अक़्ल व कम इल्म चौकीदार की तरह पड़े सोते ही रहें और जो लोग इस लेबॉरेट्री में नित नए तजुर्बे कर रहे हों उन्हें बुरा-भला कहते रहें तो यह कहाँ का इन्साफ़ है। अगर यहूदी और ईसाई इस दुनिया पर हुकमरानी कर रहे हैं तो इसकी वजह यह है कि वह अपनी सलाहियतों, अपने ग़ौरो-फ़िक्र, अपने उसूल और अपनी रिसर्च व मेहनत की वजह से कर रहे हैं।

मुसलमानों की हिस्ट्री हर दौर में अज़ीम साइंटिस्ट्स और स्कॉलर्स के तज़किरों से भरी पड़ी है। बड़े दिमाग़ सिर्फ़ दूसरी क़ौमों ही में नहीं पैदा होते। मुसलमान उलमा, स्कॉलर्स और साइंटिस्ट्स ने उस दौर में साइंसी बुनियादों को मज़बूत किया था जब अभी साइंस लफ़्ज़ भी ईजाद नहीं हुआ था। लेकिन मुसलमान क़ौम ने अपने उन क़ीमती हीरे-जवाहेरात की क़द्र नहीं की। आज हमारे समाज में उन अज़ीम शख़सियतों को बहुत कम लोग जानते हैं जबकि क्रिकेट के खिलाड़ियों, सिंगर्स, तबलचियों और कामेडियंस को हम सब अच्छी तरह "पहचानते" हैं।

हद तो यह है कि बच्चों की मैगज़ींस में भी जो जोक्स छपते हैं या रियालिटी प्रोग्राम्स में सुनाए जाते हैं उनमें "एक ग़ायब दिमाग़ प्रोफ़ेसर" के जोक्स मशहूर हैं। जब आप बच्चों के दिमाग़ में एक आलिम, एक स्कॉलर, एक प्रोफ़ेसर की इतना मज़ाक़ भरी इमेज बिठाएंगे तो बच्चे प्रोफ़ेसर क्यों बनेंगे। बच्चे तो खिलाड़ियों, सिंगर्स, कॉमेडियंस और स्टेज फ़नकारों ही को अपना आईडियल बनाएंगे।

नई नस्ल की अकसरियत जो आज एजुकेशन और हायर-एजुकेशन हासिल कर रही है इस एजुकेशन का एक ही मक़सद हैः कामयाब डाक्टर, कामयाब इंजीनियर, कामयाब मैनेजर बनना और बस। इसी वजह से आज बेहतरीन डाक्टर्स, इंजीनियर्स और मैनेजर्स तो हमारी युनिवर्सिटीज़ से निकल रहे हैं लेकिन अच्छे इन्सान इन सेंटर्स से बाहर नहीं आ रहे हैं।

बात हो रही थी कि यह दुनिया एक ज़बरदस्त लेबोरेट्री है लेकिन हम ने अपना दर्दे दिल बयान करना शुरु कर दिया।

बहरहाल, आईए! अब फिर अपने टॉपिक की तरफ़ लौटते हैं।

डॉली भेड़ की क्लोनिंग किस तरह हुई?

यह अमल बुनियादी तौर पर न्युक्लियर ट्रांसफ़र की तकनीक के ज़रिए पूरा हुआ। साइंटिस्ट्स ने एक महीने की मादा भेड़ के थनों से वह Egg Cells लिए जो नस्ल बढ़ाने में अपना रोल अदा करते हैं। यह भेड़ जिस नस्ल से थी उस नस्ल को Finn Dorset कहा जाता है।

इसके साथ ही उन्होंने एक और नस्ल

मरयम
April 2012
Monthly Coupon
ड्रॉ में शामिल होने के लिए
10 कूपन जमा करके हमें भेजिए।

Scottish Black Face की भेड़ से भी इस तरह के Egg Cells लिए। इसके बाद उन्होंने काले सर वाली भेड़ के एक Cell के Nucleus को निकाल दिया और Nucleus से ख़ाली उस Cell को फ़िनडोरसेट नस्ल की भेड़ के Egg Cell के Nucleus में इंजेक्ट कर दिया। इस स्टेज से गुज़रने के बाद एक एलेक्ट्रिक शाक दिया गया जिस से एग सेल, दूसरी भेड़ के Nucleus या यूँ समझ लें कि यह Cell दूसरी भेड़ के Cell का हिस्सा बन गया। अब उस Cell में एक से दो, दो से चार, चार से आठ बनने का अमल शुरु हो गया। यह एक नया Embryo था। इस Embryo को साइंटिस्ट्स ने Scottish Black Face नस्ल की भेड़ के युटिरस में ट्रांसफ़र कर दिया।

इस से जो बच्चा पैदा हुआ, वह इसी तरह और इसी टाइम-पीरियड में पैदा हुआ जिस तरह और जिस टाइम-पीरियड में भेड़ के आम बच्चे पैदा होते हैं। यह बच्चा डॉली नामी भेड़ थी जो अगरचे काले चेहरे वाली भेड़ के पेट से पैदा हुई थी लेकिन यह फ़िनडोरसेट नस्ल की भेड़ की तरह बिल्कुल सफ़ेद थी। उसकी हू-बहू कापी!

यह बहरहाल एक ज़बरदस्त कारनामा था जो स्काटलैंड के साइंटिस्ट्स ने अंजाम दिया था लेकिन ख़बरों को सरसरी अंदाज़ से छापने और पढ़ने वालों की सरसरी स्टडी से रिज़ल्ट्स लेने की वजह से ऐसा लगने लगा कि साइंटिस्ट्स ने लेबोरेट्रीज़ के अंदर ख़ुद एक भेड़ पैदा कर ली है। यह दावा न साइंटिस्ट्स ने किया और न हक़ीक़त में ऐसा था और न यह कभी मुमकिन हो सकेगा कि साइंटिस्ट्स अपने बलबूते पर कोई जानदार मख़लूक़ पैदा कर सकेंगे। वह क़ुदरत की बनाई हुई इस दुनिया, इस अज़ीमुश्शान लेबारेट्री में मौजूद रिर्सोसेस ही से नए रिर्सोसेस पैदा कर सकते हैं, नई चीज़ें तैयार कर सकते हैं और कर रहे हैं। साइंटिस्ट्स कभी ख़ुदाई का दावा नहीं करते, यह दरअसल हम हैं जो अपनी कम इल्मी, ज़िद और तास्सुब की बुनियाद पर ख़ुद ही कुछ चीज़ें गढ़ लेते हैं और फिर उन पर डटे रहते हैं। ●

बच्चे से मुहब्बत की कमी के नुक़सान

बच्चों को अगर माँ की मुहब्बत पूरी तरह न मिले तो बच्चे कई तरह की मुश्किलों में घिर जाते हैं जैसे भूक न लगना, नींद न आना, सोते वक़्त बड़बड़ाना, बिस्तर गीला कर देना और अपने आपको सबसे आगे रखने और सबकी आंखों का तारा बनने के लिए तरह-तरह की बुरी आदतों का शिकार हो जाना वग़ैरा।

बच्चों में शुरूआती 4 साल में मुहब्बत की कमी का एहसास सबसे ज़्यादा होता है। जो बच्चा माँ की मुहब्बत से पूरी तरह महरूम होता है वह ज़िद्दी, झगड़ालू और चिड़चिड़ा हो जाता है। वह किसी पर रहम और मेहरबानी नहीं करता बल्कि हर शख़्स और हर चीज़ के बारे में निगेटिव सोच रखता है। ऐसा बच्चा ख़ुदग़रज़ बन जाता है और अपनी ख़्वाहिशों को पूरा करने के लिए हर जाएज़ और नाजाएज़ रास्ता चुन लेता है।

जिस बच्चे को माँ की मुहब्बत नहीं मिलती या कम मिलती है वह इधर-उधर से मुहब्बत तलाश करने लगता है और हर सच्ची या झूठी मुहब्बत से इम्प्रेस्ड हो जाता है। लड़कों और लड़कियों के सेक्चुअली बहकने की बुनियाद ज़्यादातर मुहब्बत न मिलने की वजह से ही पड़ती है।

बच्चे से मुहब्बत में ज़्यादती के नुक़सान

बच्चों के साथ मुहब्बत और प्यार भरा सुलूक बहुत अच्छा है मगर शर्त यह है कि यह मुहब्बत हद से न बढ़ जाए। मुहब्बत में ज़्यादती बच्चों की आदतें बिगाड़ देती है और वह ज़िद्दी, लालची और लाड-प्यार के आदी हो जाते हैं।

मुहब्बत में ज़्यादती जिस वजह से भी हो, ये बहुत नुक़सानदेह चीज़ है। इस से बच्चों में ज़िम्मेदारी उठाने का एहसास कमज़ोर पड़ जाता है, उनकी दिमाग़ी सलाहियतें कम हो जाती हैं और वह दूसरों का एहतेराम करना नहीं सीख पाते।

ऐसे बच्चों में एक तरह का सुपीरियारिटी कॉम्पलेक्स भी पैदा हो जाता है और वह सब से ऊपर रहना चाहते हैं। साथ ही मग़रूर भी हो जाते हैं। बड़े होकर जब समाज में उन्हें एकदम उलटे हालात का सामना करना पड़ता है तो वह झुंझला जाते हैं और स्ट्रेस का शिकार हो जाते हैं। नतीजा ज़ाहिर है कि यही होगा कि वह एक अच्छे शहरी नहीं बन सकते।

इसलिए बच्चे की अच्छी एजुकेशन और परवरिश के लिए बैलेंस्ड मुहब्बत और प्यार बहुत ज़रूरी है।

माहौल का असर

उज़मा हुसैनी

शादी के बाद सबसे अहम ज़िम्मेदारी जो किसी भी औरत या लड़की पर आती है वह उसके बच्चे की परवरिश है। कुछ लोग बच्चों को यह सोच कर अनदेखा कर देते हैं कि इनका क्या यह तो बच्चे हैं, जब बड़े होंगे तो समझा देंगे यानी साल-दो साल या पाँच-सात साल तक यह समझा जाता है कि अभी इनकी तरबियत का वक़्त नहीं आया, जब बड़े होंगे तो इनकी तरबियत करेंगे। यह उनकी भी सबसे बड़ी भूल है क्यों कि जिस उम्र को यह समझते हैं कि अभी तरबियत की उम्र नहीं है उस उम्र में बच्चे हाफ़िज़े क़ुरआन बन जाते हैं, जैसा कि हम ने देखा कि ईरान में पाँच या सात साल के बच्चे पूरे क़ुरआन के हाफ़िज़ बन गए।

बच्चे की अहमियत

सबसे पहले यह यक़ीन करना ज़रूरी है कि हमारे समाज में हमारे बच्चे की अहमियत क्या है। कुछ लोग यह समझते हैं कि उनके एक बच्चे का समाज पर क्या असर पड़ेगा। यह उनकी बहुत बड़ी भूल है क्यों कि एक ही एक बच्चे से मिलकर समाज बनता है और अगर हर माँ-बाप यही सोच लें तो पूरा समाज बिगड़ जाएगा। अगर यह मान भी लिया जाए कि आप ही को बच्चे की तरबियत के लिए वक़्त नहीं मिलता, आप ध्यान नहीं दे पा रही हैं और बाक़ी सारे बच्चे ठीक-ठाक तरबियत पा रहे हैं तो एक बच्चे से समाज पर क्या असर पड़ेगा बल्कि वह एक भी सबको देखकर सही हो जाएगा। यहाँ पर हम आपको यह मिसाल देंगे कि एक पूरी देग भर कर आप खाना पकाएं और उसमें सिर्फ़ थोड़ा सा ज़हर डाल दें तो ज़रा सा ज़हर पूरे खाने को ज़हरीला कर देता है। इसी तरह महल्ले में एक ख़राब बच्चा पूरे महल्ले के बच्चों को ख़राब कर सकता है। शायद इसीलिए रिवायात में है कि अगर मकान लेना हो तो पहले पड़ोसियों को देखो क्यों कि ग़लत सोहबत और माहौल का असर तेज़ी से फैलता है ख़ास कर बच्चों में क्योंकि उनमें कैच करने की पावर ज़्यादा होती है इसलिए वह असर जल्दी क़ुबूल करते हैं।

इस तरह आपकी गोद में पलने वाला बच्चा, बच्चा नहीं बल्कि समाज का फ़्युचर है जिसको ख़ुदा ने अमानत के तौर पर आपको दिया था। उसकी सही परवरिश ही अमानतदारी है और उसमें ज़रा सी भी कमी समाज के फ़्युचर के साथ ख़यानत और खिलवाड़ है।

अब आप अपनी क़ौम व समाज का फ़्युचर जैसा चाहती हैं अपने बच्चे की वैसी ही परवरिश करें, और एक अच्छे समाज और डेवलप्ड क़ौम के लिए एजुकेशन, परवरिश और सही फ़िक्र बहुत ज़रूरी है।

परवरिश पर माहौल का असर

इन तीन चीज़ों के लिए घर का माहौल बहुत अहम है ख़ासकर बच्चे की परवरिश पर माहौल का बहुत बड़ा असर होता है जिसमें घर का माहौल, स्कूल का माहौल, महल्ला, पड़ोस या सोसाइटी का माहौल, दोस्त और साथियों का महौल। इस माहौल की मिसाल किसी बच्चे के लिए ऐसी ही है कि जैसे किसी प्लास्टिक के प्रोडक्ट के लिए सांचे की मिसाल, यानी साँचा जैसा होगा उस प्रोडक्ट की शक्ल भी वैसी ही हो जाएगी। ऐसा नहीं है कि साँचा बैट का हो और उसमें बाल निकल आए बल्कि वही निकलेगा जिसका साँचा है। इसी तरह हम बच्चे को जैसा माहौल देंगे वैसा ही वह बनता जाएगा। अब अगर हमारे घर में दीनदारी है तो बच्चा भी दीनदार बन जाएगा और अगर घर में फ़िल्म व सीरियल का माहौल है तो बच्चा भी उसी माहौल में ढल जाएगा या झूट और ग़ीबत का माहौल है तो बच्चा उसी को ले लेगा। बच्चे की परवरिश के लिए ख़ुद अपने अंदर सुधार उसके लिए सबसे ज़रूरी है यानी हम सबसे पहले अपने अंदर सुधार पैदा करें। हम अपने बच्चे को जैसा और जो भी बनाना चाहते हैं या जिस शक्ल में देखना चाहते हैं ज़रूरी है कि पहले हम ख़ुद को इस रास्ते पर ले जाएं। यह नामुमकिन है कि हम ख़ुद झूट बोलें और बच्चे से यह उम्मीद रखें कि वह बिल्कुल झूट न बोले, जैसे एक साहब के यहाँ कोई उन से मिलने आया तो उन्होंने घर के अंदर बैठकर अपने बच्चे से कहलवा दिया कि बेटा उन से कह दो कि पापा घर पर नहीं हैं। अब उस बच्चे से आप क्या उम्मीद रखती हैं कि यह बड़ा होकर झूट न बोले। असल में उसके लिए यही चीज़ परवरिश हो गई और इस वाक़िए के ज़रिए बाप ने बेटे को झूट सिखा दिया। बाप की ज़बान यह कह रही है कि झूट न बोलो मगर अमल झूट की तरफ़ दावत दे रहा है। इसी तरह माँ, बाप या पड़ोसियों के सामने अगर किसी मौक़े पर झूठ बोलती है तो लड़का बड़ी आसानी से उसको सीख लेता है।

माँ की ज़िम्मेदारी

यूँ तो यह ज़िम्मेदारी माँ-बाप दोनों की है मगर माँ का रोल इसमें ज़्यादा अहम है क्योंकि बाप का ज़्यादा वक़्त घर से बाहर गुज़रता है मगर माँ का ज़्यादा वक़्त घर में और बच्चों के साथ गुज़रता है और माँ बाप से ज़्यादा बच्चों से क़रीब होती है, साथ ही नेचर के एतेबार से भी माँ या औरत में बच्चों की परवरिश की सलाहियत ज़्यादा होती है। माँ की गोद में पलने की वजह से बच्चा सबसे ज़्यादा माँ से क़रीब होता है और सबसे ज़्यादा माँ को ही देखता है इसलिए बेसिक परवरिश भी उसको माँ से ही मिलती है।

नूर और हिदायत

■ परवीन मसऊद

क़ुरआने हकीम वह आसमानी किताब है जो आज से चौदह सौ साल पहले पैग़म्बरे इस्लाम[स०] पर उस वक़्त और ऐसे माहौल में नाज़िल हुई जब कि पिछली इल्हामी किताबें अपनी असली हालत पर बाक़ी नहीं रह गई थी और नबियों की टीचिंग्स उनकी उम्मत के हाथों मिट चुकी थीं।

सदियों से इस ज़मीन पर बेदीनी व जिहालत और ज़ुल्म के गहरे अंधेरे छाये हुए थे। हर तरफ़ इंसानियत और शराफ़त मिट रही थी। ऐसे वक़्त में ज़रूरत थी कि आसमानी बरकतों के ख़ज़ानों की बारिश का जो सिलसिला रुक गया था, फिर से जारी हो। ऐसे ही वक़्त में अरब की ज़मीन से हिदायत और इल्म का सूरज निकला यानी फ़ारान की चोटियों से नुबूवत का सूरज हिदायत की किताब के साथ उभरा। उसके निकलने के साथ ही सारी दुनिया अल्लाह के नूर से जगमगाने लगी। उसी रौशनी ने थोड़े ही वक़्त में बेदीनी व जिहालत और ज़ुल्म व गुनाहों के अंधेरों को दूर करके अरब को इल्म व हिदायत के नूर से मुनव्वर कर दिया। पैग़म्बरे इस्लाम[स०] ने अपनी सीरत व कैरेक्टर और टीचिंग्स से ऐसा इंक़ेलाब पैदा किया कि बेदीनी व जिहालत की पस्तियों में ज़िंदगी बसर करने वाली क़ौम दुनिया की दूसरी क़ौमों की रहबरी करने लगी। पैग़म्बरे इस्लाम[स०] ने इंसानियत को क़यामत तक के लिए जीने का सिस्टम सिखाया जो इंसानियत की सरबुलंदी और मेराज की गारन्टी है। जीने का यह क़ानून क़ुरआने मजीद है जिसे दोनों जहानों के पैदा करने वाले ने मोजज़ा बनाकर नाज़िल किया। जो अपने अलफ़ाज़ व मोजज़े के साथ आज तक बाक़ी है और क़यामत तक बाक़ी रहेगा क्योंकि इसे नाज़िल करने वाले ने इसकी हिफ़ाज़त का ऐलान साफ़ तौर पर किया है। इसलिए कि रसूले इस्लाम[स०] अल्लाह के आख़िरी नबी और क़ुरआने हकीम ख़ुदा की आख़िरी किताब है कि जिसके दामन में क़यामत तक के इंसानी मसलों का हल समो दिया गया है। यह किताब अलफ़ाज़, मायनी, मतलब और हक़ीक़तों के लिहाज़ से एक मोजज़ा है।

क़ुरआने मजीद ख़ुदा का कलाम है। इसमें पिछले, आज के और आने वाले ज़माने के सारे मसलों के हल छुपे हैं। यह इल्म का ऐसा समन्दर है कि जिसकी गहराईयों की हद नहीं। हज़रत अली[अ०] का इरशाद है, "क़ुरआने हकीम का ज़ाहिर ख़ूबसूरत और बातिन दूर रस है। इसके अजाएबात ख़त्म न होने वाले बेहद व बेपायान हैं, बेदीनी व जिहालत के अंधेरे सिर्फ़ इसी से दूर हो सकते हैं।"

यह किताब इंसान की कामयाबी की गारंटी और समाज के लिए एक मुकम्मल सिस्टम है। हज़रत अली[अ०] ने अपने एक ख़ुतबे में क़ुरआने हकीम के बारे में फ़रमाया, "यक़ीनन यह क़ुरआन वह बेहतरीन नसीहत करने वाला है जो कभी धोखा नहीं देता और ऐसा बेहतरीन हादी है जो कभी गुमराह नहीं करता और ऐसा बयान करने वाला है जो कभी झूठ नहीं बोलता। जो क़ुरआन का दोस्त हुआ वह हिदायत में इज़ाफ़े और गुमराही में कमी के साथ उठा और यक़ीन जानो कि क़ुरआने हकीम की तालीम के बाद कोई ग़ुरबत नहीं और क़ुरआने हकीम की तालीम से पहले कोई दौलत दौलत नहीं। क़ुरआन से ज़ाहिरी मांगो और अंदरूनी बीमारियों के लिए शिफ़ा हासिल करो। मुसीबतों को दूर करने के लिए इसी से मदद मांगो। यक़ीनन यही बेदीनी व निफ़ाक़ की बीमारियों और गुमराही का अकेला इलाज है। इसी के ज़रिए अल्लाह से दुआ मांगो, इसी से मुहब्बत के साथ आगे बढ़ो क्योंकि बंदों के

खुदा की तरफ़ ध्यान के लिए इस जैसा कोई ज़रिया नहीं है। यक़ीन रखो कि यह वह शिफ़ाअत करने वाला है कि जिसकी शिफ़ाअत क़ुबूल होने वाली है और ऐसा बोलने वाला है कि जिसकी बात तसदीक़ शुदा है। महशर के दिन क़ुरआन ने जिसकी शिफ़ाअत कर दी उसकी शफ़ाअत क़ुबूल हुई।''

हज़रत अली[अ०] ने एक और ख़ुत्बे में क़ुरआन के बारे में फ़रमाया, ''फिर अल्लाह ने उन पर वह किताब नाज़िल की जो एक नूर है जिसकी क़िन्दीलें ख़ामोश नहीं होतीं, जिसके चिराग़ों की रौशनी मदधम नहीं होती। यह किताब ऐसा समंदर है जिसकी गहराई तक कोई नहीं पहुंच सकता और ऐसा रास्ता है कि जिस पर चलने वाला कभी भटकता नहीं और ऐसी किरन है कि जिसकी रौशनी पर अंधेरा छा नहीं सकता और ऐसा फ़ुरक़ान (हक़ व बातिल में फ़र्क़ करने वाला) है जिसकी दलील मग़लूब नहीं होती। ख़ुदा ने इसे उलमा की प्यास बुझाने और फ़क़ीहों के दिलों की बहार बताया है। यह ऐसी दौलत है जिसके साथ मर्ज़ नहीं रहता। यह वह नूर है जिसके साथ अंधेरा नहीं रहता।''

मआज़ बिन जबल कहते हैं कि मैं एक सफ़र में पैग़म्बरे अकरम[स०] के साथ था। मैंने कहा कि कोई नसीहत कीजिए तो पैग़म्बरे अकरम[स०] ने फ़रमाया, ''अगर तुम कामयाबी की ज़िंदगी और शहीदों की मौत चाहते हो तो क़ुरआने करीम की तिलावत करो। इसकी तालीम हासिल करो क्योंकि यह ख़ुदा का कलाम है जो शैतान से हिफ़ाज़त करता है।''

एक दूसरी जगह पैग़म्बरे अकरम[स०] ने फ़रमाया, ''क़ुरआन ख़ुदा के सिवा हर चीज़ से अफ़ज़ल है। जिसने क़ुरआन की इज़्ज़त की उसने ख़ुदा की इज़्ज़त की और जिसने क़ुरआन की इज़्ज़त नहीं की उसने ख़ुदा की इज़्ज़त नहीं की।''

इमाम सज्जाद[अ०] फ़रमाते हैं, ''क़ुरआन इलाही इल्म और ख़ुदा की मारेफ़त का ख़ज़ाना है। जब इसके ख़ज़ाने को खोलो तो इसमें ग़ौर करो और इस नफ़ा देने वाले दरिया से मारेफ़त के मोती ले लो।''

रसूले करीम[स०] ने फ़रमाया है, ''क़ुरआने हकीम ख़ुदा और बंदे के बीच एक वादा है इसलिए हर मुसलमान को चाहिए कि रोज़ाना इस वादे को देखे और हर रोज़ पचास आयतों की तिलावत करे।''

फिर फ़रमाया, ''सुबह - शाम क़ुरआन की तिलावत को मत भूला करो क्योंकि क़ुरआन मुर्दा दिल को ज़िंदगी देता है और बुरे काम से रोकता है।''

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने फ़रमाया, ''मोमिन को चाहिए कि अगर उसे मौत आए तो क़ुरआन पढ़ा हुआ हो या क़ुरआन पढ़ रहा हो। यह क़ुरआन ख़ुदा का मेहमान है, इसे पढ़ा करो। इसके एक-एक लफ़्ज़ की तिलावत पर वह तुम्हें दस नेकियां अता करेगा। अपने घरों को क़ुरआन की तिलावत से रौशन करो और यहूदियों व नसारा की तरह अपने घरों को क़ब्रें न बनाओ क्योंकि उन्होंने अपने घरों को ख़ुदा का ज़िक्र न करके ख़ुदा के ज़िक्र को अपनी इबादतगाहों तक महदूद कर दिया था। यक़ीनन जिस घर में क़ुरआन की तिलावत ज़्यादा होगी उस घर में बरकत ज़्यादा होगी। ऐसा घर आसमान वालों के लिए इस तरह चमकता है जिस तरह ज़मीन वालों के लिए सितारे चमकते हैं।''

इमाम[अ०] फ़रमाते हैं, ''क़यामत के दिन तीन चीज़ें ख़ुदा की बारगाह में शिकायत करेंगी।

1- ऐसी ग़ैर आबाद मस्जिद जिसमें कोई नमाज़ न पढ़ता हो।

2- ऐसा आलिम जो जाहिलों के बीच हो और उससे दीनी मसाएल न पूछे जाएं।

3- घर में रखा हुआ क़ुरआन जिस पर ग़ुबार पड़ा हुआ हो और कोई उसकी तिलावत न करे।''

रसूले इस्लाम[स०] का इरशाद है कि जो शख़्स नेकों की ज़िंदगी और शहीद की मौत चाहता है और उस दिन कामयाबी चाहता है कि जिस दिन हसरत के अलावा कुछ नहीं होगा और चाहता है कि उसे क़यामत के दिन गर्मी के मौक़े पर साया नसीब हो और गुमराही के मौक़े पर हिदायत उसके क़दमों से लिपटी हो तो उसे चाहिए कि क़ुरआन का दर्स हासिल करे यानी क़ुरआन पढ़े और पढ़ाए क्योंकि जो क़ुरआन पढ़ाता है वह ख़ुदा की बारगाह में इज़्ज़त व शरफ़ का मालिक होता है क्योंकि क़ुरआन ख़ुदाए रहमान का कलाम है।

BERMUDA TRIANGLE

बरमूदा ट्राइंगिल

इमामे ज़माना[अ॰] की ग़ैबत के दौर में बहुत सी ऐसी बातें हैं जिन्हें अंजान लोगों ने हमारे बीच फैला दिया है। हमारे लिए ज़रूरी है कि हम इन सुनी-सुनाई बातों पर यक़ीन न करें बल्कि इनके बारे में सोचें और समझें। इन्हीं अफ़वाहों में से एक बात यह है कि कुछ लोगों का कहना है कि इमामे ज़माना[अ॰] बरमूदा ट्राइंगिल में रहते हैं। बरमूदा ट्राइंगिल क्या है और यह बात कब से शुरु हुई, हम इसे आपके सामने पेश कर रहे हैं।

सात सौ साल पहले ज़िंदगी गुज़ारने वाले अली बिन फ़ाज़िल नाम के एक आदमी का कहना है कि वह एक ऐसे जज़ीरे में गए जहाँ इमामे ज़माना[अ॰], उनके दोस्त और बेटे रहते हैं। यह ख़ूबसूरत जज़ीरा सफ़ेद पानी से घिरा हुआ है। इस जज़ीरे के पास आने पर दुश्मनों के मज़बूत और बड़े-बड़े जहाज़ भी डूब जाते हैं। वह इस जज़ीरे को जज़ीर-ए-ख़िज़रा यानी हरा-भरा जज़ीरा कहते हैं।

वहाँ पर अली बिन फ़ाज़िल, शम्सुद्दीन नाम के एक आदमी से मिलते हैं और वह उन से इमामे ज़माना और कुछ दूसरे दीनी मसलों के बारे में बात करते हैं।

डेढ़ सौ साल पहले एटलस समुन्द्र में "बरमूदा ट्राइंगिल" नाम के एक ऐसे जज़ीरे का पता चला जिस से नज़दीक होने पर बहुत से जहाज़ और कश्तियाँ डूब गईं।

कुछ लोगों ने यह कहना शुरु कर दिया कि यह वही जज़ीर-ए-ख़िज़रा है जिसमें इमामे ज़माना[अ॰] रहते हैं। इसीलिए वहाँ पर कश्तियाँ और जहाज़ डूब जाते हैं।

इन बातों में कहाँ तक सच्चाई है आईए इसे यहाँ पर देखते हैं:-

1- अली बिन फ़ाज़िल के वाक़िए के बारे में अल्लामा मजलिसी अपनी किताब बिहारुल अनवार में कहते हैं कि मैंने इस वाक़िए को किसी मोतबर किताब में नहीं देखा है इसलिए इसे बिल्कुल ही अलग लिख रहा हूँ।

2- अगर अली बिन फ़ाज़िल की बात सही हो कि वह किसी जज़ीरे में गए तब भी हम उस पूरी कहानी को सही नहीं मान सकते क्योंकि उन्होंने जो कुछ भी इमामे ज़माना और उनके बेटों के बारे में बयान किया है वह शम्सुद्दीन नाम के आदमी के रिफ़्रेंस से बयान किया है। हम यह कैसे मान लें कि वह आदमी सच्चा था क्योंकि अली बिन फ़ाज़िल ज़्यादा दिनों तक वहाँ नहीं रुके। इसी तरह उन्होंने ख़ुद कश्तियों को डूबते हुए भी नहीं देखा था। इसे भी दूसरों की ज़बान से सुना था।

इस कहानी में बहुत सी ऐसी बातें हैं जो एक-दूसरे से टकराती हैं। जैसे एक जगह शम्सुद्दीन कहता है कि मैंने अपने इमाम को कभी नहीं देखा है मेरे दादा ने उन्हें देखा था। लेकिन दूसरी जगह वह कहता है कि मैं हर जुमे की सुबह उनकी ज़ियारत करने के लिए जाता हूँ। इसी तरह इस कहानी में एक दूसरा आदमी कहता है कि इमाम को सिर्फ़ शम्सुद्दीन या उनके जैसे दूसरे लोग ही देख सकते हैं।

3- शम्सुद्दीन नाम का आदमी जो आपको इमाम का ख़ास नायब और वकील बताता है वह एक जगह कहता है कि क़ुरआन में तहरीफ़ हुई है

और बहुत सी आयतों को कम कर दिया गया है।

अगर इस कहानी में कोई और कमी न होती तो सिर्फ़ यही बात इसे झूठी कहानी साबित करने के लिए काफ़ी थी क्योंकि क़ुरआन की हिफ़ाज़त का वादा ख़ुदा ने किया है। और रसूल[स०] ने क़ुरआन और अहलेबैत[अ०] को एक साथ क़यामत तक के लिए छोड़ा है। अहलेबैत[अ०] के होते हुए क़ुरआन पर तहरीफ़ का इल्ज़ाम लगाना क़ुरआन पर ज़ुल्म के साथ-साथ अहलेबैत[अ०] पर भी ज़ुल्म है और उन पर इल्ज़ाम लगाना है। जिन अहलेबैत[अ०] ने दीन को बचाने के लिए इतनी क़ुरबानियाँ दीं हों, यह कैसे हो सकता था कि क़ुरआन में तहरीफ़ हो जाए और वह अपना क़ुरआन अपने पास रखे रहें।

अगर क़ुरआन में तहरीफ़ हो जाए तो पूरा दीन ख़त्म हो जाएगा। न रसूल[स०] की रिसालत साबित हो सकेगी और न अहलेबैत[अ०] की विलायत या कोई दूसरी फ़ज़ीलत।

इस कहानी में जब शम्सुद्दीन यह कहता है कि क़ुरआन में तहरीफ़ हो गई है तो इमाम[अ०] के जज़ीरे में यक़ीनी तौर पर असली क़ुरआन होगा। अली बिन फ़ाज़िल को वह क़ुरआन ले आना चाहिए था ताकि लोगों को असली क़ुरआन दिखा देते या कम से कम ख़ुद देख लेना चाहिए था ताकि लोगों को इस क़ुरआन के बारे में बता सकें लेकिन ताज्जुब तो यह है कि वह इस असली क़ुरआन को लाना तो दूर की बात है देखने के लिए भी नहीं माँगते हैं। लेकिन झूठी रिवायतें गढ़ने वाले इतना कहाँ सोचते हैं?!!

दीन के दुश्मनों को यह मालूम है कि क़ुरआन दीन की बुनियाद है और इसे ख़त्म नहीं कर सकते, इसलिए उनकी हमेशा यह कोशिश रही है कि वह लोगों को बहका दें कि यह असली क़ुरआन नहीं है।

4- इस कहानी में यह भी कहा गया है कि जब दुश्मनों की कश्तियाँ और जहाज़ इस जज़ीरे में आना चाहते हैं तो वह डूब जाते हैं। इसका मतलब है कि दुश्मन वहाँ नहीं जा सकते लेकिन इमाम[अ०] के चाहने वाले वहाँ जा सकते हैं। जिस जज़ीरे पर इमाम[अ०] रहते हैं वहाँ न सही लेकिन उस जज़ीरे पर तो जा ही सकते हैं जहाँ इमाम के बेटे और शम्सुद्दीन रहते हैं। लेकिन हम देखते हैं कि हमेशा से मोमिनीन ज़हमत और तकलीफ़ें उठाकर हज करने, करबला और दूसरे मासूमों की ज़ियारत करने के लिए जाते हैं लेकिन कभी किसी ने वहाँ जाने की कोशिश नहीं की। जबकि अगर यह कहानी सही होती तो बहुत से मोमिनीन वहाँ किसी भी तरह पहुँचने की कोशिश करते।

5- बरमूदा ट्राइंगिल नाम की जगह ज़रूर पाई जाती है मगर उसके बारे में यह कहना कि वहाँ मआज़ल्लाह इमामे ज़माना[अ०] रहते हैं, ग़लत है। क्योंकि बरमूदा ट्राइंगिल जैसी और भी जगहें हैं जहाँ अभी तक कोई नहीं पहुँच सका है और वहाँ पर भी ऐसे ही हादसे हुए हैं जैसे जापान और मलेशिया के पास एक समुन्द्री जगह है जिसे 'शैतानी समुन्द्र' कहा जाता है। इन सब हादसों की वजह उन जगहों का मौसम और उस जगह की ज़मीन का मैगनेटिक होना है। वैसे कुछ लोगों का यह भी कहना है कि सुपर-पावर्स ने दूसरों को डराने धमकाने के लिए ऐसी जगहों पर क़ब्ज़ा कर रखा है जहाँ वह अहम जहाज़ों और उनमें सवार अहम लोगों को मार देते हैं।

6- बरमूदा ट्राइंगिल असल में क्या है और वहाँ पर जहाज़ों के डूबने की क्या वजह है इसके बारे में रिसर्च होती रहेगी लेकिन किसी भी हालत में हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि वहाँ इमाम[अ०] रहते हैं। यह इमाम[अ०] पर बहुत बड़ा इल्ज़ाम है। क्या वह शख़्सियत जिसके बारे में हम कहते हैं कि वह दुनिया में आकर सबको निजात देगी, ऐसी है कि एक गुमनाम जगह पर रहे, किसी को उसके बारे में मालूम न हो और जब भी तेल और दूसरे सामान से भरे हुए जहाज़ वहाँ से गुज़रना चाहें तो वह उन्हें डुबो दे? बेगुनाह लोगों को मार दें? क्या हमारे इमामों की यही सीरत रही है कि वह अपने आपको बचाने के लिए बेगुनाह लोगों को मारते रहें? यह इल्ज़ाम तो इमाम[अ०] को न मानने वाले भी नहीं लगाते हैं फिर हमारे बीच यह बातें कैसे फैल गई हैं? यह सारी बातें तो दुश्मनों की गढ़ी हुई मालूम होती हैं जिन्होंने हमें इमाम से दूर करने के लिए ख़ुराफ़ात में उलझा दिया है ताकि हम इमाम के असली पैग़ाम और अपनी ज़िम्मेदारियों की तरफ़ ध्यान न दे सकें और इन्हीं बातों में उलझे रहें।

7- शायद असली बात यह है कि यूरोपी मुल्क का रहने वाला कोई आदमी लम्बा सफ़र करते हुए मिस्र के पास किसी ऐसी जगह पहुँचा था जहाँ मेहदी फ़ातिमी नाम का बादशाह हुकूमत करता था। वहाँ बहुत हरी-भरी ज़मीनें और ख़ूबसूरत शहर था। उस मुसाफ़िर ने वहाँ से वापस आने पर लोगों के बीच यह बातें बताईं और बात आगे बढ़ते-बढ़ते एक कहानी बन गई। ●

अच्छी-अच्छी बातें

झूठ क्यों नहीं बोलना चाहिए

आयतुल्लाह मकारिम शराज़ी

आम तौर पर झूठ किसी एक रूहानी कमज़ोरी की वजह से पैदा होता है यानी कभी ऐसा भी होता है कि इंसान ग़ुरबत और लाचारी से घबराकर, दूसरे लोगों के उसको अकेले छोड़ देने की बुनियाद पर या फिर अपने ओहदे और मंसब की हिफ़ाज़त के लिए झूठ बोल देता है।

कभी माल और दौलत, मुक़ाम और दूसरी ख़ाहिशों से उसकी सख़्त मुहब्बत उसको झूठ बोलने पर मजबूर कर देती है। इन जगहों पर झूठ का सहारा लेकर वह अपनी ख़ाहिशों को पूरा करना चाहता है।

ऐसा भी होता है कि इंसान की किसी शख़्स या ग्रुप से मुहब्बत या नफ़रत भी उसे मजबूर करती है कि इंसान हक़ीक़तों के ख़िलाफ़ अपने सामने वाले शख़्स या ग्रुप की हिमायत या मुख़ालिफ़त में कोई बात कहे। अगर सामने वाला शख़्स या ग्रुप उसका महबूब होता है तो यह झूठा शख़्स उसको फ़ायदा और अगर दुश्मन होता है तो ज़ाहिर है कि उसको नुक़सान पहुँचाना चाहता है।

इंसान कभी इसलिए भी झूठ बोलता है कि दूसरों के सामने ख़ुद को बड़ा बनाकर पेश कर सके और उनके सामने इल्मी, समाजी, सियासी, कारोबारी वग़ैरा किसी भी नज़र से अपनी धाक बिठा सके।

वैसे हक़ीक़त यह है कि यह सारी बुराईयाँ जो झूठ की वजह से पैदा होती हैं, इंसान की रूहानी कमज़ोरी, शख़्सियत की कमज़ोरी और ईमान की कमज़ोरी की वजह से ही पैदा होती हैं। जिन लोगों को अपने आप पर भरोसा नहीं होता है या रूहानी एतेबार से कमज़ोर होते हैं ऐसे लोग अपने मक़सद को पाने और होने वाले नुक़सान से बचने के लिए हर तरह का झूठ और बहाने बनाने को अपना पहला और आख़िरी हथियार मानते हैं जबकि इनके उलट वह लोग जिनको अपनी शख़्सियत पर यक़ीन और भरोसा होता है वह ख़ुद अपनी ज़ात के सहारे आगे बढ़ते हैं और किसी ग़लत काम या तरीक़े से फ़ायदा नहीं उठाते।

इसी तरह वह लोग जिनको ख़ुदा की अज़ीम क़ुदरत पर भरोसा होता है, वह भी हर तरह की कमायाबी, जीत और बुलन्दी को अपने इरादे में तलाश करते हैं और ख़ुदा की क़ुदरत को हर तरह की क़ुदरत से ऊँचा और अज़ीम मानते हैं। इसलिए ऐसे लोग किसी भी हालत में झूठ या ग़लतबयानी का सहारा नहीं लेते कि अपने मक़सद तक पहुंच सकें या होने वाले नुक़सानों से ख़ुद को बचा सकें। हाँ! कभी-कभी ऐसा भी होता है कि कुछ लोग झूठ के नुक़सानों और सच की अहमियत से अन्जान होने या माहौल की ख़राबी से इस बहुत ही ख़तरनाक बुराई का शिकार हो जाते हैं।

एक दूसरी अहम वजह यह भी होती है कि इंसान काम्पलेक्स की वजह से भी झूठ को अपनी आदत बना लेता है। जो लोग काम्पलेक्स का शिकार होते हैं उनकी कोशिश होती है कि किसी भी झूठ या ग़लत बयानी के ज़रिए काम्पलेक्स को ख़त्म कर सकें।

झूठ का इलाज

इस बुराई के पैदा होने और जड़ पकड़ लेने की वजहों को बयान करने के बाद इस रूहानी बीमारी का इलाज बहरहाल आसान नज़र आता है। इस अख़लाक़ी बुराई से बचने के लिए नीचे दी हुई बातों पर अमल करना ज़रूरी है:

(1) सबसे पहले ज़रूरी है कि इस ख़तरनाक बीमारी में फंसे लोगों को इसके ख़तरनाक रूहानी, दुनियावी और इंडिविजुअल व समाजी नुक़सानों और असर के बारे में बताया जाए। इसके बाद क़ुरआनी आयतों और रिवायतों से साबित किया जाए कि झूठ बोलने वाले शख़्स के मन-घड़त फ़ाएदे उसके झूठ से पैदा होने वाले इंडिविजुअल और समाजी और अख़लाक़ी नुक़सानों और गुमराही का बिल्कुल मुक़ाबला नहीं कर सकते।

इस तरह इस बीमारी में फंसे लोगों को यह भी याद दिलाया जाए कि अगर कुछ जगहों पर कुछ फ़ायदे भी हों तो यह फ़ायदे वक़्ती और गुज़र जाने वाले हैं क्योंकि तमाम हालात में किसी इंसानी समाज की सबसे बड़ी ताक़त एक दूसरे पर भरोसा और इत्मिनान होती है। अगर समाज में झूठ रिवाज पा जाए तो समाज में पाया जाने वाला आपसी भरोसा भी ख़त्म हो जाता है।

यह बात भी ध्यान देने वाली है कि हो सकता है कुछ लोग यह सोचें कि अगर ऐसे झूठ बोले जाएं जो कभी खुल ही न सकते हों तो क्या नुक़सान है। ज़ाहिर है कि इस सूरत में समाज का आपसी भरोसा भी बाक़ी रहेगा।

हक़ीक़त यह है कि यह ख़याल एक बहुत बड़ी ग़लती है क्योंकि तर्जुबों से साबित हो चुका है कि अक्सर झूठ छुप नहीं पाता है। इसकी वजह यह है कि जब भी समाज में कोई वाक़िआ पेश आता है तो कहीं न कहीं, किसी न किसी तरह से वह वाक़िआ दूसरे लोगों से जुड़ा होता है। अगर कोई शख़्स अपनी ज़बान के ज़रिए ऐसा वाक़िआ या काम अंजाम देना चाहे जो हक़ीक़त में समाज में

मौजूद नहीं है तो ऐसा शख़्स एक ऐसा काम करना चाहता है जो दूसरे सारे वाक़िआत और चीज़ों से नहीं जुड़ा है। और अगर यह शख़्स बहुत ज़्यादा ज़हीन और चालाक होता है तो पहले ही से कुछ दूसरे झूठ और ग़लत बातें गढ़ लेता है ताकि दूसरे वाक़िआत और कामों को अपने इस नए वाक़िए या काम से जोड़ सके। लेकिन हक़ीक़त यह है कि वह किसी भी तरह पहले ही से दूसरे वाक़िआत के बारे में सभी मुमकिना रवाबित की पेशीनगोई नहीं कर सकता। यही वजह है कि कुछ सवालों के जवाब देने के बाद हार जाता है और नज़रें झुका लेता है। जैसे हज़रत अली[अ०] के ज़माने में एक शख़्स बहुत बड़ी दौलत के साथ तिजारत पर गया था। साथ में उसके कुछ दोस्त भी थे। वापस आने पर उसके दोस्तों ने उसके इंतेक़ाल की ख़बर दी। ध्यान देने की बात यह है कि यही लोग हक़ीक़त में उस शख़्स के क़ातिल थे। हज़रत अली[अ०] ने उस शख़्स की बीमारी, इंतेक़ाल, कफ़न व दफ़न वग़ैरा के बारे में सवाल करना शुरू किए। बहुत जल्दी ही वह लोग चुप हो गए और अपना जुर्म क़ुबूल कर लिया। इसकी वजह यह है कि उन लोगों ने आपस में सिर्फ़ यह फ़ैसला कर लिया था कि वापसी पर कह देंगे कि वह मरीज़ हो गया और मर गया। लेकिन कहाँ, कैसे, किस वक़्त, किसने ग़ुस्ल दिया, किसने कफ़न दिया, कहाँ दफ़न किया गया वग़ैरा जैसे सवालों पर कोई ग़ौर नहीं किया और न ही इस बारे में किसी आपसी फ़ैसले पर पहुँच सके। हक़ीक़त यह है कि वह इस हद तक छोटे-छोटे सवालों पर कोई एक फ़ैसला कर भी नहीं सकते थे। इसीलिए हो सकता है कि ज़हीन से ज़हीन और चालाक से चालाक शख़्स का झूठ भी थोड़ी सी तहक़ीक़ व सवालों के बाद खुल जाए और उसे झूठ को क़ुबूल करना पड़ जाए।

ख़ासकर यह कि अपने झूठ के बारे में इंसान जो ताने-बाने बुनता है वह उसकी मेमोरी में बाक़ी नहीं रह पाते क्योंकि उनकी कोई हक़ीक़त नहीं होती। इसलिए अगर किसी झूठे शख़्स से कुछ वक़्त के बाद सवाल किए जाएं तो उसके जवाब में कई ग़लत बयानियाँ पैदा हो जाती हैं और वह परेशान हो जाता है उसके पिछले और मौजूदा जवाबों में फ़र्क़ पाया जाता है और यह फ़र्क़ उसके झूठ को ज़ाहिर करने की एक वजह बन जाता है इसीलिए कहा जाता है कि झूठे शख़्स का हाफ़ज़ा कमज़ोर होता है।

(2) एक दूसरा अहम इलाज यह है कि मरीज़ को यह एहसास दिलाया जाए कि वह एक शख़्सियत का मालिक है, उसकी अपनी भी एक शख़्सियत है, उसका दुनिया में एक विक़ार है। क्योंकि बयान किया जा चुका है कि झूठ की पैदाईश की एक अहम वजह काम्पलेक्स का होना है और हक़ीक़त में इंसान झूठ का सहारा लेकर अपने इस एहसास से झुटकारा हासिल करना चाहता है। अगर झूठ जैसे ख़तरनाक मरीज़ों के अन्दर यह एहसास पैदा हो जाए कि वह भी बहुत सी सलाहियतों के मालिक हैं साथ ही यह कि अपनी इन सलाहियतों के ज़रिए खोई हुई अपनी शख़्सियत, अपना किरदार, अपना विक़ार वापस ला सकते हैं तो वह ख़ुद ही झूठ की बैसाखी का सहारा लेकर आगे बढ़ने की अपनी आदत को ख़त्म कर देंगे। इसके अलावा ऐसे लोगों को यह भी समझाया और यक़ीन दिलाया जाए कि एक ऐसे सच्चे इंसान की समाजी पर्सनालिटी दूसरी तमाम वेल्यूज़ से कहीं ज़्यादा है जिसने अपनी सच्चाई के ज़रिए लोगों का भरोसा पाया है। सच्चे इंसानों के पास पाए जाने वाली 'सोशल पर्सनालिटी' जैसी दौलत का किसी दूसरी दौलत से मुक़ाबला ही नहीं किया जा सकता और अपनी इस दौलत के ज़रिए यह अपने कामों को भी अच्छी तरह पूरा कर सकते हैं।

ऐसा सच्चा इंसान न सिर्फ़ यह कि लोगों की नज़र में एक जगह बना लेता है बल्कि ख़ुदा की

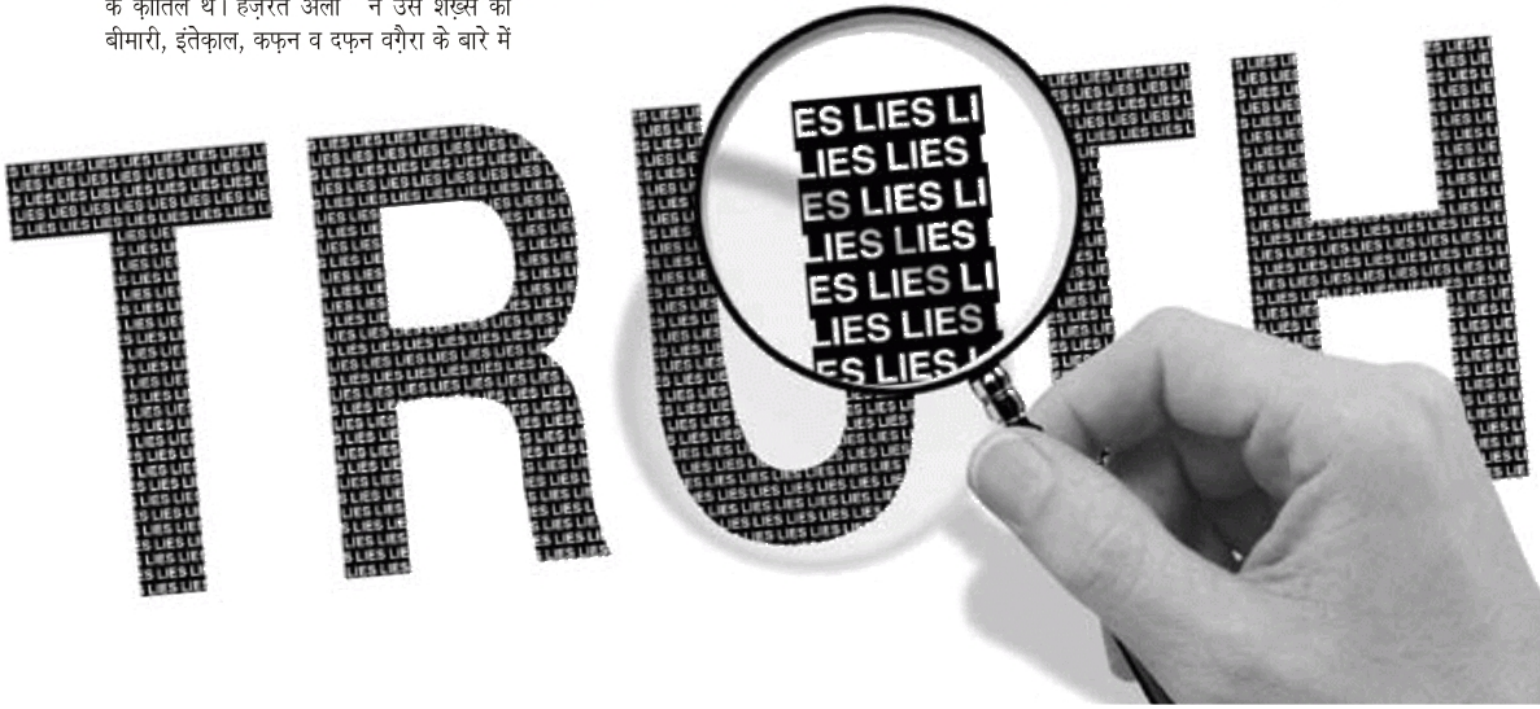

हदीसे रसूल स० और परवरिश

परवरिश दो तरह की होती है:

(1) जिस्मानी परवरिश

(2) रुहानी-ज़ेहनी परवरिश

जिस्मानी परवरिश में पालने-पोसने की बातें आती हैं।

रुहानी-ज़ेहनी परवरिश में अख़लाक़ और कैरेक्टर को अच्छे से अच्छा बनाने की बातें होती हैं।

इसलिए पैरेंट्स की बस यही एक ज़िम्मेदारी नहीं है कि वह अपने बच्चों के लिए सिर्फ़ अच्छा खाने, पीने, पहनने, रहने और सोने की सहूलतों का इंतेज़ाम कर दें बल्कि उनके लिए ये भी ज़रूरी है कि वह खुले दिल से और पूरे खुलूस के साथ बच्चों के दिलो-दिमाग़ में रुहानी और अख़लाक़ी वैल्यूज़ की जौत भी जगाते रहें।

समझदार पैरेंट्स अपने बच्चों पर पूरी संजीदगी से तवज्जो देते हैं। वह अपने बच्चों के लिए रहने सहने की अच्छी सहूलतों के साथ-साथ उनके अच्छे कैरेक्टर, हुयूमन वैलयूज़, अदब-आदाब और रूह की पाकीज़गी के ज़्यादा ख़्वाहिशमन्द होते हैं।

आईए देखें कि रसूले इस्लाम स० इस बारे में हज़रत अली अ० से क्या फ़रमाते हैं। "ऐ अली! ख़ुदा लानत करे उन माँ-बाप पर जो अपने बच्चे की ऐसी बुरी परवरिश करें कि जिसकी वजह से आक करने तक की नौबत आ पहुँचे।"

रसूले ख़ुदा स० ने फ़रमाया है, "अपने बच्चों की अच्छी परवरिश करो क्योंकि तुम से उनके बारे में पूछा जाएगा।"

रसूले ख़ुदा फ़रमाते हैं, "बच्चों के साथ एक जैसा बर्ताव करो। बिल्कुल उसी तरह जैसे तुम चाहते हो कि तुम्हारी नेकी और मेहरबानी के मुक़ाबले में इन्साफ़ से काम लिया जाए।"

रसूले अकरम स० फ़रमाते हैं, "बच्चों के साथ बच्चा बन जाओ।"

रसूले अकरम स० ने फ़रमाया, "बच्चों की परवरिश में सब्र से काम लो और सख़्ती न करो क्योंकि होशियार टीचर, सख़्त मिज़ाज टीचर से बेहतर होता है।"

रसूले ख़ुदा स० एक और जगह फ़रमाते हैं, "बच्चा सात साल तक बादशाह है यानी जो चाहे करे, कोई रोक-टोक नहीं। फिर सात साल तक ग़ुलाम है इसलिए कि अभी उसमें इतनी अक़्ल और समझ नहीं है कि वह अच्छाई या बुराई को समझ सके। इसलिए ना चाहते हुए भी सिर्फ़ बाप के दबाव से वह उसके बताए हुए काम करेगा। ये बिल्कुल उसी तरह है जैसे ग़ुलाम अपने आक़ा का हुक्म मानते हैं। फिर इसके बाद सात साल यानी 14 से 21 साल तक वह वज़ीर है यानी उसमें अब ख़ुद अक़्ल आ गई है और अब वह ख़ुद अपनी समझ का इस्तेमाल करते हुए अपने बाप का हाथ बटाकर ज़िन्दगी की मंज़िलों को तै करेगा। ये वही शान है जो एक बादशाह के वज़ीर की होती है।"

इसी तरह हज़रत अली अ० भी फ़रमाते हैं, "सात साल तक बच्चे को खेलने-कूदने देना चाहिए, फिर सात साल तक उसके अख़लाक़, किरदार और आदातों को सुधारना चाहिए, फिर सात साल तक उस से काम लेना चाहिए।"

बारगाह में भी उसको शहीदों व नबियों का दर्जा मिलता है जिसकी गवाह यह आयत है, "**और जो भी अल्लाह और रसूल स० की इताअत करेगा वह उन लोगों के साथ रहेगा जिन पर ख़ुदा ने नेमतें नाज़िल की हैं। अम्बिया, सिद्दीक़ीन, शोहदा और सालेहीन और यही बेहतरीन रुफ़क़ा हैं।**"

मश्हूर अरबी स्कॉलर राग़िब ने अपनी किताब "मुफ़रदात" में "सिद्दीक़" के कई मायने बयान किए हैं जो सब के सब इसी हक़ीक़त की तरफ़ इशारा करते हैं:-

A- वह शख़्स जो बहुत ज़्यादा सच्चा है।

B- ऐसा शख़्स जो बिल्कुल झूठ नहीं बोलता।

C- ऐसा शख़्स जो अपनी बातचीत और अक़ीदों में सच्चा है और जिसका काम उसकी सच्चाई की गवाही देता है।

(3) कोशिश की जानी चाहिए कि इस बीमारी के शिकार लोगों के ईमान को मज़बूत किया जाए साथ ही उन्हें इस बात का यक़ीन भी दिलाया जाए कि ख़ुदा की क़ुदरत तमाम दूसरी क़ुदरतों और ताक़तों से बढ़कर है। ख़ुदा की क़ुदरत इतनी फैली हुई है कि वह हर तरह की मुश्किलों को हल कर सकता है कि इन्हीं मुश्किलों का हल तलाश करने के लिए कमज़ोर ईमान वाले लोग झूठ का सहारा लेते हैं और सच्चे इंसान मुश्किलों और मुसीबतों का सामना करते वक़्त ख़ुदा पर भरोसा करते हैं जबकि झूठे लोग ऐसे मौक़ों पर सिर्फ़ और सिर्फ़ तन्हा होते हैं यानी वह होते हैं और उनके झूठ।

(4) झूठ की वजहों जैसे लालच, डर, ख़ुदपरस्ती और बहुत ज़्यादा मुहब्बत व नफ़रत वग़ैरा को दूर किया जाना चाहिए ताकि यह ख़तरनाक बुराई इंसान में पैदा न हो सके।

(5) ऐसे लोगों के साथ उठने बैठने से इन लोगों को यक़ीनी तौर पर दूर किया जाना चाहिए जिनके अंदर यह बुराई पाई जाती है। यह मसला इतना अहम है कि इस्लाम के तरबियती सिस्टम में इस पर बहुत ताकीद की गई है। इस बारे में हज़रत अली अ० फ़रमाते हैं,

"झूठ बोलना अच्छी बात नहीं है चाहे संजीदगी में या ग़ैर संजीदगी में और न ही तुम में से कोई अपने बच्चे से कोई वादा करे और उसे पूरा न करे।"

ज़ाहिर है कि अगर माँ-बाप सच बोलने के आदी हों, यहाँ तक कि उन छोटे-छोटे वादों में जो वह अपने बच्चों से करते हैं, तो कभी भी उनके बच्चे झूठ बोलने के आदी नहीं होंगे।

ख़ुदा यह नहीं पूछेगा कि...

ख़ुदा यह नहीं पूछेगा कि तुम्हारे पास कौन सी गाड़ी थी,
वह पूछेगा कि कितने लोगों को अपनी गाड़ी पर बिठाया।

वह यह नहीं पूछेगा कि तुम्हारा घर कितने मीटर का था,
वह पूछेगा कि अपने घर में कितने लोगों को वेलकम किया।

वह यह नहीं पूछेगा कि तुम्हारे पास कितने कपड़े थे,
वह पूछेगा कि तुम ने कितने लोगों को कपड़े पहनाए।

वह यह नहीं पूछेगा कि तुम ने कब सबसे ज़्यादा सेलरी ली थी,
वह यह पूछेगा कि उस सेलरी को लेने के लिए तुम ने अपनी शख़सियत कितनी गिराई थी।

वह यह नहीं पूछेगा कि तुम कौन सा काम करते थे,
वह पूछेगा कि तुम ने अपनी सलाहियत के हिसाब से बेहतरीन काम करने की कितनी कोशिश की।

वह यह नहीं पूछेगा कि किसके पड़ोस में रहते थे,
वह पूछेगा कि तुम ने अपने पड़ोसियों के साथ कैसा बर्ताव किया।

वह आपके स्किन कलर के बारे में नहीं पूछेगा,
बल्कि आपकी पर्सनॉलिटी के बारे में पूछेगा।

آيَةُ الْكُرْسِيّ

आयतुल कुर्सी

■ फ़साहत हुसैन

अहमद बड़ी ग़मगीन हालत में अपनी दादी के बारे में सोच रहा था। पुरानी यादों के साथ-साथ आँसुओं का एक सैलाब उसकी आँखों से जारी था। परदेस में दादी की मौत की ख़बर ने उसे हिलाकर रख दिया था।

काग़ज़ों और फ़ाइलों से भरी हुई डेस्क पर सर रखे हुए वह अपनी दादी को याद कर रहा था और आँसू बहा रहा था। दादी माँ के साथ गुज़ारा हुआ हर पल उनके मुस्कुराते हुए चेहरे के साथ उसकी आँखों के सामने मौजूद था। न तो यादें धुंधली हुई थीं और न ही उनका चेहरा।

दादी माँ उसे बहुत चाहती थीं। वैसे सबकी दादी मोहब्बत करने वाली होती हैं लेकिन अहमद को अपनी दादी की चाहत बहुत ख़ास और अलग दिखाई देती थी। शायद इसकी वजह यह थी कि उसके पापा और अम्मी दोनों सर्विस करते थे और वह घर का इकलौता बेटा था। पापा और अम्मी दोनों सुबह आफ़िस के लिए निकल जाते थे और शाम में लौटकर आते थे। उसे स्कूल के लिए तैयार करना, टिफ़िन देना और स्कूल-बस में बिठाना दादी का ही काम था। स्कूल से लौटने के बाद भी दोपहर का खाना और फिर ट्यूशन-टीचर को नाश्ता देना भी उन्हीं की ज़िम्मेदारी थी।

इस वजह से वह दादी माँ से बहुत क़रीब हो गया था।

वह उन्हें परेशान भी बहुत करता था। कुछ शरारतें सोच कर अहमद बहते हुए आँसुओं के बीच मुस्कुराने लगा।

उसे दादी माँ की झुर्रियों पर हाथ फेरना बहुत अच्छा लगता था। वह जब भी दादी माँ को सोते हुए या कोई काम करते हुए देखता था तो उनके चेहरे और हाथ की झुर्रियों को छूता और उन पर हाथ फेरता था। दादी माँ गुस्से से चिल्लातीं 'अभी तुझे बताती हूँ' और जैसे ही वह यह कहने के लिए अपना मुँह खोलतीं तो वह बहुत संजीदा होकर कहता ''अरे यह क्या! आपके मुँह में तो दाँत भी नहीं हैं। आप ज़रूर रात में मिठाई खाती होंगी और ब्रश किए बग़ैर सो जाती होंगी और इसीलिए चूहे रात में आकर आपके दाँत ले गए हैं।'' यह सुनकर तो दादी अपनी लाठी उठा लेती थीं। तब वह उन से कहता था कि आप मुझे बता दीजिए कि आप ने किस तरह अपनी खाल ऐसे बना ली है ताकि मैं भी अपनी खाल इसी तरह कर लूँ। फिर आपको परेशान नहीं करूँगा। यह कहते-कहते वह भाग कर दूर निकल जाता और दादी थोड़ी दूर लाठी उठाकर चलने के बाद खड़ी हो जाती थीं और कहती थीं, ''अब जब मेरे पास आओगे तो बताऊँगी।''

लेकिन वह जानता था कि दादी माँ सच में गुस्सा नहीं करती हैं बल्कि शायद उन्हें यह अच्छा भी लगता है। इसीलिए तो बाद में कुछ भी नहीं कहती थीं।

दादी माँ की सबसे ख़ास बात यह थी कि वह सबको बीमारी में क़ुरआन की आयतें लिख कर देती थीं। वह किसी भी बीमार को ख़ाली हाथ वापस नहीं जाने देती थीं और उसे कुछ न कुछ दे देती थीं। लेकिन इससे भी ज़्यादा ख़ास बात यह थी कि उन्हें जिन बीमारियों का नाम भी नहीं मालूम था बल्कि वह नई-नई बीमारियाँ जिनका नाम सुनने के बाद भी उसे दोहरा नहीं पाती थीं वह उन बीमारियों के लिए भी कोई न कोई आयत ढूँढकर दे ही देती थीं।

इसी के साथ उसे अपनी एक शरारत भी याद आ गई। उसे खेल में चोट लग गई थी और वह दवा लेने के लिए बाहर जा रहा था। तभी दरवाज़े पर रुक कर उसने कहा, ''दादी माँ आप अपने मेडिकल स्टोर से कोई दवा दे दीजिए ना।''

''मेरा कौन सा मेडिकल स्टोर है'' दादी माँ ने अपना चश्मा सही करते हुए कहा।

''अरे वही जिस से आप सबको दवाएं देती हैं।'' दादी माँ समझ गई थीं और फिर तो देखने वाला मंज़र था कि उन्होंने किस तेज़ी से उठकर अपनी लाठी उठाई थी। ''आज बताती हूँ तुझे'' और कुछ देर के बाद वह उसके सर पर लाठी

उठाए हुए थीं और वह आगे-आगे कान पकड़े हुए चल रहा था। क़ुरआन के पास पहुँचने के बाद उन्होंने कहा, ''चलो इसे चूमो'' और उसने चूमने से पहले कनखियों से दादी माँ को देखा और जल्दी से डर कर क़ुरआन को चूम लिया। ''अब कभी ऐसी बात न सुनूँ'' जी दादी माँ कह कर वह तेज़ी से बाहर निकल गया। शायद ज़िंदगी में पहली और आख़िरी बार दादी माँ सच में ग़ुस्सा हुई थीं और उसे भी पहली बार उन से डर लगा था।

दवा लाने के बाद फिर वही अहमद था और उसकी वही चाहने वाली दादी।

दादी माँ ने ही उसे क़ुरआन पढ़ना सिखाया था और सूरए *हम्द, इन्ना आतैना* और *क़ुल हुवल्लाह* याद कराने के बाद आयतलकुर्सी भी याद कराई थी।

यह सोच कर उस ने डेस्क पर रखा हुआ क़ुरआन खोल लिया और आयतलकुर्सी निकाल कर पढ़ने लगा।

''अल्लाहू ला-इला-ह इल्ला हु-व'' अल्लाह के अलावा कोई ऐसा नहीं है जिसकी इबादत की जाए और जिसे खुदा माना जाए। इसका तो पहला ही जुमला बहुत ख़ास है। अगर इस जुमले को फैला दिया जाए तो पूरा इस्लाम बन जाए और अगर पूरे इस्लाम को समेट कर एक जुमले में बयान करना चाहें तो यही जुमला पेश किया जा सकता है क्योंकि इस्लाम के हर अक़ीदे और अमल की बुनियाद यही तौहीद यानी एक खुदा को मानना और उस पर ईमान लाना है।

तौहीद का मतलब सिर्फ़ यह नहीं है कि खुदा दो नहीं है, एक है बल्कि इसका मतलब यह है कि हमारा ख़ालिक़ और मालिक और इस दुनिया को चलाने वाला जिसके हाथ में सब कुछ है वह सिर्फ़ खुदा है। खुदा की तरफ़ से आने वाले हर नबी और मासूम इमामों ने यही पैग़ाम पहुँचाया है।

''अल-हय-युल क़ैय-यूम'' वह ज़िंदा है लेकिन दूसरों की तरह से नहीं यानी दूसरी ज़िंदा मख़लूक़ की ज़िंदगी अपनी नहीं है बल्कि उन्हें यह ज़िंदगी खुदा ने दी है और वह अपनी ज़िंदगी बाक़ी रखने के लिए भी खुदा की मोहताज हैं। लेकिन खुदा ऐसा नहीं है क्योंकि वह किसी का मोहताज नहीं है और सबको उसकी ज़रूरत है और वही सबको बाक़ी रखे हुए है।

''ला ताख़ुज़ु-हू सि-न-तुँ वला नौम'' न तो उसे ऊँघ आती है और न ही नींद। हर ज़िंदा मख़लूक़ को ऊँघ और नींद आती है जिसकी वजह से वह हर वक़्त काम नहीं कर सकते हैं लेकिन जो पूरी दुनिया का चलाने वाला हो उसे तो ऐसा ही होना चाहिए कि उसे ऊँघ और नींद भी न आए वरना यह दुनिया ख़त्म हो जाएगी।

और इसका मतलब यह है कि वह दोपहर का शोर-शराबा हो या रात का सन्नाटा; खुदा को किसी भी वक़्त पुकारा जा सकता है और उस से हर वक़्त बात की जा सकती है।

''लहू मा फ़िस्समा-वाति वमा फ़िल अर्ज़'' ज़मीन और आसमान में जो कुछ है वह खुदा का है। यह भी बहुत अहम जुमला है क्योंकि अगर हम दिल से मान लें कि ज़मीन और आसमान में जो कुछ है वह खुदा का ही है तो, हम में दुनिया की हर चीज़ के बारे में अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास हो जाएगा क्योंकि यह चीज़ें हमारी या हमारे जैसे दूसरों की नहीं बल्कि असल में खुदा की हैं।

हम हर काम और हर चीज़ के बारे में खुदा पर भरोसा करना सीख जाएंगे।

हमें इस बात का भी एहसास हो जाएगा कि हम भी खुदा के लिए ही हैं और उसी के बंदे हैं।

''मन ज़ल-लज़ी यश्-फ़उ इन्दहू इल्ला बि-इज़्-निही'' उसकी इजाज़त के बग़ैर कोई शिफ़ाअत नहीं कर सकता। इसका मतलब यह है कि शिफ़ाअत ''पार्टी बाज़ी'' नहीं है। शिफ़ाअत का मतलब है मीडियम बनना। अम्बिया और इमाम इन्सानों तक खुदा का पैग़ाम पहुँचाने का ज़रिया हैं और इस तरह वह इस दुनिया में इन्सानों की शिफ़ाअत करते हैं। इस पैग़ाम पर अमल करने में जो लोग ग़लतियाँ कर देते हैं अम्बिया और इमाम खुदा के सामने उनकी शिफ़ाअत करेंगे।

शिफ़ाअत, शिफ़ाअत करने वाले और शिफ़ाअत होने वाले को एक-दूसरे से नज़दीक करती है और इस तरह यह शिफ़ाअत होने वाले की तरबियत का एक ज़रिया है।

''यअ्-लमु मा बै-न ऐ-दी-हिम वमा ख़ल-फ़-हुम'' आम तौर से शिफ़ाअत करने वाले जिसकी शिफ़ाअत करते हैं उसके बारे में कोई नई बात पेश कर देते हैं लेकिन खुदा के सामने ऐसा कुछ नहीं हो सकता है क्योंकि वह शिफ़ाअत करने वालों के बारे में भी जानता है और जिनकी शिफ़ाअत की जा रही है उनके बारे में भी।

''वला युहीतू-न बि-शै-इम मिन इल्मिहि इल्ला बिमा शा-अ'' खुदा जिन बातों को जानता है वह उन बातों को नहीं जानते हैं मगर कुछ चीज़ें ऐसी हैं जो खुदा उन्हें बता देता है। शिफ़ाअत करने वालों का इल्म भी लिमिटेड है और उनके पास जो कुछ भी इल्म है वह खुदा का ही दिया हुआ है।

''वसि-अ कुर-सि-य्यु हुस-समा-वा-ति वल अर्ज़'' ज़मीन और आसमान पर खुदा का कंट्रोल है। इस दुनिया की कोई भी चीज़ उसके इल्म, उसकी ताक़त और कंट्रोल से बाहर नहीं है।

''वला यऊ-दुहु हिफ़्ज़ु-हुमा'' वह इस ज़मीन और आसमान की हिफ़ाज़त करने से थकता भी नहीं है। बहुत से बड़े-बड़े काम करने वाले थक जाते हैं लेकिन ज़मीन और आसमान को बनाने और उन्हें बाक़ी रखने वाला खुदा कभी नहीं थकता।

''व-हुवल अलिय्युल अज़ीम'' हाँ! ऐसा खुदा बहुत बुलंद और अज़ीम है।

अब अहमद सोच रहा था कि आयतल कुर्सी तो बहुत अहम आयत है जिसमें बहुत कुछ बयान किया गया है। इसी वजह से रिवायतों में इसकी इतनी फ़ज़ीलत और अहमियत बयान की गई है और इसे हर रोज़ पढ़ने के लिए कहा गया है।

यह सोचते हुए फिर अहमद को दादी माँ की याद आ गई जिन्होंने उसे आयतल कुर्सी याद कराई थी और उसने दिल ही दिल में उनका शुक्रिया अदा किया। फिर नम आँखों के साथ इसका सवाब उन्हें बख़्श दिया कि शायद इस तरह उनकी मोहब्बतों और मेहनतों का कुछ हक़ अदा हो सके। ●

अगला क़दम

■ इंजीनियर हसन रज़ा नक़वी

जब यह मैगज़ीन आपके सामने आएगी तो सारे ही इम्तेहान लगभग ख़त्म हो रहे होंगे और दसवीं के बच्चे ग्यारहवीं की तैयारी में होंगे। बारहवीं के बच्चे Career-Oriented Courses की तलाश में और ग्रेजुएशन वाले Master's Degree या नौकरियों की तलाश में निकल पड़ेंगे।

अब जबकि ज़्यादातर स्कूल बारहवीं तक के हो गए हैं तो दसवीं वाले तो एक सीढ़ी आगे खुद ही बढ़ जाएंगे। हाँ! बारहवीं के बच्चे ज़रूर थोड़े Confused होंगे। ज़्यादातर Competitions बारहवीं के बाद ही होते हैं और इसमें कई बातें बहुत मुश्किल भी हैं और फ़ैसलाकुन भी...इस इशू में इन्हीं बातों का ज़िक्र कर लेते हैं।

चाहे Science के बच्चे हों या Commerce वग़ैरा के इस वक़्त में उनका रिज़ल्ट बहुत अहम है। एक Percent से भी बात कहीं की कहीं पहुँच सकती है। कई Colleges ऐसे हैं जहाँ Cut-off पर Admissions तय होते हैं यानी Merit के हिसाब से। जैसे किसी अच्छे कालेज को सौ बच्चे लेने हैं तो सारी Applications में शुरु के सौ बच्चे ले लिए जाते हैं। यानी पहला Admission अगर 98% पर हुआ तो आख़िरी 94% पर आकर रुक गया। एक हल्का सा चांस यह होता है कि उनमें से कुछ बच्चे अगर छोड़ गए तो Second list में एक दो Percent नीचे वाले Adjust हो जाते हैं। जितना बड़ा कालेज होगा उतनी ज़्यादा Cut-off जाती है। मगर बड़े कालेज के बहुत से फ़ायदे भी हैं जिसमें सबसे बड़ा फ़ायदा तो यही है कि सारी बड़ी-बड़ी Companies की नज़र ऐसे ही Colleges पर टिकी होती है और थोड़े कम भी हुए तो भी वह लोग Select कर लेते हैं। दूसरी बात वही है जो कई बार दोहराई जा चुकी है कि पढ़ाई से ज़्यादा Personality का होना ज़रूरी है। इसका यह मतलब नहीं कि छः फ़ुट लम्बा या दो फ़ुट मोटा होना चाहिए बल्कि बोलने का अंदाज़, लिबास, Hair Style, अंग्रेज़ी और हाज़िर जवाबी, एक इन्सान की Personality बनाते हैं। सिर्फ़ अंग्रेज़ी की क़सम नहीं है बल्कि Language पर Command होना चाहिए। जो कहिए Confidence से कहिए और ऐसे कहिए कि आप जो कहना चाह रहे हैं वह आपकी ज़बान से लेकर पूरे जिस्म से अदा हो जाए क्योंकि यह सारे Campus Selections कहलाते हैं जो इम्तेहान के पहले हो जाते हैं। बहरहाल...

दूसरे तरीक़े के Admissions बहुत सारी Universities और Colleges में Competition से होते हैं। यह भी आसाना नहीं है क्योंकि 45% से 50% तक के Marks लाने वाले भी इन Compitetions में बैठ सकते हैं और Seats सिर्फ़ पचास या सौ होती हैं या हद से हद दो सौ होती हैं। अब जहाँ पाँच हज़ार या दस हज़ार बच्चे बैठे उनमें हर सौ बच्चों में से अगर एक ही लिया जाना है तो सोचें कितना सख़्त मुक़ाबला है!

मक़सद यह है कि दोनों Admissions आप से पढ़ाई माँग रहे हैं और वह भी रटाई के साथ नहीं बल्कि समझ कर। इसीलिए कहा जाता है कि साल में कम से कम 300 दिन तो ज़रूर दो घंटा पढ़ाई और एक घंटा लिखाई की Practice ज़रूरी है। वरना यह जान लें कि हर साल हर इम्तेहान में अगर 100 बच्चे बैठते हैं तो 70 का पढ़ाई का

सिलसिला रुक जाता है या बेकार हो जाता है और जब अक़्ल आती है तो बहुत देर हो चुकी होती है। पढ़ा-लिखा आदमी अगर बेकार हो या परेशान हो तो वह मुल्क और क़ौम के लिए ज़्यादा ख़तरनाक है उसके मुक़ाबले जो जाहिल या कम पढ़ा-लिखा है...।

आपकी Percentage तो तब Decide होगी जब Result सामने आएगा। तब तक यहाँ के System की (अजूबा System की) वजह से सारे Tests और Admissions के forms निकल चुके होंगे क्योंकि वह सब अप्रैल के गुज़रने से पहले बंद हो जाते हैं। इसलिए ज़रूरी है कि सारे Forms की ख़बर ली जाए और Date निकलने से पहले पहुँचा कर रसीद ले ली जाए। वरना अच्छी भली ज़िंदगी का Direction बदल भी सकता है और बिगड़ भी सकता है। और सिर्फ़ Forms भरना ज़रूरी नहीं है बल्कि कई बातें ध्यान में रखी जाएं। कुछ का ज़िक्र अभी कर लेते हैं और बाक़ी का अगली बार. ...इन्शाअल्लाह!

फ़ार्म कहाँ-कहाँ भरे जाएं? आप हर जगह का फ़ार्म लेकर भरिए। कुछ पैसा जाएगा मगर Admission तो मिल जाएगा। हो सकता है कि हल्का कालेज हो मगर आपको कालेज मिल गया तो अब से होशियार हो जाइए और मेहनत कीजिए। अच्छे Students कहीं के भी हों उनकी मेहनत ख़राब नहीं होती। दूसरा तरीक़ा Competitions हैं। आप सारे Competitions दें। आपका Qualifying Exam हर Competition के लिए वही रहेगा यानी आप PMT, Engg. या B.A., B.Com.के Test की तैयारी कर रहे हैं तो बारहवीं में जो पढ़ा है सवाल उस में से ही आएंगे, कहीं बाहर से नहीं आएंगे तो आप "एक" तैयारी करके "सारे" Test दीजिए।

आमतौर पर अलग-अलग दिन आदमी का Temperament अलग होता है। कभी-कभी सारी चीज़ें आदमी नहीं पढ़ पाता। हो सकता है कि किसी एक जगह दोनों चीज़ें Click कर जाएं यानी आपका Temprament भी अच्छा था और जो पढ़ा था वही आ भी गया। पता चला कि आप दस जगह बैठे नौ जगह Select नहीं हुए और एक ही जगह हो पाए, जहां Select हो गए हैं उसे Join कर लीजिए।

यह ख़ास ध्यान रखिए कि किसी भी हाल में Private Colleges से कहीं अच्छे Universities और Govt. Colleges होते हैं जहां पढ़ाई भी अच्छी होती है और फ़ीस भी बहुत कम होती है। Hostels भी बहुत सस्ते होते हैं और Selections भी बहुत मुश्किल नहीं होते। बच्चे Competitions से घबराते ज़्यादा हैं। सारे Private Colleges भी ख़राब नहीं होते, कुछ तो International Standard के हैं मगर उनकी फ़ीस हर आदमी नहीं दे सकता। अब यह एक अलग सदमा है कि हमारी क़ौम के पास हर चीज़ के लिए पैसा है मगर किसी ग़रीब बच्चे का अगर अच्छा Admission हो रहा है और उसके पास फ़ीस के पैसे नहीं तो यह बात बहुत ही कम लोग सुन पाते हैं। जबकि यह कहता चलूँ कि ज़रूरी नहीं कि आप 50,000-/ में से दस हज़ार दे दें। हम में से पाँच सौ लोग सौ-सौ रुपया दे दें तो न जाने हमारी क़ौम के कितने बच्चे Higher Education हासिल कर सकते हैं और इस से आगे यह भी कह दिया जाए कि हर महल्ले में कम से कम ऐसे दस लोग ज़रूर होते हैं जो साल में एक बार किसी को पढ़ाने के लिए एक हज़ार रुपया दे सकते हैं। अब आप Calculate करते रहें कि एक शहर में हम अपने कितने बच्चे पढ़ा सकते हैं। हम हर चीज़ का चंदा खुद देते हैं मगर पढ़ाई के लिए कुछ लोगों के नाम बताकर पीछे हट जाते हैं। मेरे अपने ख़याल में बच्चे को पढ़ाने के लिए मजबूर पैरेंट्स किसी से माँगें तो वह भीक नहीं होती बल्कि जो 'शहरे इल्म' से जुड़ा हुआ है उसका फ़र्ज़ है कि वह दे। अगर क़ौम में कोई बड़ा आदमी बन जाए तो सब उस से लेने का हक़ तो रखते हैं न दे तो बुरा कहते हैं और बड़ा आदमी बनाने के लिए उसे देने का हक़ नहीं समझते कि न दें तो हम बुरे हैं।

बहरहाल यह सब लिखा और पढ़ा तो जा सकता है मगर हक़ीक़त में बदल जाए इसके लिए अली[अ०] जैसी ज़बान चाहिए या फिर हुसैन[अ०] जैसा दिल....और कुछ उनके मक़सद को समझने वाले!!

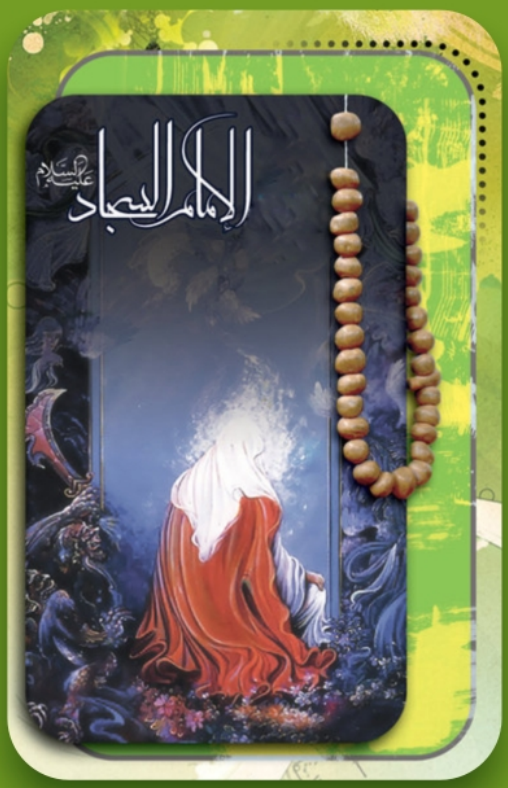

इमाम सज्जाद अ० की इबादत

■ सै. ज़फ़र अब्बास
वसीक़ा अरबी कालेज, फ़ैज़ाबाद

सईद बिन कुलसूम कहते हैं कि मैं इमाम सादिक़अ० के पास बैठा था। आपने हज़रत अलीअ० की इबादत के बारे में बताया। इसके बाद आपने कहा, "आले मोहम्मदअ० में हज़रत अलीअ० के बाद सबसे ज़्यादा इबादत करने वाले इमाम ज़ैनुल आबेदीनअ० हैं।"

इमाम मोहम्मद बाक़िरअ० ने फ़रमाया, "हज़रत अलीअ० की बेटी फ़ातिमा ने इमाम ज़ैनुल आबेदीनअ० को देखा कि बहुत ज़्यादा इबादत करने की वजह से थक गए हैं। जाबिर अंसारी के पास गईं और उन से कहा, "ऐ रसूलस० के सहाबी! हमारा आप पर हक़ है कि अगर हम में से कोई ज़्यादा इबादत करने की वजह से मौत के क़रीब पहुँच जाए तो आप उस से कहें कि वह अपनी सलामती का ख़याल रखे।" अली बिन हुसैनअ० (इमाम ज़ैनुल आबेदीनअ०) जो अपने नाना की यादगार हैं, उनकी पेशानी और घुटनों पर गट्टे पड़ गए हैं। आईए! उन से बात कीजिए। जाबिर इमाम ज़ैनुलआबेदीनअ० के पास पहुँचे और देखा कि आप इबादत कर रहे हैं। इमामअ० ने जैसे ही जाबिर को देखा, खड़े हो गए और उन्हें अपने पास बिठाया। जाबिर ने कहा, "ऐ रसूलस० के बेटे! आपको मालूम है कि ख़ुदा ने जन्नत को आप और आपके चाहने वालों के लिए पैदा किया है। फिर आप अपने आपको इबादत के लिए इतनी तकलीफ़ में क्यों डालते हैं?" इमामअ० ने कहा, "ऐ रसूलस० के सहाबी! क्या आपको नहीं मालूम कि मेरे जद रसूले ख़ुदास० कितनी इबादत करते थे? उनके पैरों पर वरम आ जाता था और इबादत के बारे में टोकने वालों से कहते थे, क्या मैं ख़ुदा का शुक्रगुज़ार बंदा न बनूँ।" जब जाबिर ने देखा कि इमाम ज़ैनुलआबेदीनअ० पर आपकी बातों का कोई असर नहीं हो रहा है तो कहा, "ऐ रसूलस० के बेटे! अपनी जान की सलामती का तो ख़याल रखिए क्योंकि आप ऐसे घराने से हैं जिसकी वजह से ज़मीन वालों से बलाएं दूर होती हैं।" इमाम ज़ैनुलआबेदीनअ० ने कहा, "ऐ जाबिर! जब तक मैं ज़िंदा रहूँगा इसी तरह इबादरत करता रहूँगा।"

इमाम ज़ैनुलआबेदीनअ० के बेटे अब्दुल्लाह कहते हैं, "मेरे बाबा रातों को इतनी नमाज़ें पढ़ते थे कि थक जाते थे और बच्चों की तरह ज़मीन पर खिसक-खिसक कर बिस्तर तक जाते थे।

इमामअ० का अख़लाक़

इमाम ज़ैनुलआबेदीनअ० के रिश्तेदारों में से एक शख़्स आपके पास आया और बुरा-भला कहने लगा लेकिन आप ख़ामोश रहे। जब वह चला गया तो इमामअ० ने अपने साथियों से कहा, "तुम लोगों ने सुन लिया कि उस ने क्या कहा है? अब तुम लोग मेरे साथ चलो और मेरा भी जवाब सुन लो।" इमामअ० रास्ते में इस आयत को पढ़ते हुए जा रहे थे, "जो लोग ग़ुस्से को पी जाते हैं और लोगों को माफ़ कर देते हैं और एहसान करते हैं और अल्लाह एहसान करने वालों को दोस्ता रखता है।" साथियों ने समझ लिया कि इमाम उसे कोई तकलीफ़ नहीं पहुँचाएंगे। जब उसके घर पहुँचे तो इमामअ० ने उसके नौकर से कहा, "अपने मालिक से कह दो कि अली बिन हुसैन तुम्हें बुला रहे हैं।" जब उस शख़्स ने सुना कि इमामअ० उसके पास आए हैं तो उसने दिल में कहा कि ज़रूर इमामअ० मेरे किए की सज़ा देंगे और उसका बदला लेंगे। उसने ख़ुद को मुक़ाबले के लिए तैयार कर लिया लेकिन जब बाहर आया तो इमामअ० ने कहा, "तुम ने अभी कुछ देर पहले मेरे बारे में कुछ बातें कही थीं? अगर यह बातें मेरे अंदर हैं तो ख़ुदा मुझे माफ़ करे और अगर मेरे अंदर नहीं हैं तो ख़ुदा तुम्हें माफ़ करे।"

उस शख़्स ने जब यह सुना तो बहुत शर्मिंदा हुआ, माफ़ी माँगने लगा और कहा कि मैंने जो कुछ कहा है वह ग़लत कहा है। आप ऐसी बातों से पाक हैं। हाँ! मेरे अंदर यह बातें ज़रूर मौजूद हैं।

फ़क़ीरों के साथ अच्छा अख़लाक़

इमाम ज़ैनलआबेदीनअ० रोटियों और खाने से भरे हुए थैले फ़क़ीरों और ग़रीबों में ले जाकर बांटते थे और कहते थे कि सदक़ा अल्लाह के ग़ुस्से की आग को बुझा देता है।

अम्र बिन दीनार का बयान है कि ज़ैद बिन उसामा अपनी मौत के वक़्त रोने लगे। इमाम ज़ैनुलआबेदीनअ० वहाँ मौजूद थे। आपने रोने की वजह पूछी तो ज़ैद बिन उसामा ने कहा, "मेरे ऊपर पन्द्रह हज़ार दीनार का क़र्ज़ है और मैं उसको अदा नहीं कर सकता। मुझे इस बात का डर है कि कहीं मुझे मौत न आ जाए और मेरे ऊपर क़र्ज़ का बोझ रह जाए।" इमामअ० ने कहा, "तुम परेशान न हो! तुम्हारा क़र्ज़ मैं अदा कर दूँगा।"

ज़ोहरी का बयान है कि मैंने ठंडक की एक रात में जब बारिश हो रही थी, इमाम ज़ैनुलआबेदीनअ० को देखा कि आपने अपनी पीठ पर आटा लाद रखा था। मैंने कहा कि ऐ रसूलस० के बेटे! आपकी पीठ पर क्या है? आपने कहा, "सफ़र पर जा रहा हूं।" मैंने कहा, "अगर आप कहें तो मेरा ग़ुलाम आपके बोझ को उठाकर पहुँचा देगा।" आपने कहा, "नहीं"। मैंने कहा, "अच्छा अगर कहें तो मैं ख़ुद ही आपकी मदद कर दूँ।" आपने फ़रमाया, "मुझे ख़ुद यह बोझ उठाकर पहुँचाना चाहिए। तुम्हें ख़ुदा का वास्ता! मेरा पीछा छोड़ दो और अपना काम करो।" मैंने कुछ दिनों के बाद इमामअ० को देखा कि आप अभी तक सफ़र पर नहीं गए हैं। मैंने कहा, "आपअ० अभी तक सफ़र पर नहीं गए?" आपने फ़रमाया, "ऐ ज़ोहरी! वह सफ़र वह नहीं था जो तुम समझ रहे हो बल्कि वह आख़िरत का सफ़र था। मैं अपने को उसके लिए तैयार कर रहा हूँ। मौत की तैयारी दो तरीक़े से होती है: हराम काम से बचने से और अच्छे काम में माल ख़र्च करने से।" ●

एहसान

هَلْ جَزَاءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ (الرحمٰن: ٦٠)

■ डा. हिना बानो तबातबाई

एहसान इन्सानी समाज में बहुत कॉमन लफ़्ज़ है। एक ग़ैर मुस्लिम भी एहसान को अच्छी तरह जानता है। बस फ़र्क़ यह है कि जो एहसान का लफ़्ज़ हमारे समाज में इस्तेमाल होता है वह क़ुरआन वाला एहसान नहीं है क्योंकि एहसान अरबी ज़बान का लफ़्ज़ है जो 'अहसन' से बना है और अहसन के मायने अच्छा, ख़ूब, बेहतरीन होते हैं।

अच्छा अमल भी हो सकता है ज़ात भी। अगर अमल है और अपने लिए है तो अहसन यानी अच्छा अमल है। अगर यही अहसन अमल दूसरे के लिए है तो क़ुरआन की नज़र में यह एहसान है जैसे नमाज़ पढ़ना अहसन अमल है और किसी को नमाज़ पढ़ाना एहसान है।

इस एहसान लफ़्ज़ को क़ुरआन में कई जगहों पर समझाया गया है। सूरए रहमान में है, *''हल जज़ाउल एहसान इल्लल एहसान''* यानी एहसान का बदला एहसान है। कहीं यह नहीं मिलता कि बड़े एहसान का बदला बड़ा एहसान है और छोटे एहसान का बदला छोटा एहसान है। यह बड़ा और छोटा एहसान इन्सान के मिज़ाज में पाया जाता है यह इस्लाम का नज़रिया नहीं है। हमारे समाज में तो एहसान का कांसेप्ट ही कुछ और है। यहाँ किसी के नेक अमल को माल व दौलत की तराज़ू में तौलते हैं। यहाँ वही अमल एहसान माना जाता है जिसमें बहुत ज़्यादा मेहनत, परेशानी और ज़हमत उठायी गई हो या मालो दौलत ख़र्च किया गया हो। यह है इन्सान की नज़र में एहसान मगर इस्लाम जिस एहसान की बात करता है वह बिना मेहनत व ज़हमत और दौलत के एक पलक के इशारे में किया जा सकता है।

इस्लाम में सलाम करना एहसान है और क्योंकि एहसान का बदला एहसान है इसलिए सलाम का जवाब वाजिब है यानी तुम भी उसे सलामती की दुआ दो। (*हल जज़ाउल एहसान*)

इस एहसान लफ़्ज़ के बहुत से पहलू हैं जिन पर मुकम्मल बहस एक आर्टिकल में नामुमकिन है, इस जगह इस सब्जेक्ट पर सिर्फ़ हेडलाइंस ही दी जा रही हैं। आइन्दा इस बारे में तफ़सीली बात करेंगे।

1- अल्लाह ने एहसान जताने को सख़्ती से मना किया है क्योंकि एहसान जताने से एहसान का सवाब चला जाता है जो कि हमारे समाज में आम है। इस सिलसिले में हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं, ''जब तुम किसी के साथ एहसान करो तो उसे भूल जाओ लेकिन जब दूसरा तुम्हारे साथ एहसान करे तो उसे हमेशा याद रखो।''

और इस तरह एहसान और एहसान करने वाले दोनों को ज़िंदा रखो, न तुम्हारा अमल बर्बाद हो न दूसरे का।

2- अल्लाह की नज़र में एहसान को भूल जाना गुनाहे कबीरा है। रसूले इस्लाम[स०] फ़रमाते हैं, ''एहसान को भूलने वाला मलऊन है जो लोगों पर नेकियों के दरवाज़े को बंद करता है।'' जब एहसान को भुला दिया जाता है तो इन्सान एहसान करने से हाथ खींच लेता है क्योंकि वह चाहता है कि उसका अहसन अमल याद रखा जाए। बेहतर तो यह है कि एहसान का बदला भी एहसान ही से दिया जाए।

3- अल्लाह ने लालच और ग़रज़ की ख़्वाहिश में एहसान करने की मनाही की है। ऐसा भी अक्सर देखा गया है कि ज़बरदस्ती किसी के साथ एहसान किया जा रहा है क्योंकि कल हमें उस शख़्स से अपना कोई बड़ा काम लेना है। अल्लाह तो इरादे को जानता है, उसने ऐसे एहसान को मना किया है। एहसान बिना किसी लालच के होना चाहिए बदला दूसरे पर वाजिब है मगर जितना हो सके उतना।

4- कई मौक़ों पर इस्लाम एक मुसलमान पर एहसान को वाजिब कर देता है चाहे दूसरा ग़ैर मुस्लिम ही क्यों न हो:-

1- वालदैन के साथ एहसान करो चाहे वह काफ़िर ही क्यों न हों।

2- पड़ोसी के साथ एहसान करो चाहे वह काफ़िर ही क्यों न हो।

3- मेहमान के साथ एहसान करो चाहे वह काफ़िर ही क्यों न हों।

4- माँगने वाले के साथ एहसान करो चाहे वह काफ़िर ही क्यों न हो।

इस्लाम में माफ़ कर देना एहसान है।

...सलाम करना एहसान है।

...खाना खिलाना एहसान है।

...मुसाफ़िर को पनाह देना एहसान है।

...परेशान की मदद करना एहसान है।

...मोमिन को ख़ुश करना एहसान है।

...किसी की तारीफ़ करना एहसान है।

...ताज़ियत करना एहसान है।

...मरीज़ों की अयादत करना एहसान है।

...ख़ैरियत पूछना एहसान है।

...बैठने के लिए किसी के लिए जगह बनाना एहसान है।

...किसी के लिए मुस्कुराना एहसान है।

...किसी के ऐब से अकेले में उसे बाख़बर कराना एहसान है।

...इल्म बांटना एहसान है।

...पानी पिलाना भी एहसान है जिसे हमारा समाज एहसान नहीं समझता क्योंकि हमारी नज़र में पानी बहुत छोटी सी चीज़ है जबकि सच यह है कि पानी एक बहुत बड़ी नेमत है जिसे ख़ुदा ने हमारे लिए बेक़ीमत बना दिया है ताकि ग़रीबों को भी आसानी से मिल सके। यह उस रहमानो रहीम

30 की उम्र

मुबशिरा रिज़वी

औरत एक ऐसी शख़सियत है जिसका मुक़ाम अल्लाह ने बहुत बुलंद रखा है। वह इस दुनिया में बहुत से काम अंजाम देती है। सब से ख़ास यह कि वह एक बेटी, बीवी, माँ बनके इन रिश्तों को निभाती है और इन रिश्तों का ज़िंदगी भर ध्यान रखती है। हर औरत का सपना होता है कि वह एक अच्छी बेटी, माँ, बीवी बने और जिसके लिए इन रिश्तों को निभाने की पूरी कोशिश करती है।

टीनेजर्स अपना ध्यान रखती हैं क्योंकि वह एक सपना लेकर आगे बढ़ रही होती हैं वह दूसरों के साथ-साथ अपना भी ख़याल रखती हैं मगर देखा गया है कि जब औरत 30 साल के आगे बढ़ जाती है तो वह अपना ध्यान कम और दूसरों का ज़्यादा रखती है। इस उम्र पर कुछ शादी के लिए सोच रही होती हैं और कुछ शादी-शुदा होती हैं और कुछ बीवी के साथ-साथ एक माँ भी होती है। यह एक औरत के लिए बिज़ी-एज भी कही जा सकती है वह अपने रिश्तों जैसे- पैरेन्ट्स, हज़बेंड और बच्चों के लिए इतनी फ़िक्रमंद होती है कि अपनी सेहत का ध्यान रखना भी भूल जाती है। यह बात सच है कि 30 की उम्र पार करते ही औरत में ब्लड-प्रेशर, पैरों के दर्द, कमर दर्द जैसी परेशानियाँ बढ़ जाती हैं। आईए जानते हैं कि 30 की उम्र पार करने पर हमारे जिस्म में क्या-क्या चेंजेज़ आते हैं।

मेटॉबोलिज़्म का कम होना

30 के बाद औरतों में मेटॉबोलिज़्म कम होने लगता है। इसका मतलब है कि वज़न बढ़ने लगता है जो थकान की वजह बनता है। स्किन पर भी इसका असर दिखाई पड़ता है और बाल गिरने लगते हैं। इसके साथ ही बालों की चमक भी कम हो जाती है।

कैल्शियम की कमी

इस उम्र में कैल्शियम की कमी होने लगती है जिसकी वजह से कई परेशानियाँ होने लगती हैं। विटामिन ई, सी का इस्तेमाल सेहत के लिए अच्छा होता है।

लिपिड प्रोफ़ाइल बिगड़ने का ख़तरा

इस उम्र में लिपिड प्रोफ़ाइल बिगड़ने का ख़तरा होता है जिसकी वजह से थाएराइड, डायबेटीज़ वग़ैरा होने के चांसेज़ बढ़ जाते हैं।

कैंसर का ख़तरा

जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है कैंसर का ख़तरा भी बढ़ जाता है। इसके लिए टेस्ट करवाते रहना चाहिए। अगर कैंसर का पता फ़र्स्ट-स्टेज में लग जाए तो इसका इलाज भी किया जा सकता है जो कैंसर को बढ़ने से रोकेगा।

ध्यान रखें इन बातों का:-

1- खाने में कैल्शियम और विटामिन होने चाहिएं। प्रोटीन के लिए मूँगफली, काजू और किशमिश लेना चाहिए।

2- इस उम्र में खिलाई-पिलाई पर बहुत ध्यान दीजिए। फ्रूट्स और ग्रीन वेजेटेबिल का इस्तेमाल ज़्यादा कीजिए इससे 40 के बाद आराम रहता है और हाइपरटेंशन, डायबेटीज़, दिल की बीमारी से बचा जा सकता है।

3- छः महीने पर हेल्थ चेकअप कराते रहना चाहिए। इससे ब्लड-प्रेशर, शुगर जैसी परेशानियों का पता लगा कर इलाज किया जा सकता है।

4- एक्र्सासाइज़ के ज़रिए मोटापा, एलर्जी वग़ैरा जैसी परेशानी काफ़ी हद तक दूर की जा सकती है।

यह बात सच है कि यह एक बिज़ी-एज है पर थोड़ा सा टाइम अपने लिए भी निकालिए और इन बातों का ध्यान रखिए तो आप हमेशा सेहतमंद रह सकती हैं। स्ट्रेस ज़्यादा मत लीजिए। साथ ही टेंशन लेने से भी कई बीमारियाँ पैदा होती हैं। अगर आप सेहतमंद नहीं होंगी तो आप दूसरों का ध्यान कैसे रखेंगी ?

ख़ुदा का एक अजीब एहसान है। पानी का भी इस्राफ़ ज़ुल्म है, और यह गुनाहे कबीरा भी है। रसूल[स०] फ़रमाते हैं, "अल्लाह तीन गुनाहों की सज़ा देने में देर नहीं लगाता: वालदैन के साथ बदसुलूकी, रिश्तेदारों से नाता तोड़ना या ज़ुल्म और एहसान को भूल जाना।"

हमारे रसूल[स०] और दूसरे 13 मासूमों के किरदार में एहसान की सिफ़त कमाल की हद तक मिलती है। मासूमीन[अ०] ने अपने दुश्मनों के साथ भी एहसान किया है। करबला के रास्ते में हुर के प्यासे लश्कर को सेराब करना एहसान है। इमामे हुसैन[अ०] को मालूम था कि दुश्मन है मगर इन्सान वही है जो इन्सान का दर्द महसूस करे। हुसैन[अ०] ने तारीख़े करबला में इन्सानियत की मेराज पेश की है जो क़यामत तक सारी दुनिया के इन्सानों के लिए एक सबक़ है।

रसूले अकरम[स०] फ़रमाते हैं, "सदक़ा व एहसान के ज़रिए जन्नत हासिल करो।"

एहसान इन्सानियत का ज़ेवर है। अगर एहसान न होता तो इन्सान, इन्सान के क़रीब न होता। यह एहसान की कशिश ही है जो इन्सान को इन्सान के क़रीब लाती है। जो एहसान करने का जज़्बा रखे वह इन्सानियत का कमाल है और जो एहसान करके लुत्फ़ हासिल करे वहाँ इन्सानियत की मेराज है। जो एहसान का बदला न चाहे वह आले मोहम्मद[अ०] का किरदार है जिनका हर अमल क़ुरबतन इलल्लाह होता है। फिर ख़ुदा उनकी शान में आयतें नाज़िल करता है कि यह एहसान में सबक़त करने वाले हैं।

शादी की रस्में

■ फ़रह नाज़
मुम्बई

शादी बहुत सी रस्मों से मिलकर बनती है। उन में से कुछ रस्में ऐसी हैं जिनके बग़ैर शादी नामुमकिन है, कुछ ऐसी हैं जिनको शरीअत ने मुस्तहब बताया है और कुछ रस्में समाज में फैली होने की वजह से अंजाम दी जाती हैं। इन सब रस्मों में से नीचे लिखी रस्में अहम हैं।

1- निकाह

शरीअत ने मर्द और औरत को एक दूसरे के पास आने और जिस्मानी रिश्ता बनाने और एक दूसरे के लिए हलाल होने के लिए निकाह का सिस्टम बनाया है और यही वह शादी का वाजिबी हिस्सा है जिसके बग़ैर इस्लामी समाज में शादी करना बेमाना है। अगर बग़ैर निकाह के दो मुसलमान लड़का-लड़की एक साथ ज़िन्दगी बसर करने लगें तो उनका यह रिश्ता हलाल और जायेज़ नहीं होगा। इसलिए शादी में निकाह का होना ज़रूरी है।

2- मेह्र

शादी का दूसरा अहम और वाजिब हिस्सा मेह्र है। बग़ैर महर के निकाह सही नहीं हो सकता। इसलिए निकाह के वक़्त मेह्र को तय करके इसको बताना चाहिए। बेहतर यह है कि शौहर निकाह के वक़्त ही मेह्र दे दे क्योंकि यह उसके ऊपर उसकी बीवी का वाजिबी हक़ है लेकिन इस रस्म को हमारे समाज में बहुत अनदेखा किया जाता है और इस पर सही से अमल नहीं किया जाता और दूसरी फ़ालतू बल्कि कभी-कभी मकरूह और हराम रस्मों को शादी में जगह दे दी जाती है। शौहर को चाहिए कि मेह्र को वक़्त पर अदा करे, न कि इस फ़िक्र में रहे कि बीवी ख़ुद ही अपने मेह्र को माफ़ कर दे। साथ ही बीवी के लिए बेहतर है कि मेह्र की रक़म को ज़्यादा न रखे।

3- वलीमा

शादी की रौनक़ में जो चीज़ें चार चाँद लगाती हैं वह खाना-पीना है। वलीमा एक मुस्तहब काम है। रिवायतों में दूल्हा के लिए कहा गया है कि वह वलीमे का इंतेज़ाम करे लेकिन लड़की वालों के लिए बस इतना ज़रूरी है कि दूल्हा के साथ जो कुछ लोग आते हैं उनकी मेहमान नवाज़ी अपनी हैसियत के लिहाज़ से करें। लेकिन बड़े अफ़सोस की बात यह है कि यह मुस्तहब काम आजकल शादियों में सर दर्द बन गया है। इस्लाम में वलीमे का मक़सद दूसरों को अपनी ख़ुशी में शरीक करना था और यह काम आसानी और कम से कम ख़र्च में किया जा सकता है लेकिन आजकल की शादियों में दसियों तरह के खाने बनाए जाते हैं जबकि खाने वाला

तीन चीज़ों से ज़्यादा नहीं खाता तो फिर शादियों में खाने पर इतना ख़र्च करने की क्या ज़रूरत है। ऐसा भी नहीं है कि सब अपनी हैसियत के ऐतबार से ऐसे खाने पकवाते हों बल्कि शादियों में ऐसे खानों का एहतेमाम करने वालों में अक्सर ऐसे लोग होते हैं जिनको ऐसा करने के लिए क़र्ज़ लेना पड़ता है। यह ग़ौर करने वाली बात है कि शरीअत ने जिस काम को मुस्तहब कहा है ताकि लोग एक दूसरे की ख़ुशी में शरीक हो सकें, वही काम वलीमा करने वाले की बर्बादी बन जाए। अगर ऐसे इंतेज़ाम के बाद पूरा खाना खा लिया जाए या भूखों के पेट भर जाएं तो भी कुछ सुकून मिल जाए लेकिन आमतौर पर इस खाने की बर्बादी होती है। हमें सोचना चाहिए कि इतना मंहगा खाना और इतनी महनतों से हासिल की गई कमाई कितनी आसानी से बर्बाद हो जाती है। इसलिए इस्लाम ने जहां खाने-पीने का हुक्म दिया है वहीं पर फ़ुज़ूलख़र्ची से बचने का भी हुक्म दिया है और फ़ुज़ूलख़र्ची करना एक बहुत बड़ा गुनाह है। ऐसी शादियाँ जो गुनाह से शुरू होती हैं उनका अन्जाम क्या होगा, हमें सोचना चाहिए!!!

वैसे ऐसा भी नहीं है कि सब लोग यह सब दिल से करते हैं बल्कि ज़्यादा तर यह काम सोसाईटी की वजह से किया जाता है कि लोग क्या कहेंगे?! दूल्हा के घर वाले क्या कहेंगे?! इसलिए हमें चाहिए कि हम अपने समाज से इस फ़िक्र को दूर करें और अगर हम लड़के वाले हों तो लड़की वालों को ऐसा इंतेज़ाम करने से रोकें और अगर हम लड़की वाले हैं तो लड़के वालों को ऐसा करने से रोकें। हमारे समाज के बहुत से लोगों में इस तरह की मेहमान नवाज़ी करने की ताक़त नहीं होती है तो क्या उन्हें शादी करने का हक़ नहीं है? ऐसा नहीं है बल्कि उन्हें भी वैसा ही हक़ हासिल है जैसा बड़े घराने वालों को। इसलिए इस्लाम के साए में ज़िंदगी बसर करने वालों को चाहिए कि वह अपने इस्लामी समाज का लिहाज़ रखें और इसमें आपसी बराबरी को बढ़ावा दें।

4- जहेज़

ख़ुशियों और ख़ास मौक़ों पर एक दूसरे को तोहफ़े देना शरीअत में बुरा काम नहीं है बल्कि यह एक अच्छी चीज़ है यानी इस्लाम में एक दूसरे को तोहफ़े देने की ताकीद भी की गई है। शादी भी एक अहम मौक़ा है। इस मौक़े पर भी तोहफ़े देना अच्छा काम है और हर पैरेंट्स की ख़्वाहिश होती है कि अच्छी से अच्छी चीज़ तोहफ़े में दें। लेकिन इन्सान वैसा ही तोहफ़ा दे सकता है जैसा तोहफ़ा देने की उसके अन्दर ताक़त हो यानी अपनी माली हैसियत को देखते हुए। हैसियत से ज़्यादा तोहफ़ा देना मुसीबत बन जाता है और मुश्किलें खड़ी कर देता है। कुछ ऐसी ही हालत हमारे समाज की शादियों की है जिसमें पैरेंट्स जहेज़ को तोहफ़ा समझकर कम बल्कि समाज ख़ास कर दूल्हा के घर वालों के डर से और उन्हें राज़ी करने के लिए ज़्यादा देते हैं। अगर हम अपनी बेटी को ऐसी चीज़ नहीं देंगे तो हमारी बेटी शायद अपने नए घर में ख़ुशहाल ज़िंदगी नहीं बसर कर पाएगी, कहीं शौहर के घर वाले उसे परेशान न करें और तकलीफ़ न दें, बस यही डर अच्छे से अच्छा जहेज़ देने पर मजबूर कर देता है।

शादी जो दो दिलों को मिलाने का ज़रिया है, लोगों को एक दूसरे की ख़ुशी में शरीक करने का मौक़ा है, लोगों की मेहमान नवाज़ी और दूल्हा को तोहफ़े-तहाएफ़ देकर अपनी बेटी को उसके साथ ख़ुशहाल ज़िंदगी बसर करने के लिए रुख़सत करने का रास्ता है, यह काम बहुत आसानी और कम ख़र्च में भी हो सकता है लेकिन यही काम करना आज के दौर में कितना सख़्त हो गया है और कितने मां-बाप और घर वालों के लिए मुसीबत बन गया है।

इस पाक और पाकीज़ा रास्ते में बहुत सी बिदअतों और ग़लत रस्मों के आ जाने की वजह से आज बहुत से मिडिल क्लास और ग़रीब तबक़े के घराने इस रास्ते पर चलने से डरते हैं क्योंकि उनके अन्दर इतनी हिम्मत नहीं है कि इस कंटीले रास्ते की सख़्तियों को बर्दाशत कर सकें। यही वजह है कि आज हमारी क़ौम में इस तबक़े के बहुत से नौजवान लड़के-लड़कियां शादी से महरूम हैं और तन्हाई की ज़िंदगी बसर करने पर मजबूर हैं।

हमारे नौजवानों को चाहिए कि पहले अपने दिल से जहेज़ जैसी ख़्वाहिश को निकालने की कोशिश करें, फिर अपने मां-बाप को इन चीज़ों की तरफ़ भागने से रोकें और उन्हें राज़ी करें और इस तरह से शादी को आसान बनाएं। इन्सान को अपनी सलाहियतों और ताक़त पर भरोसा होना चाहिए, न कि लड़की वालों की तरफ़ से दिए गए जहेज़ पर। जहेज़ पर सीना फुलाना और इसकी मांग करना तो सरासर निकम्मापन और बेहयाई है। अगर लड़के ख़ुद को और अपने मां-बाप को

राज़ी कर लेते हैं तो यह इस्लामी समाज की एक बहुत बड़ी ख़िदमत होगी जिसका नतीजा यह होगा कि ग़रीब और मिडिल क्लास घराने वाली लड़कियों की शादी आसानी से हो जाएगी और जब समाज में जहेज़ की रस्म की कोई ख़ास अहमियत नहीं होगी तो फिर हर जवान वक़्त पर शादी के बारे में सोच सकेगा और इसके नतीजे में हमारे समाज में ग़ैर शरई तरीक़े से जिस्मानी ताल्लुक़ात बहुत हद तक कम हो जाएंगे।

5- दूसरी रस्में

शादी के दौरान ख़ुशियां हासिल करने के लिए दूसरी और भी बहुत सी रस्में अदा की जाती हैं। शादी में ख़ुशी मनाना अच्छा काम है लेकिन ऐसे मौक़े पर जिस बात की तरफ़ ध्यान देना बहुत ज़रूरी है वह यह है कि ख़ुशियां किन रास्तों से हासिल की जा रही हैं?!!! शादी में रस्मों को अदा करने में कोई हरज नहीं है लेकिन इस बात का ख़्याल होना चाहिए कि कहीं हम किसी रस्म को अदा करने में ग़ैर इस्लामी और ग़ैर शरई काम तो नहीं कर रहे हैं?!!! अगर इन रस्मों को अन्जाम देने में हराम से गुज़रना पड़े जैसे नामहरमों को देखना, नामहरमों से मिलना या उन्हें छूना पड़े या किसी और तरीक़े का गुनाह अन्जाम देना पड़े तो हमें ऐसी रस्मों से बचना चाहिए बल्कि बचना वाजिब है।

धूमधान से शादी करने की ख़ातिर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम मुसलमान हैं और अगर हम मुसलमान हैं तो इस्लाम ने हमें कुछ चीज़ों से रोका है। मुसलमान होने के नाते इन चीज़ों से बचना ज़रूरी है। जैसे आजकल हमारे समाज में शादी के घर में धूमधाम दिखाने के लिए म्यूज़िक और गाना-बजाना शुरू कर दिया जाता है। लोग सोचते हैं कि इसके बिना शादी का घर, शादी का घर नहीं लगता। ज़रा सोचिए! क्या वाक़ई गाने से ही शादी का एहसास होता है?!!! क्या कोई गुनाह या हराम काम किसी हलाल काम की रौनक़ बन सकता है?!!! अगर नहीं तो हमें ऐसे काम से बचना चाहिए और अगर हां तो हमें चाहिए कि हम अपने दीन, मज़हब, अक़ीदे और ईमान पर दोबारा नज़र डालें कि कहीं हम ख़ुदा की इताअत के बदले शैतान के ग़ुलाम तो नहीं बन गए हैं?! ●

नुजूमी

■ शहीद मुतह्हरी

हज़रत अली[अ०] और आपके सिपाही घोड़ों पर सवार नहरवान की तरफ़ जाना ही चाहते थे कि अचानक सहाबियों में से एक अहम शख़्स अपने साथ एक और आदमी को लेकर आया और कहा, "या अली! यह आदमी फ़्युचर की बातें बताता है और आपसे कुछ कहना चाहता है।"

इसके बाद नुजूमी ने कहा, "या अली! आप इस वक़्त सफ़र मत कीजिए! दो तीन घंटे रूक जाइए। उसके बाद चले जाइएगा!"

"क्यों ?" हज़रत अली ने पूछा।

"क्योंकि सितारों की चाल यह बता रही है कि जो भी इस वक़्त सफ़र करेगा वह दुश्मन से हार जाएगा। उसको और उसके साथियों को बहुत नुक़सान उठाना पड़ेगा लेकिन अगर आप उस वक़्त सफ़र करेंगे जिसके लिए मैंने कहा है तो आप जीत जाएंगे।"

"यह मेरी घोड़ी बच्चा देने वाली है। क्या यह बता सकते हो कि इसका बच्चा नर है या मादा?" हज़रत अली ने उससे पूछा।

"अगर हिसाब लगाऊं तो बता सकता हूं।"

"झूठ बोल रहे हो, तुम बता ही नहीं सकते इसलिए कि क़ुरआन में है, हर छुपी हुई चीज़ का ख़ुदा के अलावा किसी को इल्म नहीं और वह ख़ुदा ही है जिसे यह इल्म है कि पेट में क्या पल रहा है। रसूले ख़ुदा[स०] ने कभी इस तरह का दावा नहीं किया जो तुम कर रहे हो, क्या तुम यह दावा करते हो कि दुनिया के बारे में तुम सब कुछ जानते हो और यह भी जानते हो कि किस वक़्त बुराई और किस वक़्त अच्छाई क़िस्मत में होती है और अगर कोई तुम्हारे ऊपर भरोसा व ऐतेक़ाद करे तो फिर उसे ख़ुदा की ज़रूरत नहीं।"

इसके बाद हज़रत अली[अ०] ने लोगों से कहा, "ख़बरदार! कभी भी इन चीज़ों के पीछे न जाना, इससे इंसान फ़्यूचर के जंजाल में फंस जाता है। नुजूमी जादूगर जैसा होता है और जादूगर बेदीन की तरह है और बेदीन के लिए जहन्नम है।"

इसके बाद आपने आसमान की तरफ़ मुंह करके कुछ जुमले दुआ के फ़रमाए जो कि ख़ुदा पर भरोसा और ऐतेमाद के बारे में थे।

फिर नुजूमी की तरफ़ देखकर कहा, "मैं ख़ास तौर से जो तुमने कहा है उसका उलटा करूंगा और बग़ैर देर किए हुए अभी जाऊंगा।"

उसके फ़ौरन बाद आपने जाने का हुक्म दिया और दुश्मन की तरफ़ नहरवान चले गए। दूसरे और जिहादों के मुक़ाबले में इस जिहाद में इमाम अली[अ०] को ज़बरदस्त कामयाबी व जीत नसीब हुई थी। ●

आदाबे ज़िंदगी

■ डॉ. पैकर जाफ़री

इमाम सादिक़अ॰ का बयान है कि रसूले इस्लामस॰ ने फ़रमाया, ''जिहालत और नादानी से बढ़कर मोहताजी और ग़रीबी नहीं और अक़्ल से ज़्यादा फ़ाएदेमंद कोई दूसरा माल नहीं।'' (1)

रसूले ख़ुदास॰ की इस हकीमाना हदीस की रौशनी में आज दुनिया की सबसे ज़्यादा मोहताज और ग़ुरबत की मारी क़ौम हम मुसलमान हैं क्योंकि इल्म की दौड़ में दुनिया की सारी क़ौमों में सबसे पीछे हम हैं। हम दुनिया की दौलत की लालच में ऐसे दौड़ रहे हैं जैसे हमारी ज़िंदगी का मक़सद सिर्फ़ रुपया-पैसा है। दौलत को हासिल करने के लिए दीन, ईमान, अक़्ल, फ़िक्र और समझ सब कुछ बेचने को तैयार हैं जबकि हमारे नबीस॰ ने हमेशा अक़्ल को बेहतरीन दौलत बताया है। यह बात हमारे लिए ग़ौर करने की है कि अक़्ल की दौलत पाने के बाद दुनिया ख़ुद हमारे क़दमों में होगी, हमें उसके पास जाने की ज़रूरत नहीं होगी लेकिन इसके लिए जिहालत की क़ैद से निकलना होगा।

इमाम जाफ़र सादिक़अ॰ ने फ़रमाया है, ''ग़ुरूर और ख़ुदपसंदी इन्सान की अक़्ल की कमज़ोरी की दलील है।'' (2)

यह एक खुली हुई हक़ीक़त है कि ग़ुरूर व तकब्बुर और ख़ुदपसंदी भले ही इन्सान को वक़्ती तौर पर कामयाब बना दें लेकिन इन सबका नतीजा बड़ा ही भयानक और ख़तरनाक हुआ करता है क्योंकि घमंड और तकब्बुर की राह पर वही चलता है जिसकी अक़्ल कमज़ोर होती है जिसकी वजह से इन्सान किसी वक़्त भी कोई ऐसा क़दम उठा सकता है जो सरासर ख़ुद उसके या दूसरों के मफ़ाद के ख़िलाफ़ हो। हमारी यही रूहानी बीमारी हमारी यूनिटी के लिए मुसीबत बनी हुई है। जिसके नतीजे में पूरी क़ौम झगड़ों का शिकार हो चुकी है और इस्लामी ज़िंदगी पूरी तरह तबाह और बर्बाद हो चुकी है। और अगर कुछ कसर बाक़ी भी है तो वह भी तबाही के दहाने पर खड़ी है।

इसलिए हम सबका फ़रीज़ा है कि अपनी ज़ात और क़ौमी मफ़ाद के लिए ग़ुरूर, तकब्बुर और ख़ुदपसंदी को अपने पास फटकने भी न दें और समाजी भलाई के लिए ऐसे काम करें जिन से दीन व दुनिया दोनों संवर जाएं, अपने दिलों में ख़िदमते ख़ल्क़ का जज़्बा पैदा करें और अपना-पराया देखे बिना ज़रूरतमंदों की ज़रूरतों और मुसीबतों में काम आएं। अगर दिलों में मोहब्बत और भाईचारे का एहसास पैदा हो जाए तो समाज से हर बुरी बात ख़त्म हो सकती है और अच्छी बातों का चलन पैदा हो सकता है।

अम्र बिल मारूफ़ नही अनिल मुन्कर

अब मैं ऐसे सब्जेक्ट की तरफ़ आपका ध्यान दिलाना चाहता हूँ जिसका असर हमारे जिस्म और रूह पर बड़ा अजीबो-ग़रीब पड़ता है और वह है दीन का एक अहम पिलर 'अम्र बिल मारूफ़' (नेकियों की हिदायत) और 'नही अनिल मुन्कर' (बुराईयों से रोकना)। इस बारे में हम सूरए आले इमरान, आयत/104 पर नज़र डालते हैं, ''तुम में से एक गिरोह को ऐसा होना चाहिए जो ख़ैर की तरफ़ बुलाए, नेकियों का हुक्म दे और बुराईयों से रोके। और यही लोग निजात पाने वाले हैं।''

यह ख़ुदा का हुक्म है और इसके मुख़ातब हम और आप हैं। यह हमारा ही फ़रीज़ा है कि हक़ीक़ी इस्लाम को जानने के बाद लोगों के अक़ीदे की टूटी हुई कश्ती को अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल

मुनकर से सही करें और ख़ुराफ़ात व बेकार रस्मों की मौजों में ज़िंदगी गुज़ारने वालों को अहलेबैत[अ०] की विलायत के साहिल तक पहुँचाएं और यही वह मौक़ा है जहाँ हमें चाहिए कि अहलेबैत[अ०] की मारेफ़त हासिल करें और ख़ुदा की किताब और रसूल व आले रसूल के सहारे हक़ीक़ी फ़ज़ीलतों व वेल्युज़ तक पहुँचें क्योंकि ख़ुदा अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुन्कर करने वालों को बेहतरीन उम्मत कहकर पुकारता है।

सूरए आले इमरान, आयत/110 में है, "तुम बहतरीन उम्मत हो जिसे लोगों के लिए मंज़रे आम पर लाया गया है। तुम लोगों को नेकियों का हुक्म देते हो और बुराईयों से रोकते हो।"

सूरए तौबा, आयत/71 में ख़ुदा का हुक्म देखिए! "मोमिन मर्द और मोमिन औरतें आपस में सब एक दूसरे के वली और मददगार हैं कि यह सब एक दूसरे को नकियों का हुक्म देते हैं और बुराईयों से रोकते हैं, नमाज़ क़ायम करते हैं ज़कात अदा करते हैं, अल्लाह और रसूल की इताअत करते हैं।"

क़ुरआने करीम इन्हीं लोगों को बशारत देता है कि अगर मेरे दीन की मदद करोगे तो हम तुम्हें साबित क़दम रखेंगे।

इसी तरह सूरए निसा, आयत/100 में है, "जो अपने घर से ख़ुदा व रसूल[स०] की तरफ़ हिजरत के लिए निकलेगा, उसके बाद उसे मौत भी आ जाएगी तो उसका सवाब ख़ुदा के ज़िम्मे है। और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला व मेहरबान है।"

जो लोग कामयाबी के ख़्वाहिशमंद हैं उनका फ़रीज़ा है कि वह जितना हो सके कोशिशों में लगे रहें और मक़सद तक पहुँचने के लिए आगे बढ़ते रहें। साथ ही कभी भी यह बात ज़ेहन में रखकर हाथ पर हाथ रखकर बैठे न रहें कि जब इमामे ज़माना[अ०] ज़ुहूर करेंगे तो ख़ुद ही तमाम बुराईयों और ख़राबियों को ख़त्म कर देंगे। इसलिए हमें इस काम के लिए कोई परेशानी उठाने की ज़रूरत नहीं है। याद रखिए! इमामे ज़माना[अ०] की ग़ैबत के ज़माने में हमारी ज़िम्मेदारियाँ और भी बढ़ जाती हैं और हम लोग जो अपने आपको उनका ख़ादिम व पैरोकार समझते हैं हमें चाहिए कि इस काम यानी अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुन्कर में ज़्यादा से ज़्यादा कोशिश ही न करें बल्कि सर और धड़ की बाज़ी लगा दें क्योंकि हमारी सारी कोशिशें हमारे इमाम[अ०] के ज़ुहूर के जल्दी होने का बहुत अच्छा और बेहतरीन ज़रिया हैं।

अच्छे पड़ोसी की पहचान

जिन लोगों के हक़, दीने इस्लाम ने वाजिब किए हैं उनमें से एक हक़ पड़ोसी का भी होता है। इन्सान का फ़रीज़ा है कि अपने पड़ोसी से अपने ख़ानदान वालों की तरह मेहरबानी से पेश आए। उस से प्यार व मोहब्बत रखे, ज़रूरत के वक़्त उसकी मदद करे और मुश्किल वक़्त में साथ न छोड़े। अगर कोई शख़्स अपने पड़ोसियों का ख़याल रखेगा तो इस अच्छी आदत और अच्छे काम की वजह से वह इज़्ज़त और फ़ायदे में रहेगा।

इमाम अली[अ०] अपनी आख़िरी वसीय्यत में फ़रमाते हैं, "ख़ुदा के नबी[स०] ने मुझ से पड़ोसी के बारे में इतना ज़ोर दिया कि मैंने समझा कि आप[स०] पड़ोसी के लिए मीरास से कुछ हिस्सा तय कर देंगे।"

ज़रा ग़ौर कीजिए! अगर इमाम का यह क़ौल अमल में बदल जाए तो सारे पड़ोसी एक दूसरे से बेफ़िक्र होकर राहत की ज़िंदगी बसर कर सकेंगे और सभी ख़ुशी और ख़ुशहाली में ज़िंदगी के दिन गुज़ार सकेंगे और यही ख़ुशी घरों के आबाद रहने और उम्रों के लम्बी होने की वजह बन जाएगी।

इसीलिए हदीस में है, "बेहतरीन पड़ोस से घर आबाद होते हैं और उम्रों में ज़्यादती होती है।"

1- उसूले काफ़ी, 1/32, 2- उसूले काफ़ी, 1/32

सुनहरी बातें

मुसहफ़े ज़हरा में है, "जो कोई ख़ुदा और क़यामत पर ईमान रखता है वह अपने पड़ोसी को परेशान नहीं करता, मेहमान का एहतेराम करता है और अच्छी बात करता है या चुप रहता है।"

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं, "अपने बुज़ुर्गों का एहतेराम करो ताकि तुम्हारे बच्चे तुम्हारा एहतेराम करें।" (ग़ुररुल हिकम/78)

रसूले इस्लाम[स०] ने हज़रत अबूज़र से फ़रमाया, "जब कोई शख़्स ख़ुद नेक हो जाता है तो अल्लाह तआला उसके नेक हो जाने से उसकी औलाद और उसकी औलाद की औलाद को भी नेक बना देता है। (मकारिमुल अख़लाक़/546)

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं, "अगर तुम दूसरों की इस्लाह करना चाहते हो तो इसकी शुरुआत अपनी ज़ात की इस्लाह से करो और अगर तुम दूसरों की इस्लाह करना चाहो और अपने आपको बुरा ही रहने दो तो यह सबसे बड़ा ऐब होगा। (ग़ुररुल हिकम/278)

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं, "जिस नसीहत के लिए ज़बान ख़ामोश हो और किरदार बोल रहा हो, कोई कान उस से बाहर नहीं निकाल सकता और कोई फ़ायदा उसके बराबर नहीं हो सकता।

(ग़ुररुल हिकम/232)

युनिवर्स और क्रिएटर

सै. आले हाशिम रिज़वी
युनिटी मिशन स्कूल, लखनऊ

कुछ दिनों पहले अख़बारों और न्यूज़ चैनल्स पर 'गॉड पार्टिक्लस' का ज़िक्र काफ़ी ज़ोर-शोर से हो रहा था। साइंटिस्ट इस बात का दावा कर रहे थे कि उन्होंने 'गॉड पार्टिक्लस' की खोज कर ली है और वह जल्द ही समूचे युनिवर्स के क्रिएशन की पहेली को सुलझा देंगे। इस सिलसिले में अब तक जो सबसे ज़्यादा मशहूर थ्योरी पेश की गई है वह बिग-बैंग थ्योरी है। इस थ्योरी के मुताबिक़ युनिवर्स एक ज़बरदस्त धमाके से पैदा होने वाली एनर्जी से बना है। यह धमाका कैसे और कब हुआ? इस सवाल का कोई सटीक जवाब साइंटिस्ट नहीं दे सके हैं। यही वजह है कि कुछ साइंटिस्ट्स का कहना है कि युनिवर्स 14 बिलियन साल पहले बना था तो कुछ का कहना है कि 20 बिलियन साल पहले और कुछ इस से भी पहले का वक़्त बताते हैं।

मरयम के रीडर्स! आपने मशहूर साइंटिस्ट स्टीफ़न हॉकिंग का नाम तो ज़रूर सुना होगा। उन्होंने युनिवर्स के क्रिएशन पर एक किताब लिखी है जिसका नाम है 'द ग्रैंड डिज़ाइन'। इस किताब में उन्होंने ख़ुदा के वुजूद से इन्कार करते हुए युनिवर्स के क्रिएशन को एम-थ्योरी के ज़रिए साबित करने की कोशिश की है। यहाँ 'एम' का मतलब मेम्ब्रेन और मैटर है। एम-थ्योरी के मुताबिक़ मेम्ब्रेन की पतली परत के कंपन से मैटर और एनर्जी पैदा हुई, यही एनर्जी युनिवर्स के बनने की सबसे बड़ी वजह बन गई। एम-थ्योरी पर रिसर्च अभी भी जारी है और नई-नई बातें उसमें जुड़ती जा रही हैं। स्टीफ़न हॉकिंग की किताब में जो भी दलीलें हैं वह 'आधी हक़ीक़त आधा फ़साना' जैसी हैं, यानी उनकी रिसर्च में अंदाज़े और इमेजिनेशन भी शामिल हैं। उन्होंने युनिवर्स के बनने में ख़ुदाई ताक़त को नकारते हुए यह साबित करने की नाकाम कोशिश की है कि युनिवर्स बनने में ख़ुदा की कोई ज़रूरत नहीं है। वह यह तो कहते हैं कि मैटर, एटम, एनर्जी, पानी और बिजली सभी कुछ नेचर के क़ानून के तहत बने हैं लेकिन यह क़ानून कैसे बने और इनका बनाने वाला कौन है, इस सवाल के जवाब में स्टीफ़न हॉकिंग और तमाम साइंटिस्ट ख़ामोश नज़र आते हैं। यही वजह है कि पहले तो स्टीफ़न हॉकिंग ने एम-थ्योरी को एक फ़ाइनल थ्योरी बताया फिर अपनी ही बात से पलटते हुए कह दिया कि साइंस की कोई भी थ्योरी और रिसर्च को कम्प्लीट या फ़ाइनल नहीं कहा जा सकता। इसी बात को मैंने अपने पिछले आर्टिकिल "कोई रिसर्च आख़िरी नहीं" में साबित किया था।

दरअसल युनिवर्स के क्रिएशन के सिलसिले में स्टीफ़न हॉकिंग और दूसरे साइंसटिस्ट ने जो भी रिसर्च पेश की है वह इस्लामी थ्योरी से बहुत ज़्यादा अलग नहीं है, बस बयान करने का तरीक़ा अलग है। लेकिन दोनों थ्योरीज़ में एक बहुत बड़ा बुनियादी फ़र्क़ यह है कि साइंस ख़ुदा के वुजूद से इन्कार करती है। हालांकि इस इन्कार के सपोर्ट में उसके पास कोई दलील नहीं है। दूसरी तरफ़ इस्लाम का कहना है कि इस पूरे युनिवर्स के क्रिएशन में जो कुछ हुआ और जो कुछ हो रहा है उसका करने वाला सिर्फ़ अल्लाह है। इस्लाम के इस पैग़ाम की हिमायत में युनिवर्स का ज़र्रा-ज़र्रा गवाही देता नज़र आता है। अक़्ल भी यही कहती है कि कहीं कोई सुपर पावर है जिसने सब कुछ बनाया है और वही ताक़त सारा सिस्टम चला रही है।

अब आईए! अल्लाह के कलाम क़ुरआने मजीद में युनिवर्स के क्रिएशन के सिलसिले में क्या कहा गया है, उसे देखते हैं। क़ुरआने मजीद के सूरए आराफ़ की आयत/54 में है, "बेशक तुम्हारा परवरदिगार वह है जिसने आसमानों और ज़मीन को 6 दिन में पैदा किया है। उसके बाद अर्श पर अपना इक़्तेदार क़ायम किया है। वह रात को दिन पर ढाँप देता है और रात तेज़ी से उसके पीछे दौड़ा करती है। और सूरज, चांद और सितारे सब उसी के हुक्म पर चलते हैं।"

सूरए अम्बिया की आयत/104 में अल्लाह कह रहा है, "उस दिन हम तमाम आसमानों को ऐसे लपेट देंगे जैसे किताब के पन्ने लपेट दिए जाते हैं। जिस तरह हमने ख़िलक़त की शुरुआत की थी उसी तरह उन्हें वापस भी ले आएंगे।" इसी सूरे की 30वीं आयत कुछ इस तरह है, "क्या काफ़िरों ने यह नहीं देखा कि यह ज़मीन व आसमान आपस में जुड़े हुए थे और हम ने उन्हें अलग किया है।"

युनिवर्स के क्रिएशन से रिलेटेड क़ुरआनी आयतों पर अगर ग़ौर करें तो यह बात साफ़ निकल कर आती है कि युनिवर्स में हर चीज़ पहले एक दूसरे से मिली हुई थी। फिर सब कुछ एक दूसरे से अलग हुआ और तब से युनिवर्स लगातार फैल रहा है। क़ुरआन के मुताबिक़ युनिवर्स 6 दिनों में बना है, लेकिन उस वक़्त न ज़मीन थी और न सूरज था। इसका मतलब 6 दिन से मुराद काफ़ी लम्बा वक़्त है। इसके अलावा यह बात भी ज़ाहिर

होती है कि क्रिएशन बार-बार होता है फिर उसका ख़ात्मा हो जाता है। उसके बाद एक नई ख़िलक़त की शुरुआत होती है। बिग-बैंग की थ्योरी भी काफ़ी हद तक यही नज़रिया पेश करती है कि युनिवर्स पैदा होते रहते हैं और फिर ख़त्म हो जाते हैं। सारी चीज़ें कभी न कभी वुजूद में आई हैं और किसी न किसी दिन फ़ना भी हो जाएंगी। हर बनी हुई चीज़ को ख़त्म करने के लिए भी किसी न किसी ख़त्म करने वाली ताक़त का होना ज़रूरी है इसलिए अक़्ल कहती है कि जो ताक़त चीज़ों के बनने से पहले और ख़त्म होने के बाद भी मौजूद रहेगी वही ताक़त ही अस्ल में अल्लाह की ताक़त है। अल्लाह हमेशा से है और हमेशा रहेगा क्योंकि युनिवर्स का ज़र्रा-ज़र्रा उसका मोहताज है और उसकी बनाई हुई एनर्जी से ही सब कुछ चल रहा है। एनर्जी इस पूरे युनिवर्स का बेस है लेकिन वह खुद वुजूद में आने के लिए किसी क्रिएटर की मोहताज है। बिना किसी क्रिएटर के क्रिएट किए एनर्जी पैदा हो नहीं सकती। इस पूरे युनिवर्स का सबसे छोटा पार्टिकिल एटम भी उस ख़ुदा की बनाई हुई एनर्जी से ही बना है। उसी एटम के कम्पोज़ीशन से मिलकर सारा युनिवर्स बना है।

इमाम जाफ़र सादिक़[अ] ने युनिवर्स के क्रिएशन के बारे में फ़रमाया है, "दुनिया एक छोटे से ज़र्रे से वुजूद में आई है।" इमाम का यह क़ौल बिग-बैंग थ्योरी और एम-थ्योरी को ही ज़ाहिर कर रहा है। दुनिया में पहले एक एटम बना और फिर उससे बहुत सारे एटम बनते चले गए। यही एटम और उसमें मौजूद एनर्जी ही युनिवर्स के क्रिएशन की वजह है। युनिवर्स में पाए जाने वाले सभी एलीमेंट्स भी एनर्जी से बने हुए हैं और ज़ाहिर है उस एनर्जी को बनाने वाला ख़ुदा है। एनर्जी, एटम, सभी एलीमेंट्स और हर लिविंग-नान लिविंग थिंग्स क्रिएशन हैं जिनका फ़र्ज़ है कि वह अपने क्रिएटर की इबादत करें। समूचा युनिवर्स अपने क्रिएटर की मर्ज़ी का मोहताज और पाबंद है इसलिए उसकी इबादत हम पर वाजिब है।

जहाँ की पहली ख़बर में है तू
घड़ी के आठों पहर में है तू
है तेरा हर एक लम्हा या रब
मुल्क में तू है बशर में है तू

हुकूमतें क्यों गिरती हैं?

सवालः हम ने हिस्ट्री में पढ़ा है कि हर हुकूमत और कल्चर एक दिन ख़त्म हो जाता है, क्या मुमकिन है कि इमाम ज़माना[अ] की हुकूमत भी इसी तरह ख़त्म हो जाए?

जवाबः कोई भी हुकूमत दो वजहों से गिरती और ख़त्म होती हैः

(1) सच्चाई और इंसाफ़ से दूर होने और ज़ुल्म व नाइंसाफ़ी करने की वजह से हुकूमत अंदर से कमज़ोर हो जाती है जिसकी वजह से लोग उसके ख़िलाफ़ बग़ावत कर देते हैं या दूसरी हुकूमतें हमला कर देती हैं और आख़िरकार उसका तख़्ता पलट जाता है।

हिस्ट्री में बहुत सी हुकूमतों के गिरने की वजह यही रही है जैसे इस्लामी हिस्ट्री में हम पढ़ते हैं कि बनी उमैय्या की हुकूमत, ज़ुल्म और नाइंसाफ़ी की वजह से बनी अब्बास के हाथों ख़त्म हो गई, अब्बासी हुकूमत भी इसी वजह से कमज़ोर हो गई और मुग़लों के हमले से हार गई थी क्योंकि नाइंसाफ़ी इतनी बढ़ चुकी थी कि लोग उस हुकूमत की तरफ़ से मुक़ाबला नहीं करना चाहते थे बल्कि वह किसी ऐसे का इंतेज़ार कर रहे थे जो उनको निजात दे सके। ईरान में भी इस्लामी इंक़ेलाब की कामयाबी व शाही हुकूमत के गिरने की वजह उसका ज़ुल्म ही था।

तमाम ज़ालिम हुकूमतों का अंजाम यही हुआ है कि या तो वह अंदर ही अंदर बिखर गईं या दूसरी हुकूमतों ने हुकूमत की कमज़ोरी और अवाम की नफ़रत से फ़ाएदा उठाकर हमला कर दिया जिससे मजबूर होकर हुकूमत को घुटने टेकना पड़ गए और इस तरह उन्होंने अपने ही हाथों अपने आपको ख़त्म कर दिया।

(2) अवाम के प्रोपेगण्डों और हुकूमत के ख़िलाफ़ होने वाली साज़िशों में शामिल हो जाना जिस से लोग धीरे-धीरे मायूस होकर हुकूमत से नाराज़ हो जाते हैं। जैसा कि हज़रत अली[अ] की हुकूमत में हुआ। दुश्मनों के प्रोपेगण्डों और इमाम के सामने आने वाली कई जंगों ने लोगों से सोचने-समझने का मौक़ा छीन लिया था। इसके अलावा समाज में बहुत सी ऐसी बुराईयाँ फैल गई थीं जिनकी वजह से इमाम[अ] हुकूमत की बागडोर लेने पर तैयार नहीं थे क्योंकि आपको मालूम था कि समाज के बड़े लोगों का कैरेक्टर ख़राब हो चुका है और वह नाइंसाफ़ी के ज़रिए मिलने वाले माल व दौलत और ओहदों के आदी हो गए हैं इसलिए उनके बीच इंसाफ़ से काम लेने में बहुत सी मुश्किलें और परेशानियाँ आएंगी। इधर लोग भी असल इस्लाम से दूर हो जाने की वजह से ग़लत फ़िक्रों और प्रोपेगण्डों को बर्दाश्त नहीं कर सकेंगे। इसका नतीजा यह हुआ कि इमाम अली[अ] को शहीद कर दिया गया और उनकी हुकूमत ख़त्म हो गई।

इन दोनों वजहों को ज़हन में रखने के बाद अब आईए इमाम ज़माना[अ] की हुकूमत की बात करते हैं। सच्चाई और इंसाफ़ के बल पर चलने वाली आपकी हुकूमत के बारे में पहली वजह तो सोची भी नहीं जा सकती और दूसरी वजह भी इसलिए नहीं हो सकती है क्योंकि लोगों का इल्म और उनकी समझ मुकम्मल हो जाएगी, मीडिया भी सच्चाई और इंसाफ़ की ज़बान बोलेगा, लोग एक दूसरे को नेकी की तरफ़ बुलाएंगे और बुराई से रोकेंगे, इसलिए पूरे समाज में मायूसी और नफ़रत का माहोल पैदा ही नहीं हो पाएगा।

यह सही है कि शैतान उस ज़माने में भी बाज़ नहीं आएगा और कुछ लोगों को बहकाने में कामयाब हो जाएगा लेकिन ज़्यादातर लोग इल्म और अक़्ल के मुकम्मल हो जाने की वजह से हक़ीक़त को पहचान चुके होंगे और शैतान के बहकावे में नहीं आएंगे।

प्रेग्नेंसी के बीच माँ की ज़िम्मेदारियाँ

■ तज़ईन फ़ातिमा
पटना

प्रेग्नेंसी का वक़्त बहुत ज़्यादा नाज़ुक होता है। सिर्फ़ यही ज़माना ऐसा है जहाँ बच्चे की तरबियत की पूरी ज़िम्मेदारी सिर्फ़ और सिर्फ़ औरत पर ही होती है। रसूले इस्लाम[ﷺ] के नज़दीक प्रेग्नेंट औरत का दर्जा ऐसा है जैसे वह इस्लाम की हिफ़ाज़त के लिए मुल्क के बार्डर पर जिहाद कर रही हो। प्रेग्नेंट औरत का इतना सवाब है जितना अल्लाह की राह में जिहाद करने वाले सिपाही का होता है।

अब ज़रा सोचिए! एक औरत को यह सवाब उसी वक़्त मिलेगा जब वह उन सारी बातों पर अमल करे जिन पर एक सिपाही अमल करता है। हम अगर ज़रा ग़ौर करें कि अगर एक सिपाही दुश्मनों से लड़ रहा है तो उसकी एक मामूली सी लापरवाही पूरी क़ौम को तबाह कर सकती है। इसी तरह क्या वह औरत जिसके पेट में एक बच्चे की परवरिश हो रही है उसकी भी ज़रा सी चूक, अपने पाकीज़ा मक़सद से थोड़ी सी लापरवाही, एक बच्चे को फ़िरऔन जैसा नहीं बना सकती? प्रेग्नेंसी के दौरान अगर कोई औरत गुनाह करती है या अल्लाह के अलावा शैतान के बताए रास्ते पर चलती है तो बिल्कुल ऐसा ही है जैसे वह अपने बच्चे की रूह को क़त्ल कर रही है।

यह बात मशहूर है कि 'माँ के पेट से ही इन्सान अच्छा या बुरा बनता है"। और ख़ुद हमारे आठवें इमाम हज़रत अली रज़ा[अ] फ़रमाते हैं, "अपनी औलादों के साथ ख़ुश-अख़लाक़ी से पेश आओ और उसके साथ नेकी करो क्योंकि वह यही समझते हैं कि तुम उन्हें रिज़्क़ देते हो।" हर माँ को जान लेना चाहिए कि नेक बच्चा जन्नत के फूलों में से एक फूल है।

आईए! इस्लामी अहकाम पर चलते हुए अपने नौनिहालों की तरबियत का इंतेज़ाम करें। इसके लिए हमें प्रेग्नेंसी के दौरान कुछ ख़ास अहकाम पर ध्यान देना चाहिए।

पहले महीने में

1- Thursday और Friday को सूरए यासीन और सूरए वस्साफ़्फ़ात की तिलावत करनी चाहिए।

2- सूरज निकलने से पहले थोड़ी मिक़दार में ख़ाके शिफ़ा खाना चाहिए।

3- Friday को नाश्ते से पहले अनार खाना चाहिए।

4- हर रोज़ सुबह के वक़्त मीठा सेब खाना चाहिए।

5- रोज़ाना की नमाज़ें अव्वले वक़्त पढ़नी चाहिएं और नमाज़ से पहले पेट पर हाथ रखकर अज़ान और अक़ामत कहनी चाहिए।

दूसरे महीने में

1- Thursday और Friday को सूरए मुल्क पढ़ना चाहिए।

2- Thursday को 140 बार और Friday को 100 बार इस तरह सलवात पढ़नी चाहिए:

"अल्लाहुम्मा सल्ले अला मोहम्मद व आले मोहम्मद व अज्जिल फ़-र-ज-हुम व अहलिक अदुव्वहुम वलअन आदा-अ-हुम मिनल जिनने वल इन्स, मिनल अव्वलीने वल आख़ेरीन।"

3- हर हफ़्ते गोश्त, दूध और मीठे फल खाने चाहिएं।

तीसरे महीने में

1- Thursday और Friday को सूरए आले इमरान की तिलावत करनी चाहिए।

2- 140 बार *"अल्लाहुम्मा सल्ले अला मोहम्मद व आले मोहम्मद व अज्जिल फ़-र-ज-हुम व अहलिक अदुव्वहुम वल अन आदा-अ-हुम मिनल जिनने वल इन्स, मिनल अव्वलीने वल आख़ेरीन।"*

3- हर हफ़्ते गोश्त और बिना चिकनाई का दूध इस्तेमाल करना चाहिए।

4- रोज़ाना सुबह के वक़्त थोड़ा सा शहद भी खाना चाहिए।

चौथे महीने में

2- Thursday और Friday को सूरए दहर की तिलावत करनी चाहिए।

2- रोज़ाना की सभी नमाज़ों की पहली रकअत में सूरए इन्ना अन्ज़ल्ना की तिलावत करनी चाहिए।

3- नमाज़ के बाद पेट पर हाथ रखकर सूरए क़द्र, सूरए कौसर, 7 बार *अस्तग़फ़िरुल्लाहा रब्बी*

व-अतूबो इलैह और 140 बार सलवात पढ़नी चाहिए।

4- हर दिन एक मीठा सेब और अनार खाना चाहिए।

5- छठे महीने के शुरु से ही नमाज़े शब पढ़ने की कोशिश करनी चाहिए और अगर आधी रात में न पढ़ सकें तो कोशिश करें कि नमाज़े सुबह के बाद इसकी क़ज़ा पढ़ें।

पाँचवें महीने में

1- Thursday और Friday को सूरए फ़तह की तिलावत करनी चाहिए।

2- हर सुबह थोड़ी मिक़दार में खजूर खाना चाहिए।

31- रोज़ाना रात को थोड़ा ज़ैतून, खजूर और मीठे सेब के साथ खाना चाहिए।

41- जहाँ तक हो सके पाँचवें महीने के शुरु से ही पेट पर हाथ रखकर नमाज़ के वक़्त अज़ान और अक़ामत कहनी चाहिए।

छटे महीने में

1- Thursday और Friday को सूरए वाक़िआ की तिलावत करनी चाहिए।

2- नाश्ते के बाद इंजीर और ज़ैतून खानी चाहिए।

3- कोशिश करें कि रात या दिन में हड्डी का गूदा खाया जाए और चिकनाई से परहेज़ किया जाए।

सातवें महीने में

1- Thursday और Friday को सूरए यासीन और सूरए मुल्क की तिलावत करनी चाहिए।

2- Monday को सूरए नहल की तिलावत करनी चाहिए।

3- रोज़ाना की नमाज़ों में सूरए क़द्र और सूरए तौहीद पढ़ना चाहिए।

4- रोज़ाना 140 बार सलावात पढ़नी चाहिए।

5- हर खाने के बाद थोड़ा सा तरबूज़ खाना चाहिए लेकिन तरबूज़ खाने से पहले और बाद में थोड़ी देर तक पानी नहीं पीना चाहिए।

6- महीने में एक बार शलजम खाना चाहिए।

आठवें महीने में

1- Saturday को नमाज़े सुबह के बाद 10 बार सूरए क़द्र की तिलावत करनी चाहिए।

2- Sunday को नमाज़े सुबह के बाद 2 बार सूरए वत्तीन की तिलावत करनी चाहिए।

3- Monday को सूरए यासीन की तिलावत करनी चाहिए।

4- Tuesday को सूरए फ़ुरक़ान की तिलावत करनी चाहिए।

5- Wednesday को सूरए दहर की तिलावत करनी चाहिए।

6- Thursday को सूरए मोहम्मद की तिलावत करनी चहिए।

7- Friday को सूरए वस्साफ़्फ़ात की तिलावत करनी चाहिए।

नवें महीने में

1- Thursday को सूरए हज की तिलावत करनी चाहिए।

2- Friday को सूरए फ़ातिर की तिलावत करनी चाहिए।

3- गरम मसाला न खाएं, खजूर ज़्यादा खाएं।

4- रोज़ाना कुछ पैदल ज़रूर चलें।

5- इन दिनों तस्वीरें और आईना कम देखना चाहिए।

कुछ ख़ास बातें

1- जब बच्चा पेट में हिले-डुले तो पेट पर हाथ रखकर *"अल्लाहुम्मा सल्ले अला मोहम्मद व आले मोहम्मद"* और सूरए तौहीद की तिलावत करें।

2- सुबह नाश्ते में 12 मुनक़्क़े, 12 बार बिस्मिल्लाह के साथ खाएं

3- रोज़ाना 50 बार सूरए तौहीद पढ़ें

4- रोज़ाना 50 बार सूरए क़द्र पढ़ें

5- रोज़ाना 140 बार सलवात पढ़ें

6- 40 दिन तक रोज़ाना सूरए यासीन पढ़कर एक अनार ज़रूर खाएं

7- सातवें महीने से शुरु करें, 40 दिन तक नमाज़े सुबह के बाद सूरए अनआम पढ़कर एक बादाम खाएं

8- सातवें महीने के बाद से 5 सूरतें जो तस्बीह से शुरु होती हैं उनकी तिलावत करें, यह सूरतें सूरए तौहीद, सूरए हश्र, सूरए सफ़, सूरए जुमा और सूरए तग़ाबुन हैं।

9- हमेशा वुज़ू से रहें।

10- रात को आइना न देखें।

11- पूरी कोशिश करें कि कोई छोटा या बड़ा गुनाह न होने पाए।

12- गुस्सा न करें और मिज़ाज ठंडा रखें।

13- खाना वक़्त पर और सही मिक़दार में खाएं।

14- हरी सब्ज़ियाँ और दूध से बनी हुई चीज़ें बच्चे की स्किन को ख़ूबसूरत बनाने के लिए फ़ाएदेमंद होती हैं।

15- डिलेवरी के बाद माँ को नौ खजूर खाने चाहिएं।

16- डिलेवरी के वक़्त अगर प्रेग्नेंट औरत सूरए क़द्र की तिलावत करती रहे और उसे अपने साथ भी रखे तो डिलेवरी आसानी से हो जाती है।

बच्चे की विलादत के बाद उसे नेक बनाने के लिए कोशिश करती रहिए क्योंकि बच्चे का पहला स्कूल खुद माँ की गोद ही होती है। प्रेग्नेंसी पीरियड में आपकी मामूली सी ग़लती बच्चे की पूरी ज़िंदगी पर बुरा असर डाल सकती है। अल्लाह हम सबको एक मिसाली माँ बनने की तौफ़ीक़ अता करे! ●●●

recipe

कोफ़्ते

recipe

इंग्रेडिएंट्सः

क़ीमाः 1/2 किलो (बारीक पिसा)
दहीः 2 चम्मच
ख़शख़शः 1 चम्मच बारीक पिसी
हरा मसालाः चाय का एक चम्मच
पिसी प्याज़ः 1/2 प्याली
डबल रोटी के स्लाइसः 4 (थोड़े दूध में भिगो लें)
नमक, हस्बे ज़ायक़ा
गरम मसाला पाउडरः चाय का 1/2 चम्मच
लाल मिर्च पाउडरः ज़ायक़े के हिसाब से
घी/तेलः एक प्याली
दहीः दो प्याली
नमकः ज़ायक़े के हिसाब से
कटी प्याज़ः आधी प्याली
हरा धनियाः ज़रूरत भर
हरी मिर्चः 4
लहसुन अदरक पेस्टः चाय का एक चम्मच
धनिया पाउडरः चाय का एक चम्मच

तरकीबः

क़ीमे में दही, ख़शख़श, प्याज़, हरा मसाला और डबल रोटी के स्लाइस मिला कर सब को ब्लेंडर में ब्लेंड कर लीजिए। फिर उसमें नमक, मिर्च, गर्म मसाला मिलाकर 10 बाल्ज़ बना लें। सॉस पैन में घी या तेल गर्म कीजिए। उसमें लहसुन, अदरक, प्याज़, दही, नमक, हरी मिर्च और हरा धनिया डाल कर भून लीजिए। फिर कोफ़्ते डालकर दस मिनट तक भूनिए। दो प्याली पानी डालिए। फिर इतना पकाईए कि एक प्याली रह जाए। हरा धनिया और गर्म मसाला डालकर पाँच मिनट ढांप कर रखिए। सर्विंग डिश में निकालकर गर्म-गर्म सर्व कीजिए।

कोफ़्ते

रिश्ता

■ सुरय्या ज़ैनब

हमदानी साहब के घर मना करने के लिए जाते हुए भी सज्जाद का दिमाग़ उन्हीं बातों में उलझा हुआ था लेकिन जब वह किसी नतीजे पर न पहुंच सका तो सर झटक कर पैग़ाम दे कर लौट आया क्योंकि हमदानी साहब घर पर नहीं मिल सके थे।

रात को सज्जाद खाना खाने के बाद वॉक के लिए बाहर जाने लगा तो शाहिदा भी उसके साथ हो ली और दोबारा उसी टॉपिक पर बातचीत शुरू करते हुए कहने लगी, "सज्जाद! आप इस बात पर ग़ौर कीजिए कि पैसे से सब कुछ नहीं मिलता।"

"वह तो मैं जानता हूं लेकिन तुम ख़ुद देखो कि उसके बिना कुछ हो भी तो नहीं सकता।" सज्जाद ने वही जवाब दिया।

"प्लीज़ सज्जाद! ज़रा ठंडे दिलो दिमाग़ से सोचिए, एक बैंकर के ज़ेहन से नहीं। यह ज़रूरी तो नहीं कि जहां पैसा हो वहां दिली सुकून भी हो। रोज़ाना अख़बारों में आपकी नज़रों से कितनी ऐसी ख़बरें गुज़रती होंगी कि पैसे की वजह से भाई-भाई का दुश्मन हो गया। दौलत अजनबियों के बीच ही नहीं, सगे रिश्तों के बीच भी दूरी पैदा कर देती है। और कुछ नहीं तो प्यार में ही कमी आ जाती है। यह कामयाब शादी की गारंटी तो नहीं है।" शाहिदा ने जोश भरे लहजे में कहा।

"लेकिन यह भी तो सही बात है ना कि जिन घरों में पैसे की कमी का मसला होता है वहां भी सुकून नहीं होता और बीवी का ज़्यादातर वक़्त पैसे की वजह से लड़ने-झगड़ने में ही गुज़रता है।" सज्जाद ने उसकी बात को पलटा दिया।

शाहिदा ने सज्जाद की बात सुनते ही हाथ माथे पर मारा और कहने लगी, "उफ़ मेरे ख़ुदा! सज्जाद आपका बस चले तो कोई बेचारा ग़रीब शादी के बारे में सोच भी न सके। क्योंकि वह बीवी रखना तो अफ़ोर्ड कर नहीं सकता तो शादी के बारे में सोचना तो सिर्फ़ वक़्त की बर्बादी हुई ना।"

"नहीं! मेरा यह मतलब तो नहीं था।" सज्जाद मुस्कुराने लगा।

"और क्या! आप तो यही चाह रहे हैं कि बेचारा ग़रीब शादी के हक़ से भी महरूम हो जाए।" शाहिदा ख़ासी तप गई थी।

"नहीं! बिल्कुल भी नहीं! मैं तो यह कहना चाह रहा हूं कि शादी से पहले फ़्युचर के लिए तैयारी होनी चाहिए ताकि ज़िंदगी आराम से गुज़रे।" सज्जाद ने जवाब दिया।

"फ़्युचर की प्लानिंग करना अच्छी बात है मगर सज्जाद बड़ी-बड़ी आफ़तें प्लानिंग्स को हालात की चक्की में टुकड़े-टुकड़े कर देती हैं। फिर इंसान नए सिरे से प्लानिंग करेगा क्या?" शाहिदा ने तेज़ी से कहा।

सज्जाद ने कोई जवाब नहीं दिया तो थोड़ी देर के बाद फिर बोली, "इस तरह तो सारी उम्र प्लानिंग्स में ही गुज़र जाएगी और चार दिन की तो ज़िंदगी है, दो आरज़ू में कट जाएंगे दो इंतिज़ार में।"

"तुम्हें तो बहुत ज़्यादा हमदर्दी हो रही है बेचारे ग़रीब कम आमदनी वाले कुंवारों से।" सज्जाद अब तो हंसने लगे थे।

"हमदर्दी उनसे भी है और उन लड़कियों से भी जो अपनी दहलीज़ पर बैठी-बैठी बूढ़ी हो जाएंगी। सिर्फ़ इसलिए कि उनके लिए किसी दौलतमंद का रिश्ता नहीं आएगा। सज्जाद मेरी बात ग़ौर से सुनिए! अमीर वह नहीं जिसके पास पैसा है बल्कि अमीर वह है जिसके पास किरदार की दौलत है, अख़लाक़ है, सुकून है और इतना दम है कि वह ज़माने के हादसों का मुक़ाबला कर सके।" अब तो शाहिदा ने पूरी तक़रीर ही कर दी थी।

"भई! मैं तुम्हारी बात से एग्री करता हूं।" अब सज्जाद भी सीरियस हो चले थे। "लेकिन इन सब बातों को परखने के लिए पर्सनली लड़के

से, मेरा मतलब है असद से मिलना चाहूंगा। उसके बाद ही कोई फ़ाइनल डिसीज़न ले सकता हूं।''

शाहिदा तो ख़ुशी से खिल उठी। ''बिल्कुल! यह आपका हक़ भी है और फ़र्ज़ भी।''

''हां! मैं नहीं चाहता कि मेरी बहन को किसी तरह की भी परेशानी हो। इसलिए तुम भी सुरैय्या से बातों ही बातों में इस बारे में पूछ लेना।'' सज्जाद ने कहा।

''अरे! वह आप मुझ पर छोड़ दीजिए। सुरैय्या एक समझदार, ज़हीन और सुघड़ लड़की है। इसलिए उसके होने वाले शौहर को भी उसके जैसा होना चाहिए।'' शाहिदा ने सज्जाद को तसल्ली दी।

घर लौट कर सज्जाद ने हमदानी साहब के यहां फ़ोन करके तफ़सीली बात की और पूरा ख़्याल रखा कि पापा को मालूम न होने पाए। दोनों के बीच तय हुआ कि सज्जाद दूसरे दिन असद से मुलाक़ात करेगा।

दूसरे दिन सज्जाद आफ़िस से जल्दी निकल आया और गाड़ी ड्राईव करता हुआ उसी स्कूल तक जा पहुंचा जहां असद टीचिंग कर रहा था। छुट्टी का वक़्त था। असद को पहचानने में उसे कोई मुश्किल नहीं हुई। सलाम करने और हाथ मिलाने के बाद सज्जाद को लेकर एक क़रीबी रेस्टोरेंट में चला गया और रस्मी तौर से बातचीत शुरू हो गई। सज्जाद बिज़नेस के एक फ़र्ज़ी सवाल को लेकर हमदानी साहब के रिफ़्रेंस से असद से मिला था। बातचीत के दौरान सज्जाद ने असद को काफ़ी कांफ़िडेंट पाया। रुख़सत होते हुए सज्जाद ने वेटर से बिल मंगवाया था लेकिन पैसे असद ने अदा कर दिए जबकि सज्जाद ज़ोर दे रहा था कि वह चूंकि अपने काम से असद को यहां लाया है तो बिल देना उसकी ज़िम्मेदारी है लेकिन असद ने कहा कि मुझे ख़ुशी होगी अगर आप मेज़बानी का हक़ मुझे पूरा करने दें। सज्जाद ने चलना चाहा और असद से कहा, ''असद साहब! आप जैसे नौजवान से मिलकर मुझे बहुत ख़ुशी हुई। ख़ास तौर से आपके नज़रियों और ज़िंदगी के लिए आपकी रियलिस्टिक एपरोच पर। मुझे उम्मीद है कि आप बहुत आगे जाएंगे।''

''मुझे भी आपसे मिल कर बहुत ख़ुशी हुई। आगे भी कोई काम हो तो बिला झिझक कहिएगा। हमदानी साहब के हवाले के अलावा।'' असद ने ख़ुशदिली से कहा।

''जी! क्यों नहीं! बस अब इजाज़त दीजिए। ख़ुदा हाफ़िज़!'' दोनों ने हाथ मिलाया तो अचानक सज्जाद ने पूछा, ''आप कैसे घर जाएंगे?''

''रिक्शा या पब्लिक ट्रांस्पोर्ट से।'' असद ने कहा।

''आइए! मैं आपको छोड़ देता हूं।'' सज्जाद ने कहा और असद के बहुत इंकार के बावजूद उसे घर तक छोड़ आया।

उस दिन अपनी आदत के ख़िलाफ़ सज्जाद जल्दी घर पहुंच गया और किसी के अचानक घर आने से पहले हैरानी, फिर परेशानी और आख़िर में ख़ुशी होती है। इसलिए सबको ख़ुशी हुई। काफ़ी दिनों के बाद बच्चों ने दोपहर का खाना अपने डैडी के साथ खाया था।

कमरे में आकर सज्जाद ने शाहिदा को असद के बारे में बताते हुए कहा, ''मुझे वह नौजवान सुरैय्या के लिए हर लिहाज़ से सही लगा है। अच्छे बुरे वक़्त तो आते ही रहते हैं लेकिन वह बहुत कांफ़िडेंट और उम्मीदों से भरा हुआ जवान है। एक छोटा सा मौक़ा भी उसे बहुत ऊपर ले जाएगा।''

''चलिए! शुक्र है। कुछ आपको भी पसंद आया, पैसे और आमदनी के अलावा।'' शाहिदा ने मुस्कुराते हुए कहा।

सज्जाद ने उसी शाम तय किए हुए वक़्त पर हमदानी साहब को फ़ोन करके अपनी तरफ़ से ओके कर दिया लेकिन यह भी बता दिया कि अभी तक रज़ा अब्बास साहब से इस सिलसिले में दोबारा बातचीत नहीं हुई है और यह भी कि उनको मनाना बहुत मुश्किल काम है।

दूसरे दिन शाम के वक़्त हमदानी साहब अचानक रज़ा अब्बास साहब से मिलने आ गए। हाल-चाल पूछने के बाद बोले, ''रज़ा साहब! मैं ज़रा खरी तबीअत का मालिक हूं, लगी-लिपटी रखे बग़ैर सब कह देता हूं। इसलिए अगर आपको मेरी बात बुरी लगे तो माफ़ी चाहूंगा।''

''हां-हां! कहिए हमदानी साहब!''

''भाई रज़ा साहब! अब तक मैंने अपनी तरफ़ से चार रिश्ते भिजवाए। एक से बढ़कर एक। हैरत है मुझे कि आपने सबको ठुकरा दिया। हांलाकि आज तक मेरी तरफ़ से जो रिश्ता गया है, वह कम ही ठुकराया गया है। कहां चार इंकार, मैं तो चकरा गया हूं। फ़ैसला तो बहरहाल आपको ही को लेना है लेकिन यह पूछना तो मेरा भी हक़ है कि आख़िर अपनी बेटी के लिए कैसा रिश्ता चाहते हैं आप?'' अंदाज़ा हो रहा था कि वह ख़ासे तपे हुए हैं।

''हमदानी साहब! आप तो नाराज़ हो गए। मैं माफ़ी चाहता हूं लेकिन मैं क्या करता। उनमें किसी भी लड़के की फ़ाइनेंशल हालत मेरे हिसाब से नहीं थी। और मैं अपनी बेटी की शादी ऐसे शख़्स से करना चाहता हूं जो फ़ाइनेंशली कमज़ोर न हो।'' रज़ा साहब ने जवाब दिया।

''बस! ख़ाली यही चीज़ चाहिए आपको?'' हमदानी साहब के लहजे में अब तलख़ी के अलावा तंज़ भी आ गया था।

''नहीं! मेरा मतलब है कि इसके अलावा घर-घराना अच्छा हो, लड़के का चाल-चलन, अख़लाक़ अच्छा हो,

बुरी आदतें न रखता हो, बुरी सोहबत में न हो, नेक हो, फ़ैमिली रख-रखाव वाली हो और बच्चा मज़हब से लगाव रखता हो।'' रज़ा साहब ने जल्दी से कहा।

हमदानी साहब हर ख़ूबी पर ज़ोर से हूं-हूं कहते रहे और आख़िर में सिर्फ़ इतना कहा, ''अरे बस छोड़िए रज़ा साहब! अगर यही सब कुछ देखते तो एक भी इंकार न होता। मैं क़सम खाकर कहने को तैयार हूं कि आपके यहां आने वाला मेरी तरफ़ से हर रिश्ता इन सब बातों पर पूरा उतरता है लेकिन आपको तो चाहिए सेठ दामाद। अब यह सब ढूंढते-ढूंढते और इन सब ख़ूबियों को एक शख़्स में इकट्ठा करते-करते तो मेरी ज़िंदगी ख़त्म हो जाएगी और आपकी बच्ची की उम्र भी ढल जाएगी।'' हमदानी साहब कड़वे लहजे में बोले।

''तो फिर आप ख़ुद ही बताइए हमदानी साहब कि आज के दौर में इतनी कम सैलेरी में कितना बनता है।'' रज़ा साहब तिलमिला कर बोले।

''बनता है मेरे भाई। इससे भी कम में बनता है। एक जन्नत जैसा घर बनता है। ऐसे घर वाले बनते हैं कि जिसमें से इंसानियत की ख़ुश्बू आती है। ख़ाली मकान से क्या होता है। एक बात तो बताइए रज़ा साहब! जब आपकी शादी हुई थी तो क्या आपके पास यह सब कुछ था जो आज-कल है?''

''नहीं हमदानी साहब! मैंने बड़ी कोशिशों के बाद यह सब कुछ हासिल किया है। मैंने और आपकी भाभी ने बचा-बचा कर एक-एक पाई जमा करके इस मकान को घर बनाया है। इसीलिए तो हम चाहते हैं कि...।''

''नहीं रज़ा साहब नहीं! पैसा न ज़िंदगी की गारंटी है, न आराम की और न हिफ़ाज़त की। ख़ुद आप अपनी मिसाल ले लीजिए। बेशक पैसे की अपनी जगह पर अहमियत है लेकिन पैसा भी कुछ नहीं। और फिर क्या आप समझते हैं कि जो इतने रिश्ते आज आप के यहां आ रहे हैं, कल भी ऐसे ही रिश्ते आएंगे?'' हमदानी साहब ने आईना दिखाया।

''मेरा यह मतलब बिल्कुल नहीं है कि मैं पैसे को ही सारी दुनिया समझता हूं लेकिन एक ऐसे लड़के को अपनी बेटी कैसे देदूं जो...?''

हमदानी साहब ने एक बार फिर बात काटी, ''अरे क्या यह लड़के अपने पांव पर नहीं खड़े हैं? खड़े हैं ना! अगर अल्लाह ने चाहा तो और आगे जाएंगे।''

''आप ठीक कह रहे हैं लेकिन...।'' रज़ा साहब दब के बोले। लेकिन अभी भी वह पूरी तरह क़ायल नहीं हुए थे।

''अगर-मगर कुछ नहीं। मैं आपका मसला समझ चुका हूं। इसलिए ख़ुद चलकर आया हूं। अगर ऐसा एक वाक़ेआ मेरे घर में न हुआ होता तो शायद मेरी आंखें भी बंद रहतीं।''

''जी क्या मतलब? मैं समझा नहीं'' रज़ा साहब हैरानी से बोले।

''बस क्या बताऊं रज़ा भाई!'' हमदानी साहब ठंडी सांस लेकर बोले। ''असल में हमारे अब्बा भी इस मामले में बहुत सख़्त थे। उन्हें समझाना भी बहुत मुश्किल बल्कि नामुमकिन था। मेरी तीन बहनें थीं। बड़ी दो बहनों की ख़ानदान ही में मामूज़ाद और चचाज़ाद से बात तय कर दी गई थी क्योंकि, आपको तो याद होगा, उस ज़माने में छोटी उम्र में बात तय हो जाती थी। इक़बाल फ़ातिमा मेरी तीसरी और सबसे छोटी बहन थी। उसके नसीब इस लिहाज़ से अच्छे थे कि उसने ऐसे वक़्त में आंख खोली जब पूरी तरह भाईयों की मौजूदगी में पढ़ाई कर सकती थी। थी भी लायक़, इसलिए ख़ूब पढ़ा-लिखा लेकिन उसके हिसाब से हमारे ख़ानदान में कोई मुनासिब वर नहीं था।

हम ख़ानदान से बाहर शादी पर तो अब्बा को तैयार करने में कामयाब हो गए लेकिन उनकी ख़ानदानी अकड़ ने हर आने वाले रिश्ते को महेज़ फ़ाईनेंशली कमज़ोर की वजह से ठुकरा दिया।

आज भी मेरी यह बहन ग़ैर शादीशुदा हैं। शायद आपने भी नाम सुना हो, इक़बाल फ़ातिमा। मशहूर वकील और सोशल-वर्कर। अब्बा की ज़िद के आगे किसी की न चली और मेरी यह बहन कुंवारी ही रह गई। यक़ीन जानिए कि अपनी इस बहन को देखकर मुझे बेहद अफ़सोस होता है। हांलाकि बहुत अच्छी, ज़हीन और क़ाबिल है। इससे भी ज़्यादा अफ़सोस मुझे उस वक़्त हुआ जब उसके लिए ज़रा बड़ी उम्र में एक अच्छा रिश्ता आया और उसने ख़ुद इंकार कर दिया कि मुझे इस उम्र में शादी करके क्या करना है? मैं अपने ख़र्चे ख़ुद संभालने के लिए काफ़ी हूं। आह! महेज़ पैसे की ख़ातिर हमने अपनी इस बहन की ज़िंदगी बर्बाद कर दी। मेरे दिल से अपनी बहन का ग़म किसी तरह से कम नहीं होता।

इसीलिए जब मेरी बेटियों के रिश्ते आए तो मैंने यह ज़्यादती नहीं होने दी और सिर्फ़ ख़ानदानी शराफ़त और दूसरी अच्छी क्वालिटीज़ को सामने रखकर अपनी बेटियों की शादियां फ़ौरन कर दीं। मेरे ख़ानदान वाले नाराज़ भी हुए। ताया, चचा, मामू, फूफा सब दौड़े आए कि एक तो ख़ानदान से बाहर कर रहे हो और ऊपर से टटपुंजियों के साथ। लेकिन मैंने सिर्फ़ 'कुफ़ो' देखा रज़ा साहब! अपनी लड़कियों की रज़ामंदी ली और अल्लाह का नाम लेकर शादियां कर दीं। आज माशाअल्लाह मेरे दामाद ज़ीरो से सफ़र शुरू करके कई बहुत अच्छी ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। मेरी बेटियां अपने घरों में ख़ुश और आराम से हैं।

यह सब आपको बताने का मक़सद यह था कि मैं नहीं चाहता कि मेरी बहन वाला हादसा किसी और पर भी गुज़रे। बाक़ी रही बात पैसे की तो यह न तेरा साथी न मेरा साथी, हाथ का मैल है। इससे ख़ुशियों के गुणा-भाग का काम न लीजिए और न ही इसे कसौटी बनाकर फ़्युचर के फ़ैसले कीजिए।''

रज़ा साहब ने ग़ौर से हमदानी साहब की पूरी बातचीत सुनी और फिर बोले, ''हमदानी साहब! मुझे यह सब सुन कर बहुत अफ़सोस हुआ। लेकिन मैं

3 चीज़ें

3 चीज़ों को अल्लाह रहमत कहता है लेकिन इन्सान उन्हें ज़हमत मान लेता है:

1.बेटी 2.मेहमान 3.बारिश

3 चीज़ों को अल्लाह अज़ाब कहता है लेकिन इन्सान उन्हें ख़ुशी से क़ुबूल कर लेता है:

1.सूद 2.ग़ुरूर 3.ग़ीबत

(आले हाशिम रिज़वी)

आपका शुक्रगुज़ार भी हूं कि आपने इस मसले पर मुझे रास्ता दिखाया। मेरी बहू भी मुझे यही सब कुछ समझा रही थी मगर मैंने उसकी बातें सही से सुनी ही नहीं।''

''कोई बात नहीं रज़ा साहब! कभी-कभी छोटे भी पते की बात कह जाते हैं। मेरी अब आपसे यही गुज़ारिश है कि कोई भी फ़ैसला करने से पहले सोच लें कि वक़्त बड़ा बेरहम होता है। हर चीज़ अपने वक़्त पर मुनासिब लगती है। आज तो आपको इन रिश्तों में यह कामियां निकालने का वक़्त मिल गया है मगर हो सकता है कल वक़्त आपको इतना वक़्त भी न दे।'' हमदानी साहब ने कहा।

''आप ख़ुदा से दुआ कीजिए! मैं अपनी ज़िम्मेदारी में कोई भी और किसी भी तरह की लापरवाही नहीं चाहता। अब आपकी सारी बातें सुनने के बाद मुझे आपके लाए हुए इस नए रिश्ते को क़ुबूल करने में कोई झिझक नहीं है मगर मैं इससे पहले अपनी बेटी की मर्ज़ी मालूम कर लूं और बाक़ी घर वालों से भी मशवेरा कर लूं।'' रज़ा साहब ने हमदानी साहब को मुतमइन कर दिया।

''अरे रज़ा भाई! दिल ख़ुश कर दिया आपने। बड़े शौक़ से बेटी की मर्ज़ी मालूम कीजिए! घर वालों से मशवेरा कीजिए। मगर फिर मुझे वक़्त पर ख़बर दे दीजिएगा।'' यह कह कर हमदानी साहब खड़े हुए और इजाज़त लेकर चल दिए।

उसी दिन शाम को रज़ा साहब ने सब को इकट्ठा करके सारी बात उनको बताते हुए कहा, ''भई मैं तो हमदानी साहब की बातों से क़ायल हो गया हूं लेकिन अब तुम सब लोगों की एडवाइज़ चाहिए।''

''बाबा! अगर आप और मम्मी तैयार हैं तो हमारी क्या राय हो सकती है!'' सज्जाद ने रज़ामंदी ज़ाहिर करते हुए कहा।

''बेटा फ़रमांबरदारी अच्छी बात है। जीते रहो! मगर बड़े अगर ग़लत फ़ैसला कर रहे हों तो उन्हें अच्छे काम का मशवेरा तो कम से कम दिया ही जा सकता है।'' रज़ा साहब ने बेटे की सआदतमंदी पर कहा।

बेचारा सज्जाद झेंप सा गया। हमदानी साहब को फ़ोन करके भेजने वाला वह ख़ुद ही था लेकिन वह यह बात उस वक़्त बताना नहीं चाहता था। रज़ा अब्बास की रज़ामंदी देख कर बेगम रज़ा ने भी हां कर दी। अब रज़ा अब्बास साहब ने बहू की तरफ़ देखा और ख़ुद ही बोले, ''भई बहू! तुम तो इस रिश्ते के लिए पहले ही राज़ी थीं बल्कि सच यह है कि अब मैं तुम्हें तब मानूं जब सुरैय्या को भी राज़ी कर लो।''

शाहिदा ने मुस्कुराते हुए कहा, ''पापा! आप फ़िक्र मत कीजिए। मैं सुरैय्या की मर्ज़ी मालूम करके आपको बता दूंगी।''

और सुरैय्या को शाहिदा पहले ही सज्जाद की असद से मुलाक़ात का हाल और सज्जाद के कमेंट्स के बारे में बता चुकी थी। सुरैय्या को भाई पर पूरा भरोसा था इसलिए सुरैय्या की ''हां'' ने असद के दरवाज़े पर शादी के कुमकुमे सजाने का एहतेमाम कर दिया।

असद से मुलाक़ात और हमदानी साहब को भेजने वाली बात का तज़किरा सज्जाद ने रज़ा साहब से निकाह से दो दिन पहले किया। रज़ा साहब मुस्कुराए और ख़ुशदिली से कहने लगे, ''मेरे ख़याल से बहू की समझदारी का असर तुम पर भी दिखने लगा है बेटा! अब इस इंतेख़ाब की दाद तो हमें दोगे ना।''

सुरैय्या भी ख़ुश थी क्योंकि जो जौहरी उसके लिए आया उसके भाई ने उसमें अपनी बहन के लिए इज़्ज़त, हिफ़ाज़त और भरोसा पाया था।

वाक़ई सही 'इंतेख़ाब' और सही वक़्त, आदमी की यही तो कामयाब ज़िंदगी की पहली सीढ़ी है।

आईए! हम भी अपने आस-पास नज़र दौड़ाएं! कहीं किसी और सुरैय्या या असद के 'इंतेख़ाब' में पैसा तो नहीं आड़े आ रहा है? अगर आ रहा है तो फिर हमें उनकी मदद करनी चाहिए ना...?●

GULSHAN

MEHANDI & HERBALS

IRFAN ALI PRADHAN
403 & 404, A Block
REGALIA HEIGHTS
Ahmadabad Palace Road
KOHE-FIZA
BHOPAL (M.P.) 462001, INDIA.
+919893030792, +917554220261

MOHTARMA "GULSHAN"
G-1, Krishna Apartment
Plot No. 2, Firdaus Nagar
Bairasia Road, BHOPAL
+91-755-2739111

RNI No: Title Code: UPHIN41897

मरयम

का एक साल पूरा होने के मौक़े पर

हम आपके घर लेकर आए हैं **ख़ूबसूरत** और **क़ीमती**

तोहफ़े

पहला इनाम	:	उमरा
दूसरा इनाम	:	फ़्रिज
तीसरा इनाम	:	माइक्रोवेव
चौथा इनाम	:	मोबाईल सेट
पांचवां इनाम	:	डिनर सेट
छटा इनाम	:	ज्वैलरी
सातवां इनाम	:	मिक्सर
आठवां इनाम	:	पंखा
नवां इनाम	:	लेमन सेट
दसवां इनाम	:	घड़ी

दिसम्बर 2011 से मरयम में हर महीने एक कूपन छपेगा।
10 कूपन जमा करके मरयम की तरफ़ से दी जाने वाली आख़िरी तारीख़ तक कूपन भेजने वालों में से ड्रॉ के ज़रिए 10 लोगों को सिलेक्ट करके इनाम दिए जाएंगे।
अगर आप मरयम के सब्सक्राईबर नहीं हैं तो जल्दी कीजिए।
ख़ुद भी सब्सक्राईब कीजिए और अपने रिश्तेदारों व दोस्तों को भी सब्सक्राईब कराईए और इस स्कीम से फ़ाएदा उठाने का मौक़ा हाथ से मत जाने दीजिए!

नियम व शर्तें:

1. मरयम में हर महीने अलग-अलग तरह के कूपन छापे जाएंगे। दिसम्बर 2011 से नवम्बर 2012 तक 10 कूपन जमा करके भेजने वालों को ही इस ड्रॉ में शामिल किया जाएगा।
2. मरयम की टीम का फ़ैसला ही आख़िरी होगा और इस बारे में किसी को कोई एतेराज़ का हक़ नहीं होगा।
3. इस सिलसिले में किसी भी तरह की अदालती कार्यवाई सिर्फ़ लखनऊ की अदालत में ही की जा सकेगी।

Contact No.:
+91-522-4009558
+91-9956620017 (Lucknow)
+91-9892393414 (Mumbai)
maryammonthly@gmail.com